आलोचन दृष्टि वर्ष-7 अंक-27 जनवरी-मार्च, 2022 ISSN : 2455-4219

विचार → चिंतन → शोध सृजन

ISSN : 2455-4219

आलोचन दृष्टि

Aalochan Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal of Humanities

वर्ष-7 अंक-27 जनवरी-मार्च, 2022

प्रधान-संपादक

डॉ० सुनील कुमार मानस

संपादक

डॉ० योगेश कुमार तिवारी

प्रबंध-संपादक

श्री सुधीर कुमार तिवारी

ISSN : 2455-4219

आलोचन दृष्टि

Aalochan Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal of Humanities

वर्ष - 07	अंक - 27	जनवरी-मार्च, 2022
Year - 07	**Volume - 27**	**January-March, 2022**

प्रधान-संपादक

डॉ० सुनील कुमार मानस

संपादक

डॉ० योगेश कुमार तिवारी

प्रबंध-संपादक

श्री सुधीर कुमार तिवारी

© **प्रकाशक :**

संपादकीय / प्रकाशकीय पता :–

सृजनश्री न्यास,

आजाद नगर, बिन्दकी, जनपद–फतेहपुर,

उ0प्र0–212635

ई–मेल : aalochan.p@gmail.com

दूरभाष : 9451949951 / 7376267327

मुद्रण :– जय ग्राफिक्स एण्ड कान्सट्रक्सन,
आई0टी0आई0 रोड़, फतेहपुर–212601।

सदस्यता शुल्क	एक अंक	वार्षिक	आजीवन
व्यक्तिगत	300	1200	10,000
संस्थागत	400	1500	15,000

संरक्षक एवं सलाहकार मंडल

- **प्रो0 गिरीश्वर मिश्र,** शिक्षाविद् एवं पूर्व कुलपति, म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा, (महाराष्ट्र)।
- **प्रो0 चितरंजन मिश्र,** पूर्व प्रोफेसर, पं. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय (उ0प्र0)।
- **प्रो0 नंदकिशोर आचार्य,** सुथारों की बड़ी गुवाड़, बीकानेर, राजस्थान–252028।
- **प्रो0 सदानंद गुप्त,** निदेशक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, (उ0प्र0)।
- **प्रो0 कृपाशंकर चौबे,** महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, (महाराष्ट्र)।
- **प्रो0 माधवेन्द्र पाण्डेय,** हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय।
- **प्रो0 प्रेमशंकर त्रिपाठी,** आशीर्वाद अपार्टमेन्ट, सी. ए. 5/10, देशबन्धु नगर, कलकत्ता।
- **प्रो0 दिलीप सिंह,** इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म.प्र.)।
- **प्रो0 आर0 एस0 सर्राजू,** हैदराबाद विश्वविद्यालय, (तेलंगाना)।
- **प्रो0 उमापति दीक्षित,** केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (उ0प्र0)।
- **प्रो0 एस0 वी0 एस0 एस0 नारायण राजू,** तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, तमिलनाडु।
- **Shri. Tejendra Sharma,** Harrow & Weealdstone, Middlesex HA3 7AN (U.K.)
- **Mrs. Archana Painyuly,** Islevhusvej, 72 B, 2700, Bronshoj, Copenhagen, Denmark.

संपादक-मंडल

- **डॉ. उदयन मिश्र,** हरिश्चन्द्र पी. जी. कॉलेज, वाराणसी, (उ0प्र0)।
- **डॉ. बलराम शुक्ल,** संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- **डॉ. दण्डिभोट्ला नागेश्वर राव,** सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, श्री चंदशेखरेंद्र सरस्वती विश्वविद्यालय, एनात्तूर–कांचीपुरम्, तमिलनाडु।
- **डॉ. शशिभूषण भट्ट,** संस्कृत विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, (उ0प्र0)।
- **डॉ. अमित दूबे,** आर्य महिला पी. जी. वाराणसी।
- **श्री राम कुमार मानिक,** शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, (उ0प्र0)।

विधि-परामर्शदाता

श्री **उमाशंकर त्रिपाठी** (एडवोकेट), सिविल कोर्ट, फतेहपुर उ0प्र0–212601।

नोट : सभी पद अवैतनिक एवं अव्यावसायिक हैं। प्रकाशित शोध–लेखों एवं उसमें दिये गये उद्धरणों के वाद–विवाद संबंधी किसी भी कार्यवाही का शोधकर्ता (लेखक) स्वयं जिम्मेदार होगा। इस तरह के किसी भी विवाद में संपादक, प्रकाशक एवं 'आलोचन दृष्टि' परिवार के किसी भी सदस्य की कोई जवाबदारी नहीं होगी। किसी भी प्रकार के विवाद–संवाद का समाधान फतेहपुर न्यायालय में ही होगा।

संपादकीय

आधुनिकता की 'व्युत्पत्ति' और 'जागरण की प्रवृत्ति' दोनों को भारतीय संदर्भ में स्वाधीनता संग्राम के आंदोलन से जोड़ा गया है, किंतु इस बात में काफी वाद–विवाद–संवाद होते रहे हैं, और हैं भी। विवाद इस संदर्भ में कि आधुनिकता को आप कब से स्वीकार करते हैं ? अगर यह भाषाई दृष्टि से देखा जाए तो आधुनिक भारतीय भाषाओं का उद्‌भव और विकास 10वीं शताब्दी के अंत से प्रारंभ हो जाता है और जब 'ऐतिहासिक कालखंड' की बात के आधार पर देखते हैं तो उसका उद्‌गम हमें 19वीं शताब्दी के शुरुआत में दिखलाई देता है। यही वैचारिक बहस या वाद–विवाद का सबसे बड़ा मुद्‌दा है, जिसके केन्द्र में आधुनिकता आज भी कठघरे के घेरे में खड़ी है, और जिरह चल रही है।

प्रश्न यह बनता है कि जब भारत में आधुनिक भाषाएँ 10वीं सदी के अंत से अपना आकार–प्रकार गृहण करने जगती हैं तो उनके विचार पुराने कैसे हो सकते हैं ? या जब भारत में ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक विचार तैयार हो रहे थे, खासतौर से 19 शताब्दी में, तो क्या किसी नई भाषा का प्रयोग किया जा रहा था। अगर यह नई भाषा अंग्रेजी है तो फिर यह आधुनिकता भी अंग्रेजी की ही होगी, भारतीय भाषाओं की नहीं और न ही भारत की।

इस तर्क के साथ मैं यह जोर देकर कहना चाहता हूँ कि आधुनिक–भारतीय–जागरण, आधुनिक भारतीय भाषाओं के साथ ही उदित हुआ है। इसी संदर्भ में अगर हम देखें तो हमारे विचारों की सांस्कृतिक–चेतना, सामाजिक सौहार्द की मानवीय एवं मर्ममयी विचारधारा– विश्व स्तर के स्थापित अब तक के समस्त वैचारिक प्रतिमानों को– चुनौती देते हुये दिखलाई पड़ते हैं। चाहे कबीर हों, चाहे मलिक मोहम्मद जायसी हों, चाहे स्वयं तुलसीदास हों या सूरदास ही क्यों न हों, सभी ने वैश्विक स्तर पर मानवीय चिंतन के सार्वभौमिक–प्रतिमानों को स्थापित किया है। ये ऐसे प्रतिमान हैं, जो आधुनिकता की तमाम कसौटियों के बाद भी संवैधानिक–मानवीयता की सशक्त विचार–धारा को, आज भी चुनौती देते हैं। मेरी समझ में इस आधुनिकता के जितने भी प्रतिमान हैं, वे वैज्ञानिक युग की संसाधन–संपन्नता एवं उसके भोग्य–भोग्यक संबंधों से जुड़ी हुई है, जबकि भारतीय आधुनिकता त्याग के पथ पर चलकर मनुष्यता की अलख जगाने वाली नैतिक अभिलाषा है...। इस पर फिर कभी विस्तार से चर्चा करूँगा।

हमारी नई शिक्षा की नीतियों ने निश्चित रूप से शिक्षण के लिए कुछ नये द्वार खोले हैं और उसे विस्तारित करने का प्रयास भी किया गया है। यह विस्तार– हर स्तर पर है, किंतु जिस रूप में इसे प्रस्तुत किया जा रहा है या जिसे हम पिछले दो–तीन सालों में देख रहे हैं– वह विचारणीय जरूर है क्योंकि जितने भी अकादमिक संस्थान हैं, वह पिछले कई दशको से अध्ययन और अध्यापन से अधिक उपाधियों को प्रदान करने में, परीक्षाओं के आयोजनों में एवं सरकारी–गैरसरकारी योजनाओं के प्रचार–प्रसार में, अपना समय लगाती हैं, या इसी में सारा समय निकल जाता है। इन शैक्षणिक संस्थानों को संचालित करने का काम भी अधिकतर कोई अकादमिक व्यक्तित्व नहीं कर रहा है बल्कि ऐसे लोग कर रहे हैं जिनका विशेषतः संबंध न तो शिक्षा से है और न ही शिक्षित होने से। ये वे लोग हैं, जो शैक्षणिक क्षेत्र में भी 'व्यापार की राजनीति' करते दिखाई पड़ते हैं। यह सब देखते हुए मुझे 1968 में प्रकाशित श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' का एक वाक्य याद आता है। वाक्य है– 'हमारी शिक्षा पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।' इस वाक्य को लिखे हुए पाँच दशक से ऊपर हो गए हैं, और इन दशकों में हम यह देख रहे हैं कि जो 'राग दरबारी' में शिक्षा पद्धति के लिए 'क्षमता' का विषय था, वह अब 'क्रिया' के रूप में अब ढ़ल चुका है।

जहाँ तक मैं समझ पा रहा हूँ कि 'क्षमता' से 'क्रिया' के रूप में यह ढ़लना– हमारी वर्तमान–शिक्षा–पद्धति को भली–भाँति रेखांकित करता है। इस रेखांकन को लेकर बहुत कुछ लिखा भी जा चुका है और लगातार लिखा भी जा रहा है, पर कोई बदलाव की विशेष पहल हमें नज़र नहीं आती।... वर्तमान की इस शिक्षा–पद्धति के पीछे राजनीति के कुछ गुर्गे और शिक्षा से जुड़े हुए कुछ धन–लोलुप एवं कुछ पद–लोलुप चाटुकार हैं, जो महत्त्वपूर्ण पदों में बैठा दिए जाते हैं या बैठने के लिए वे आमादित–प्रामादित रहते हैं, जिन्हें 'पद की गरिमा' तक का भी एहसास नहीं होता... और इसी क्रम में संपूर्ण–व्यवस्था कठघरे में खड़ी नजर आती है।

यूजीसी के द्वारा पिछले 10 वर्षों में जो भी पत्रिकाओं की लिस्ट बन रही है, उसके लिए न तो कोई उचित वैचारिक–प्रक्रिया जान पड़ती है और न ही कोई दूरदर्शी सोच–समझ। कभी किसी पत्रिका को जोड़कर उसे महत्त्वपूर्ण बना दिया जाता है, और फिर बिना किसी सूचना के, उसे हटाकर धराशाही भी कर दिया जाता है।... यूजीसी द्वारा पत्रिकाओं के 'चयन की प्रक्रिया' और फिर उसके निस्तारण की प्रक्रिया लगभग अबूझ–पहेली की तरह है, जो वैचारिक दृष्टि से, लगभग सभी के समझ से परे है, मेरे भी है। 2–3 वर्ष पूर्व 'आलोचन दृष्टि' पत्रिका को यूजीसी में शामिल किया गया था। जनवरी 2022 में बिना किसी सूचना के बाहर (Discontinue) कर दिया गया। कारण पूछने पर भी अभी तक कुछ पता नहीं चला...। पर हम 'आलोचन दृष्टि' के परिवार एवं पाठकों को यह सूचित करते हैं कि हम जिन रास्तों में चल रहे थे, आगे भी उन्हीं सैद्धांतिक रास्तों में चलेंगे। हम विचलित नहीं होंगे और न ही अपने सिद्धांतों को विचलित होने देंगे। 'आलोचन दृष्टि'–परिवार नये–नये राहों का अन्वेशी रहा है, और है, इसके ये अन्वेषण ही, निरन्तर अपनी कलम से, अपनी धार और रफ़्तार तेज करते रहेंगे– ऐसा मेरा विश्वास है। ऐसा करते रहने से ही पत्रिका की महत्ता बढ़ेगी, और हमारे प्रयास भी फलीभूत होंगे।

प्रस्तुत अंक **संरक्षक एवं सलाहकार मंडल** और **संपादक मंडल** के वैचारिक परामर्श के आधार पर निकाला जा रहा है, जिसके अन्तर्गत हिंदी भाषा के चयनित 9 (नौ) शोध लेखों और अंग्रेजी भाषा के चयनित 4 (चार) शोध लेखों को– प्रकाशित किया जा रहा है। इस तरह कुल 13 (तेरह) शोध–लेख, प्रस्तुत अंक में प्रकाशित हो रहे हैं। संपादकीय लेख के साथ, पटेल कल्चरल फाउण्डेशन' द्वारा प्रस्तुत 'गिरिनार महोत्सव : 2021–2022' (5–9 जनवरी 2022) की संक्षिप्त चर्चा भी 'एक अवलोकन' के नाम से 14वें क्रम में संकलित की गयी है।

प्रस्तुत अंक को संपादित करने में 'आलोचन दृष्टि'–परिवार ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभाते हुए प्रस्तुत अंक के कार्य को पूरा किया है। सभी के सहयोग के प्रति मैं आभार प्रगट करता हूँ। अंत में, मैं सभी शोध–लेखकों के सहयोग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ और सुधी–पाठकों के स्नेह के प्रति अपना अनुग्रह भी।

शेष फिर...।

31 मार्च, 2022।

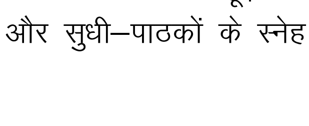

विषयानुक्रमणिका

- संपादकीय

1. परंपरा एवं आधुनिकता का भारतीय-संदर्भ (पं. विद्यानिवास मिश्र के विशेष संदर्भ में) 1-5
डॉ. सुनील कुमार मानस
2. वर्तमान-शिक्षा-पद्धति में वैदिक-मूल्यों के समावेश की उपादयेता 6-14
डॉ. ब्रह्मा नन्द पाठक
3. संस्कृत-वाङ्मय में वर्ण-व्यवस्था की उपादेयता 15-18
डॉ. ब्रजेश कुमार शुक्ल
4. आधुनिक भारत का धर्म-सुधार-आन्दोलन और नारी-चिंतन 19-23
आकांक्षा अग्निहोत्री
5. समकालीन हिन्दी स्त्री-कथा साहित्य : अस्मिता और मूल्य 24-26
मुम्पा मरबम
6. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका 27-32
डॉ. एस. रूपेन्द्र राव एवं सन्त कुमार तिवारी
7. वस्तु एवं सेवाकर का प्रशासनिक विवेचन 33-38
डॉ. अनिल कुमार पारीक
8. प्राथमिक-विद्यालयों में कार्यरत शिक्षामित्रों एवं सहायक अध्यापकों की शैक्षणिक... 39-43
इन्द्र प्रकाश सतोईया एवं डॉ. दीप्ती कुमारी
9. समकालीन हिन्दी स्त्री कथा लेखन की विविध छवियाँ 44-46
मुम्पा मरबम
10. **Peace Education in Global Context** 47-51
Dr. G. Sowbhagya
11. **A Study on the Factors Responsible for Wine Tourism with...** 52-59
Satish Singh, Snehal Deshmukh & Chaitanya Gaikwad
12. **A Case Study on the technological development in Food and beverage...** 60-66
Mr. Shashank Rajauria, Mr. Satish Singh & Ms. Neha Mehra
13. **A Study on the Factors Responsible for The Revenge Tourism by...** 67-74
Mr. Charu Dutt Sharma, Mr. Satish Singh & Mr. Shashank Rajauria
14. पटेल कल्चरल फाउण्डेशन द्वारा प्रस्तुत गिरिनार महोत्सव : 2021-2022.... 75-80
डॉ. सुनील कुमार मानस

✶

पत्रिका में शोध-लेख प्रकाशन की अनिवार्य शर्तें

1. आपके द्वारा प्रेषित शोध–लेख मौलिक, स्तरीय, प्रकाशन के योग्य एवं अप्रकाशित हो, तथा आपके द्वारा **आलोचन दृष्टि** द्वारा जारी किया गया **लेखक का घोषणा–पत्र** फार्म अवश्य भरा होना चाहिए।
2. अपने शोध–लेख (हिन्दी व संस्कृत के Kruti Dev 10 में और अंग्रेजी के Times New Roman Font में) की वर्ड एवं पी.डी.एफ. फाइल बनाकर सी.डी. या डी.वी.डी. में हार्ड कॉपी के साथ **आलोचन दृष्टि, कार्यालय** के पते में प्रेषित करें। आपको यदि अपने शोध–लेख का **स्वीकृत पत्र** चाहिए तो एक लिफाफे में अपना नाम, पता पिन कोड सहित लिखकर, आवश्यक स्पीड पोस्ट की डाक टिकट लगाकर भेजें और 3–4 महीने तक अनावश्यक कोई कॉल किसी भी **आलोचन दृष्टि** के प्राधिकारी से न करें। यदि किसी पदाधिकारी से बात करने की जरूरत पड़े तो शाम 6.00–8.00 के बीच संपर्क करें।
3. **शोध–लेख / आलेख में मोबाइल नंबर, ई–मेल एवं पता अंकित होना चाहिए।**
4. शोध–लेख / आलेख की जांच **संपादक मंडल** एवं **आलोचन–दृष्टि–परिवार** के द्वारा की जाएगी उसके उपरांत ही शोध–लेखों / आलेखों को प्रकाशित किया जायेगा, जिसमें **संपादक मंडल** का **निर्णय** अंतिम और सर्वमान्य रहेगा।
5. शोध लेख **यूजीसी** के मानक के अनुरूप होने चाहिए और **संदर्भ–सूची** में पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, प्रकाशन का नाम, संस्करण–वर्ष एवं पृष्ठ संख्या तथा पत्रिका के संदर्भ हेतु, उसका अंक, वर्ष, पृष्ठ संख्या आदि– निश्चित रूप से अंकित होने चाहिए। ऐसा न होने पर लेख की **संदर्भ–सूची** को भ्रामक माना जाएगा।
6. पत्रिका के प्रकाशन हेतु लेखकों, पाठकों एवं आलोचकों से सदस्यता भी अपेक्षित रह सकती है, क्योंकि पत्रिका को कोई अनुदान या अंशदान नहीं प्राप्त हो रहा।
7. पत्रिका में सर्वेक्षणात्मक की अपेक्षा वैचारिक शोध–लेखों / आलेखों को वरीयता प्रदान की जायेगी।

Essential conditions for publication of research articles in the journal

1. The research article sent by you should be original, quality, worthy of publication and unpublished, and the **Author's Declaration Form** issued by **Aalochan Drishti** must be filled.
2. To send CD or DVD of your research articles Word & PDF File, with hard copy (Hindi & Sanskrit in **Kruti Dev 10 Font** and English in **Times New Roman Font**) at the address of **Aalochan Drishti**. If you want the Acceptation Letter of your dissertation/article, then write your name, address with pin code in an envelope, to affixing required speed post postage stamp and No unnecessary call for 3-4 months from any officer/ Member of Aalochan Drshiti. If there is a need to talk to any Officer/Member, then contact between 6.00-8.00 in the evening.
3. Mobile number, e-mail and address should be mentioned in the research paper/article.
4. The research-articles will be examined by the **Editorial Board** and **Aalochan Drishti - Family**, only after that the research articles/articles will be published, in which the decision of the **Editorial Board** will be final and binding.
5. Research articles should be as per **UGC standard** and in the **Bibliography** the name of the book, the name of the author, the name of the publication, the edition-year and page number and for the reference of the journal, its issue, year, page number etc.- fixed must be clearly marked. Otherwise, the **Bibliography** of the article will be considered misleading.
6. Subscription may also be required from writers, readers and critics for the publication of the magazine, because the magazine is not receiving any grant or contribution.
7. Preference will be given to conceptual research articles/articles in the journal rather than survey.

परंपरा एवं आधुनिकता का भारतीय-संदर्भ
(पं. विद्यानिवास मिश्र के विशेष संदर्भ में)

डॉ. सुनील कुमार मानस*

भारतीय चिंतन क्रमिक विकास का सूचक है, जिसकी हजारों साल की एक लंबी, समृद्ध एवं सुदीर्घ परंपरा है। इस परंपरा की यात्रा का स्वरूप देश, काल एवं भाषा से गहरे रूप से सम्पृक्त है, और यह सम्पृक्तता ही उसकी मूलभूत पहचान है, जो इस समृक्तता की समझ से जुड़ा हुआ है, वही इसके मूल को समझ सकता है और फिर उस पर अपने विचार भी प्रकट कर सकता है। इस प्रकट करने की प्रक्रिया में दो बातें विशेष रूप से दिखलाई पड़ती है। पहली है– 'परंपरा की समझ' और दूसरी है 'आधुनिकता की दृष्टि–सम्पन्नता। इन दोनों बातों के आधार पर व्यक्ति की समझ का निर्धारण होता है।

सामान्यतः परंपरा और आधुनिकता को आलोचकों ने कई बार एक–दूसरे का विरोधी बताया तो कई बार उसे एक दूसरे का पूरक माना। सामान्यतः यह भी मानना है कि परंपरा– प्रायः जड़ होती है, और आधुनिकता– गतिशील। यहाँ मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जब परंपरा की बात कहीं पर भी आती है तो उसमें आधुनिकता की सम्पृक्तता आ ही जाती है, और जब कहीं पर आधुनिकता की बात होती है तो उसमें परंपरा का भाव सन्नहित ही हो जाता है। हम जब भी कोई बात करते हैं तो समकालीन आधुनिकता की अपनी समझ के साथ करते हैं, जिसमें सुदीर्घ–चिंतन का सार छुपा रहता है– यही इसके सन्निहित भाव भी है। इस तरह से यह स्पष्ट हो जाता है कि परंपरा की भी एक विशिष्ट आधुनिकता होती है और आधुनिकता की भी एक विशिष्ट परंपरा।

दोनों को भले ही आप अलग कर दे या मिला दे अथवा फिर छोड़ दें। पर दोनों शब्दों के अर्थवत्ताएँ एक–दूसरे के मिलने में ही है। भले ही, आप पाश्चात्य या भारतीय चिंतन की दृष्टि से प्रभाव में आकर कुछ विचलित हो जायें लेकिन न तो परंपरा के, और न ही आधुनिकता के– स्वभाव में कभी बदलाव दिखलाई पड़ता है। सतत धारा की तरह निरंतर एक दूसरे के साथ सतत रूप से जुड़कर प्रवाहित रहने की इनकी प्रवृत्ति है, जिसने जिस दृष्टि के आधार पर इसे देखा, उसको उसी के अनुरूप दिखने लगती है। वस्तुतः परंपरा एवं आधुनिकता केवल 'दृष्टि–बोधक' शब्द हैं। इसीलिए इन पर सबका अपना–अपना 'बोध' भी प्रतिबिंबित होता है। यह बोध एक भारतीय के लिए भारतीय–रस से शिक्त है, जिसका यह बोध जितना व्यापक है, परंपरा एवं आधुनिकता की उसकी उतनी ही समझ बेहतर होती है। इसी बेहतर–समझ की वृत्ति के अनुरूप इतिहास–दृष्टि भी गठित होती है और जीवन–दृष्टि भी। जीवन–दृष्टि का निर्धारण जातीयता की संरचना के आधार पर अलग अलग हो सकता है, जो देश, काल एवं भाषिकता के अनुरूप एक सांस्कृतिक स्वरूप का दिग्दर्शन कराती है और इसी सांस्कृतिक स्वरूप के निर्देशन की चित्तवृत्ति को संचित करने का काम इतिहास–दृष्टि करती है।

इस परंपरा को लेकर हमारे प्रसिद्ध चिंतकों ने तमाम तरह की अपनी–अपनी अवधारणाएँ विकसित की हैं, जिसमें पं. विद्यानिवास मिश्र का नाम अग्रणीय एवं महत्त्वपूर्ण है। इन्होंने परंपरा को भारतीयता से भी जोड़ा है क्योंकि परंपरा के इतिहास–बोध से ही किसी राष्ट्र का वैचारिक स्वरूप का निर्धारण होता है। अस्तु, इनकी अवधारणाओं से भारतीयता को समझने में बड़ी सहायता मिलती है। विद्यानिवास मिश्र के अनुसार परंपरा को छोड़कर हम भारतीयता को समझ ही नहीं सकते और न ही उसकी हम व्याख्या कर सकते हैं। यह भारतीयता शब्द एक वैचारिक निधि का पूरक है, जिसमें हमारे भाव, विचार, संस्कार, रूढ़ि, अवधारणाएँ, मान्यताएँ, परंपराएँ आदि– गहरे रूप से सम्पृक्त रहते हैं।

*** प्रधान–संपादक–आलोचन दृष्टि, एवं प्राध्यापक– हिन्दी, बहाउद्दीन आर्ट्स कालेज, जूनागढ़ (गुजरात)**

उन्होंने अपने एक निबंध 'हमारी परंपरा और हम' में लिखा है कि ''हमारी परंपरा हमारे ऊपर नहीं है, हमारे भीतर है। यह बहुत कम लोग पहचानते हैं। साथ ही परंपरा और रूढ़ि को प्रायः लोग एक मान लेते हैं। रूढ़ि का अर्थ है ऐसी परिणति, जहाँ आगे परिवर्तन की संभावनाएँ खत्म हो जाएँ या कम हो जाएँ।'' इसी निबंध में वह आगे यह भी स्पष्ट करते हैं कि ''रूढ़ियाँ समाज को एक रखने में सहायक भी होती हैं, पर केवल रूढ़ियाँ–रूढ़ियाँ ही रह जायें, तो समाज की गति अवरुद्ध हो जाती है। समाज को गतिशील बनाने के लिए जिस संकल्प और जिस प्रेरणा की आवश्यकता पड़ती है– उसी का नाम है परंपरा। परंपरा और रूढ़ि में केवल एक ही समानता का बिंदु है– दोनों को समाज मान्यता देता है, दोनों समाज की व्यवस्था के लिए है, पर दोनों के स्वभाव एकदम भिन्न होते हैं। परंपरा की दृष्टि हमेशा भविष्यत् की होती है। वह भविष्यत् की दृष्टि से अतीत का पुनर्दोहन करती है और वर्तमान को, अर्थ की तलाश के लिए बेचैन करती है, जबकि रूढ़ि अतीत से एकदम विच्छेद होने को लाचार होकर भी अतीत बनी रहना चाहती है। रूढ़ि टूटती है तो चली जाती है, परंपरा टूटती है तो बढ़ जाती है।'' इस तरह से पंडित जी ने परंपरा को रूढ़ि से पृथक करते हुए भारतीय ऐतिहासिक संदर्भ की मीमांसा की है। इस मीमांसा में इतिहास और 'परंपरा के दृष्टिकोण' को विचारों का बोधीय–स्तर के आधार पर परिभाषित किया है और उन्हें भारतीय अवधारणा से सम्पन्न बनाया है उन्हीं के शब्दों में ''हमारा समाज परंपरा–प्रधान रहा है– इसका अर्थ यह नहीं कि वह अतीत से बंधा हुआ समाज है। दूसरे शब्दों में वह इतिहास से बंधा नहीं रहा है। यह उसकी कमजोरी भी रही है, शक्ति भी रही है। पश्चिम के इतिहासबद्ध समाज के संपर्क में आने पर परंपरा को इतिहास से जोडने् की कोशिश हमने डेढ़–दो सौ वर्षों से की, और हमने अपनी ऐतिहासिक परंपरा का एक आकार भी खड़ा किया। पर जो लोग उसी आकार के लिए भावातिरेक में बहे, वे परंपरा से बिछुड़ गए। जिन लोगों ने भारत के गौरवशाली इतिहास के और उसके नैतिक ह्रास के सीमांत बनाए, वे गौरवशाली इतिहास से उपजाए स्वप्नों के शिकार हो गए। उन्होंने उस अजस्र धारा को अनदेखा कर दिया, जो विजेताओं, निर्माताओं, सम्राटों और उसके प्रशंसकों को किनारे छोड़ती आई, केवल एक भीतरी प्रवाहमयता तथा प्रखरता पर उसका ध्यान रहा, उसने इस प्रखरता के द्वारा ही कहाँ–कहाँ का गंदलापन, ठहराव और अवरोध नहीं काटा और इस प्रखरता के कारण ही वह दूसरी अन्य धाराओं को अपने साथ लेने का निरंतर प्रयत्न करती रही। इसे अनदेखा करने का परिणाम यह हुआ कि परंपरा से हमें खीझ होने लगी है क्योंकि हमारे लिए धारा नहीं धारा की छाडन्, छाडन् भी नहीं, छाडन् की सड़ांध परंपरा बन गई। हम सोचने लगे हैं कि इस परंपरा के रहते हम प्रगति नहीं कर सकते, हम आज आधुनिकता की तेज दौड़ में पिछड़े रह जाएँगे। हम पारम्परिक मूल्यों की अवज्ञा करने लगे, हम नए इतिहास के निर्माता होने का हवाई ख्याल पालने लगे।''

परंपरा का काल बोध होता है और इतिहास बोध भी। परंपरा ही संस्कृति को आच्छादित करके परिष्कृत करने का काम करती है। यह परिष्कार करने की गतिशीलता ही हमारे लिए अभीष्ट है, जिसके विवेचन में अब्द और ऋत के वियुत्पत्तिपरक अर्थ की भावमयता को व्यक्त करते हैं। उन्हीं के शब्दों में ''हर संस्कृति का इतिहास–बोध उसके काल–बोध से जुड़ा हुआ है। भारतीय जीवन–पद्धति में काल की वास्तविकता दो रूपों में सार्थक हैः एक तो प्रतिक्षण आवर्तन काल जो कभी चुकता नहीं, जो निरंतर पूरा होता रहता है। इसलिए अब्द, ऋत जैसे शब्द इसके प्रवाहात्मक अर्थ को ही विशेष रूप से व्यंजित करते हैं। ऋतु का व्युत्पतिपरक अर्थ होता है 'गतिशील', और अब्द का 'कभी न गिरने वाला'।'' उपरोक्त संदर्भ में ऋत शब्द सबसे वैचारिक बिंदु है, जिसका सत्य से भी संबंध जुड़ता है भारतीय संस्कृति सत्य और ऋत के सोपानो से गुजरते हुए कभी भी अपने को पूर्ण नहीं मानती बल्कि उसे पूर्ण करने के लिए वह सतत गतिशील रहती है। पंडित जी ने अपने निबंध 'भारतीय चिंतन पद्धति' में लिखा है कि ''हमारी विशेषता केवल इतनी है कि हम यह मानते हैं कि हमें पूरा नहीं मिला है, लेकिन पूरा हमारे सामने है और उसी को सामने रख करके निरंतर हम आगे बढ़ते हैं। अगर हम अपने को पूरा मान लें तो हमारी गति अवरुद्ध हो जाएगी। इसीलिए हमारी संस्कृति दो कूलों के बीच में प्रवाहित होती रहती है। एक कूल

है सत्य का, दूसरा कूल है ऋत का। सत्य का अर्थ है– जो शाश्वत कुछ विधान है, वह सत्य है। ऋत का अर्थ है– जो चलता है, चलाता है, वह ऋत है। यदि दोनों की मर्यादाओं की रक्षा न हो तो नदी निरंकुश हो जाती है, वह संहार करती है।''

हमारी परंपरा और संस्कृत की प्रवाहमयता से ही आधुनिकता की निर्मित होती है। यही आधुनिकता हमें रूढ़ि से मुक्ति दिलाती है या रूढ़ि को हमेशा तोड़ने की कोशिश करती है। इस तरह हमारी आधुनिकता Modernity से अलग है किंतु इसे तकनीकी विकास की साधन–संपन्नता से जोड़ दिया जाता है इस बात को ध्यान में रखते हुए पंडित जी ने अपने निबंध 'परंपरा का पुरुषार्थ' में लिखा है कि 'आधुनिकता हमारे बहुत से तकनीकी चकाचौंध से ग्रस्त लोगों के मन में बसी हुई स्वयं रूढ़ि बन चुकी है। इस रूढ़ि बनी आधुनिकता से परंपरा ही मुक्ति दिला सकेगी। क्योंकि निरंतर प्रवाहशीलता है इसलिए परंपरा की सार्थकता विशेष रूप से हमारे संदर्भ में इसलिए है कि आधुनिकता की रूढ़ियों को तोड़ने के लिए सर्वत्र बेचैनी दिखाई पड़ती है, वह बेचैनी परंपरा के पुरुषार्थ से ही समाधान पा सकेगी और परंपरा ही सही आधुनिकता को नया और अभीष्ट आकार दे पाएगी।''

परंपरा और रूढ़ि की तरह ही वह आधुनिकता और परंपरा को भी स्पष्ट करते हैं। अपने निबंध 'परंपरा का पुरुषार्थ' में लिखते हैं कि 'आधुनिकता संपूर्णता की चिंता नहीं करती, जबकि परंपरा निरंतर बदलते हुए भी, संपूर्णता की चिंता करती है। जिसको आप उनके ही निबंध 'आधुनिकता मेरी नजर में' के आधार पर समझ सकते हैं। वह लिखते हैं कि 'आधुनिकता काल की चेतना है पर कालबद्ध रूढ़ि नहीं है। यह समझ लिया जाए तो बहुत सारे भ्रम इसके संबंध में अपने आप ही छट जायें। आधुनिक होने का अर्थ होता है– यह पहचानते चलना कि हम किस जमीन पर हैं, हम किस हवा को अपने साँसों में भर रहे हैं, छोड़ रहे हैं। हम किस आकाश के वितान के साए में चल रहे हैं या फिर हमारा कोई सापा चल रहा है, हमको लग भर रहा है कि हम चल रहे हैं। यह पहचानना कभी चुकता ही नहीं। इसलिए देश और काल बदल सकते हैं, पर पहचानने का भाव नहीं बदलता क्योंकि वह तो एक प्रक्रिया है। पहचानी जाने वाली परिस्थितियाँ बदलती है, पहचानना बना ही रहता है और यह पहचानना जब कभी रुक जाता है तो पहचान करने वाला आदमी ठहर जाता है।''

परंपरा का इतिहास हो सकता है पर परंपरा कभी इतिहास नहीं होती। इतिहास और परंपरा में हमेशा से एक भेद रहा है, खासतौर से भारतीय संदर्भ में। भारतीयता इतिहास में नहीं, परंपरा में विश्वास करती है और इतिहास में गर्व, गौरव एवं उत्साह की झलक के साथ उसके तमाम 'स्याह पक्ष' भी मिल सकते हैं लेकिन परंपरा के नहीं। इतिहास से हमारा संबंध भी विच्छेद हो सकता है पर परंपरा से सदैव हमारा जुड़ाव बना रहता है, जो शास्त्र से मर्यादित होती रहती है और लोक से संचालित। पंडित जी ने अपनी निबंध भारतीय परंपरा और भारत में इस संदर्भ का उल्लेख करते हुए लिखा है कि ''लोक प्रचलित व्यवहार शास्त्र की रक्षा भी करते हैं, शास्त्र का नियमन भी करते हैं, 'यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं नहि करणीयं नहि करणीयम्' शास्त्र विहित हो तो भी लोक विरुद्ध हो तो करणीय नहीं है, यह दृष्टि ही भारतीय परंपरा को पोथीवादी नहीं बनाती, इस परंपरा में पोथी का महत्त्व है, पर लोक जीवन से जुड़ कर। इसी से जहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण से निर्णय उचित है, वहाँ शास्त्र को जबर्दस्ती नहीं लाया जाता, पर जहाँ प्रत्यक्ष या अनुमान बाधित है, ऐसे क्षेत्र में शास्त्रीय दृष्टि ही प्रमाण मानी जाती है। कभी–कभी शास्त्र निगूढ़ हो जाते हैं, अभ्यास के अभाव में, तब उन्हें लोक प्रवृत्र व्यवहारों के द्वारा आकलित करना पड़ता है।''

परंपरा का खंडन नहीं हो सकता, इतिहास का हो सकता है; किंतु अशोक मेहता एवं हुमायूँ कबीर जैसे इतिहासकारों ने परंपरा का भी खंडन किया है, लेकिन यह खंडन 'डाह' के रूप में अधिक होता है, तार्किक समझ के आधार पर नहीं, जिसकी ओर पंडित जी ने ध्यान दिलाते हुए लिखा है कि ''परंपरा के खंडन का उत्साह कुछ बुद्धिजीवियों में उसी प्रकार का दिखता है, जिस प्रकार रांड़ औरतों में

अपने पति की मृत्यु पर असंभव से असंभव कारणों के प्रति आक्रोश में देखने को मिलता है। वे भी अपनी जेठानी की नजर को कोसेंगी कि इसी ने मेरा सुहाग छीन लिया, कभी दरवाजे पर ससुर के द्वारा लगाये गए पेड़ को कोसेंगी कि इसी के लगाने से मेरे ऊपर यह वज्रपात हुआ। कुछ इसी प्रकार की भाषा में हमारे देश के कुछ सूत्रधार भी बोलते हैं। श्री अशोक मेहता ने एक दीक्षांत–समारोह में फरमाया कि उत्तर प्रदेश के विकास में बाधा है उसकी परंपराग्रस्तता। श्री हुमायूँ कबीर ने भी विद्यार्थियों के बीच एक फतवा दिया था। अंग्रेजी को माध्यम के रूप में न स्वीकार करने के कारण ही उत्तर प्रदेश पिछड़ा हुआ था। प्रगति के व्याख्याता अपना अपराध परंपरा के ऊपर लादकर पापमुक्त होना चाहते हैं। पर वे यह भूल जाते हैं कि इस पाप से भी बड़ी गठरी उनके सिर पर विदेशी परंपरा के भूत के रूप में बराबर सवार है और उनकी प्रत्येक क्रिया उस भूत से संचालित है।'' इसीलिए भी अपने निबंध 'परंपरा और आधुनिकता' लिखते हैं कि ''परंपरा को सहलाओ, परंपरा के कंधे पर खड़े हो जाओ और परंपरा को काटो तो भी परंपरा से मुक्ति नहीं मिल सकती।'' इस तरह से परंपरा हर एक देश के लिए एक तरह का बौद्धिक–जागरण है और यह बौद्धिक–जागरण किसी भी तरह की आसक्ति में नहीं बनती है। इसका बंधन अनासक्त का बंधन ही हो सकता है। विद्यानिवास मिश्र के ही शब्दों में 'परंपरा प्रत्येक उपलब्ध का विसर्जन करती चलती है, उपलब्धि की आसक्ति से बँधना नहीं चाहती।' उनका मानना भी है कि 'हम उसे जितना अपनी पिछली सफलता–असफलता से जोड़ते हैं। हम उसे जितना अपनी संभावनाओं से जोड़ते हैं, उतनी हमारी परंपरा होती है।' और स्पष्ट करते हुए निर्देशित भी कर देते हैं कि परंपरा बंधन नहीं, रूढ़ि भले ही बंधन हो जाये। इस तरह यदि उनके आधुनिकता के विवेचन को हम एक वाक्य में पंक्तिबद्ध करना चाहे तो यही कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति एवं परंपरा को समझने की गहरी तड़पन ही भारतीय आधुनिकता है। उसे पाश्चात्य की समस्याओं के बोध से उपजी आधुनिक मूल्यहीनता के संदर्भ से दूर करके देखना चाहिए। यहीं पर मानवेंद्र पांडेय का कथन याद आता है, जो उन्होंने अपने लेख 'परंपरा का स्वीकार : आधुनिकता का विकल्प' में लिखा है कि 'आधुनिकता कालबोधक न होकर एक प्रवृत्ति–मूलक प्रत्यय है। आधुनिकता केवल अपने समय से आगे का द्योतक नहीं है, बल्कि वह एक मानसिकता है।'

अस्तु यह कहने में किसी को संदेह नहीं होना चाहिए कि 'परंपरा' भारतीय चिंतन को एक सुदीर्घ व्यवस्थित रूप ही नहीं प्रदान करता बल्कि इस समाज को संस्कारित करने का भी काम करता है और यह प्रक्रिया भारतीय संदर्भ में 'आधुनिकता का रूपांतरण' है। अब जिसकी जिस तरह की दृष्टि बनी, वह उसी के अनुरूप उसकी व्याख्या करता है और करता रहेगा। यह एक मानसिक चिंतन का एकाकार रूप भी है और समग्रता का द्योतक भी। इस कारण इसमें अंतर्विरोध भी बहुत से दिखलाई देते हैं। यही अंतर्विरोध उसके चिंतन की नई–नई भाव–भूमि भी निर्धारित करते हैं। इस भाव–भूमि में समस्त भाव एवं विचार मिलकर एकाकार हो जाते हैं, अर्थात् भाव, भाव न रह कर विचार बन जाते हैं, विचार, विचार न रहकर भाव बन जाते हैं। दोनों में तर्क–वितर्क होते हैं। इस तर्क–वितर्क में बुद्धि के तमाम सोपानों की जिरह होती है और अंततः सब कुछ पुनः एक भाव के रूप में परिणत होकर आपसी सहमति की एक परिपक्व मिसाल बन जाती है। यही इसकी निरंतरता है। यही इसकी गतिशीलता है।

भारतीय संस्कृति में सदैव परंपरा एवं आधुनिकता का अंतर–संबंध रहा है, जिसके विकास–क्रम की प्रक्रिया के साथ आधुनिकता, परंपरा के स्वरूप में ढ़लती चली जाती है और उसके पुनर्चिन्तन का स्वरूप आधुनिकता का जामा ओढ़ता जाता है। पाश्चात्य के आधार पर आधुनिकता के स्वरूप का निर्धारण करने वाले विद्वान 'आधुनिकता के स्वरूप' को समझ ही नहीं सके और पाश्चात्य की समस्याओं एवं मूल्यहीनता के आधार पर भारतीय–आधुनिकता का मूल्य निर्धारण करने में भी पीछे नहीं रहे। वैसे पाश्चात्य की जो आधुनिकता या परंपरा का स्वरूप निर्धारित किया जाता है, वह पश्चात की न तो आधुनिकता है और न ही परंपरा, बल्कि एक विशेष पूँजीवादी–वर्ग की ही अवधारणाओं का समुच्चित रूप है, जो पाश्चात्य आधुनिकता एवं परंपरा की द्योतक मान ली जाती है, और यही दृष्टि संपूर्ण विश्व की

आधुनिकता और परंपरा के मूल्यांकन की निर्धारित कर दी जाती है, जिसे Modenity and Tradition के रूप में भी जाना, समझा एवं देखा गया।

अस्तु विद्यानिवास मिश्र ने परंपरा, संस्कृति और आधुनिकता के सतत प्रवाह को रूढ़ि से अलग करके देखा है और यह बताया है कि भारत की एक जातीय अवधारणा है जो सदैव प्रवाहमान रहती है जिसमें 'कीरति भनिति भूति भलि सोई' की अपनी निजता होती है। इसीलिए पंडित जी ने लिखा है कि ''भारत देश नहीं है, एक गतिशील चक्र है जो समुद्र को भूमि से पृथक करता है। उज्ज्वल धारा फेनिल धारा अलग हो जाती है और तमाल ताल के वृक्षों के माध्यम से श्यामलिमा अलग हो जाती है। एक तो भारत का रूप यह है। यह कुछ अधिक सूक्ष्म है।'' और साथ ही यह भी उदघोषित करते हैं कि ''हमारा संकल्प कला–सृष्टि है ही नहीं। हमारा संकल्प है जो हमें दिया गया है उसके प्रति संपूर्ण भाव से समर्पण, और जो कर्म, जिस प्रकार का कर्म, जिस प्रकार का व्यवसाय हमको प्राप्त है, जो हमको अपने स्वभाव के रूप में प्राप्त है, उसका विकास ही हमारा लक्ष्य है।''

इस तरह से पंडित जी ने समग्र भारतीय चिंतन के संवेदित एवं संवेगिक पक्ष के मौलिक एवं मार्मिक पक्षों को अपने ललित निबंधों में पिरोया है और उसके निहित अभिप्राय को, जिसे हम लक्ष्य की प्राप्ति का संकल्प भी कह सकते हैं, प्राप्त करने की अनवरत प्रक्रिया को महनीय गति प्रदान किया है जो हर एक भारतीय के लिए बोधमूलक एवं उत्साहवर्धक हैं।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची :–

1. नदी, नारी और संस्कृति – पं. विद्यानिवास मिश्र, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1993।
2. भारतीयता की पहचान – पं. विद्यानिवास मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण–2016।
3. भारतीय संस्कृति के आधार – पं. विद्यानिवास मिश्र, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2006।
4. लोक और लोक का स्वर – पं. विद्यानिवास मिश्र, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2000।
5. स्वरूप विमर्श – पं. विद्यानिवास मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2001।
6. हिंदू धर्म : जीवन में सनातन की खोज – पं. विद्यानिवास मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2013।
7. साहित्य के सरोकार – पं. विद्यानिवास मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण–2007।
8. संचारिणी – पं. विद्यानिवास मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण–2016।
9. देश, धर्म और साहित्य – पं. विद्यानिवास मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1999।

वर्तमान-शिक्षा-पद्धति में वैदिक-मूल्यों के समावेश की उपादयेता

डॉ. ब्रह्मा नन्द पाठक*

मानव जीवन में शिक्षा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। बिना शिक्षा प्राप्त किये मनुष्य, मनुष्य नहीं बनता। वैदिक संस्कृति में 'द्विज' कहते ही उसे हैं। जिसका दोबारा जन्म होता है। एक माता–पिता से दूसरा आचार्य कुल में **''शरीरमेव मातापितरौ जनयतः सहि विद्यातः ते जनयति। तच्छ्रेष्ठं जन्म''**[1] माता–पिता तो शारीरिक जन्म देते हैं किन्तु आचार्य कुल में जाकर ही वह श्रेष्ठ द्विज बनता है। अतः शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास के लिए अमोघ साधन है। आज शिक्षा का अर्थ साक्षरता अथवा मात्र जीविकोपार्जन रह गया है। वस्तुतः जीविकोपार्जन भी शिक्षा का उद्देश्य अवश्य होना चाहिए इसका निषेध नहीं किया जा सकता, किन्तु अन्तिम लक्ष्य यह नहीं हो सकता।

प्रश्न है कि क्या साक्षरता मात्र मानव को शिक्षित होने का प्रमाण दे सकती है। क्या साक्षर होकर भौतिकता से युक्त डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, अध्यापक राजनेता या व्यवसायी बनाकर शिक्षा के कारखाने सही शिक्षित मानव को एकमात्र लक्ष्य रोटी–रोजी और मकान प्राप्त कर सुख एवं शान्ति को प्राप्त कर सकता है। यद्यपि मानव की ये भौतिक आवश्यकताएँ अनिवार्य हैं किन्तु मानव की तृप्ति मात्र इसी से नहीं, इसके अतिरिक्त वह शान्ति और मुक्ति चाहता है। स्पष्ट है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से यदि मानव कल्याण हो जाता, तो समाज में व्याप्त अशान्ति, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, हिंसा, युद्ध की विभीषिका, आंतक या विकृत संस्कृति का प्रचार–प्रसार न हो पाता और न मानव पीडित होता। इसके विपरीत अभी भी मानव में इससे मुक्त होने की तीव्र उत्कण्ठा और प्रयत्न परिलक्षित हो रहे हैं। मानवाधिकार विश्वशांति, भ्रष्टाचारविहीन समाज की संरचना के प्रति मानव समाज आशान्वित एवं प्रयत्नशील है।

वैदिक संस्कृति के आधारभूत वे मूल्य जिन पर समग्र संस्कृति आधारित है मानवमात्र के कल्याण को लक्ष्य कर इसके समाधान स्वरूप कहती है **''सा विद्या या विमुक्तये।''**[2] अर्थात् विद्या वह है जो हमें सब प्रकार के दुःखों से विमुक्ति दिलाए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भौतिकता का विकास एवं उन्नति चरम सीमा पर पहुँच रही है। यह अनिवार्य भी है किन्तु मानव केवल शरीर नहीं अपितु आत्मा तथा अन्य मनादि उपकरणों से युक्त एक अद्भुत रचना है। जीवन की गाड़ी एक ही पहिये से नहीं चल सकती। अतः मानव का सर्वांगीण उन्नति आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों साधनों पर निर्भर है। यदि इसे हम विस्मृत कर देंगे तो समाज की विकृति अवश्यंभावी है। अतः यदि मानव सही रूप में शिक्षित होना चाहता है तो उसे वैदिक मूल्यों पर अवश्व ध्यान देना होगा। शिक्षा में वैदिक मूल्यों द्वारा ही समाज में एकरूपता तथा समरूपता निश्चित रूपेण आ सकती है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में हमें उन प्राचीन आदर्शभूत मूल्यों की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

वैदिक शिक्षा पद्धति का उद्देश्य मनुष्य को केवल त्यागवादी ही बनाना नहीं है अपितु बालक का सर्वांगीण विकास करना ही मुख्य ध्येय है। शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। अथर्ववेद का प्रारम्भ ही वैदिक शिक्षा के उद्देश्य के साथ प्रारम्भ होता है––**''पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह। वसोष्पते नि रमय मय्यवास्तु मयि श्रुतम्।''**[3] गुरु–शिष्य का सम्बन्ध, शिक्षक एवं शिक्षार्थी, दोनों के कर्तव्य इस मंत्र में बताये गये हैं। गुरु आचार्य शिक्षक ऐसे पढ़ायें

***सहायक आचार्य–संस्कृत, गंगा आश्रम महाविद्यालय, हरदोई, उ0प्र0।**

जिससे शिष्य आनन्द के साथ पढ़ते जाए। दो गुण आचार्य के होने चाहिए एक गुण वाणी का प्रयोग करने में निपुण समर्थ, शिष्य को विषय–ज्ञान कराने में निपुण उत्तम वक्ता तथा दूसरा गुण (वसोष्पतिः) अर्थात् शब्दों द्वारा ज्ञान के साथ–साथ उसको वस्तुओं द्वारा साक्षात् प्रत्यक्ष करा देने में समर्थ होना चाहिए।

शिष्य इस प्रकार होने चाहिए कि वे उस ज्ञान को प्राप्त करके स्थिर करने की उनमें तीव्र उत्कंठा, जिज्ञासा भाव होना चाहिए। हर एक विद्यार्थी को अपने मन में यह इच्छा रखनी चाहिए कि 'हम सब ज्ञान से युक्त हो' ज्ञान की वृद्धि करते रहें और कभी ज्ञान की प्रगति में बाधा न डाले, ज्ञान का विरोध न करें और न कभी मिथ्या ज्ञान का प्रचार करें। ज्ञान की वृद्धि उपाय स्वयं वेद ने बताए हैं। सबसे पहला साधन है – ''विद्या''– जिनसे जगत् बनता है उन मूल तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करना अेर उनका अपनी उन्नति से सम्बन्ध देखना तथा उसका अनुष्ठान करने की विधि जानना, यही सीखने योग्य विद्या है।

दूसरा साधन ज्ञान वृद्धि का आचार्य है। उत्तमोत्तम विद्याओं को सिखाने वाला जिसको मंत्र में 'वाचस्पतिः' कहा है। उत्तम रीति से विद्या पढ़ाने वाला 'वसोष्पतिः' कहा है। उत्तम रीति से विद्या पढ़ाने वाले 'वसोष्पतिः' अग्न्यादि मूलतत्त्वों का प्रयोग यथावत् करने वाला हो, 'पति' शब्द 'प्रभुत्व' का भाव बताता है। तीसरा साधन पढाने की रीति गुरु अपने 'देवेन मनसा' मन के शुभ संकल्प के साथ पढ़ावे 'निरमय' बालकों को हँसते–मुस्कुराते हुए विषयों का ज्ञान कराता जाए। आनन्द के साथ पढ़ाए। शिष्यों के प्रश्नों का आदरपूर्वक उत्तर देकर उनका समाधान करें।ज्ञान के क्षेत्र में चौथा शिष्य है। उसे सदा ज्ञानवान् बनने का पूरा–पूरा प्रयत्न करना चाहिए। पढ़ा हुआ ज्ञान आत्मसात् करे इस ज्ञान का कदापि विरोध न करें। ज्ञान का सदुपयोग हो। जिससे समाज में,राष्ट्र में से अज्ञन समाप्त हो जाए।

वस्तुतः नैतिक मूल्यों के द्वारा ही हम समाज में एकरूपता,एकरसता ला सकते हैं। कुछ मानवीय मूल्य ऐसे होते हैं जिनका कदापि विरोध नहीं किया जा सकता है। वे मानवीय गुण प्रेम, दया, सहानुभूति, त्याग, सेवा, सहिष्णुता, परस्पर सहयोग भावना, उत्तमोत्तम आचरण शिक्षा, विद्या, मनुर्भव, इत्यादि शुभ श्रेष्ट गुणों द्वारा ही मनुष्य का सुनिर्माण सम्भव है। तथा इसी के द्वारा समाज एवं राष्ट्र को भी मंगलमय बनाया जा सकता है। शिक्षा का वैदिक आदर्श क्या है? यदि इस बात को हम जान पाएँगें तो बहुत–सा वाद विवाद शान्त हो जायेगा। उपनिषत्कालीन महर्षियों ने शिक्षा कैसी होनी चाहिए। इस प्रश्न का समुचित उत्तर निम्न मंत्र में दिया है–

सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवाव है।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषाव है।''[4]

इस मंत्र को विद्याभ्यास के प्रारम्भ में दोनों गुरु शिष्य बोलते है। 'नौ' शब्द का अर्थ ही द्विवचन है अर्थात् गुरु और शिष्य। अधीतम् शब्द का अर्थ है विद्या स्वाध्याय जो कुछ हम पढ़ते या पढ़ाते हैं।

मन्त्र के अनुसार अध्ययन या अध्यापन का उद्देश्य गुरु और शिष्य के आत्मरक्षा करने में समर्थ होने चाहिए। भोजन के लिए पराश्रित न हो। समाज में वीरता के भाव की स्थापना करने वाले हो, उनका स्वाध्याय उन्हें तेजोहीन आत्मगौरवहीन न बनाए और वे दोनों परस्पर द्वेष या प्रतिद्वन्द्विता के शिकार न हों अर्थात् गुरु के अन्दर अपने शिष्य के प्रति वही भावना होनी चाहिए जो एक पिता में अपने पुत्र के लिए होती है। प्रत्येक पिता चाहता है कि रूप, गुण, शौर्य, विद्या आदि में मेरा पुत्र मुझसे बढ़कर निकले–इसीलिए शास्त्रकार कहते हैं–'**सर्वस्माज्जयमिच्छेत् पुत्रादिच्छेत् पराजयम्'**–अन्य सबसे विजय की कामना करे किन्तु पुत्र से पराजय की कामना करे। अपने पुत्र को गुणों में अपने से बढ़कर देखने की इच्छा जितनी स्वाभाविक है, उतनी ही सृष्टि के विकास के लिए आवश्यक भी। इसी प्रकार गुरु के मन में सदा यह भावना रहनी चाहिए कि मेरा शिष्य विद्यादि गुणों में मुझसे भी बढ़कर निकले, तभी समाज

को योग्यतर नागरिकों की उपलब्धि की परम्परा कायम रह सकती है। जो शिक्षा–छात्रों को आत्मरक्षा और शत्रुओं से देश रक्षा के योग्य बना सकें, जो शिक्षा छात्रों की रोजी–रोटी की समस्या हल न कर सके–उन्हें श्रम से जी चुराना सिखाए, जो शिक्षा विजिगीषु समाज का निर्माण न कर सके, जो शिक्षा छात्रों को तेजस्वी बनाने के बजाय उनका तेज छीनकर उन्हे अकाल–वृद्ध बनने के लिए छोड़ दे और जो शिक्षा सारे समाज को ऐक्यबद्ध करने के बजाय राग द्वेष में फँसाकर नाना वर्गों और नाना जातियों में बाँटकर विघटन की ओर प्रवृत्त करे, जो शिक्षा समाज को परस्पर जोड़ने के बजाय तोड़े, वह सही शिक्षा नहीं है।

इस प्रकार मंत्र के अनुसार शिक्षा के पाँच–उद्देश्य हमारे सामने आते हैं जिनमें से प्रथम है–**सहनाववतु** की व्याख्या में ब्रह्मचर्य समाविष्ट है क्योंकि बिना ब्रह्मचर्य के शरीर, मन, बुद्धि का समुचित विकास सम्भव नहीं और उनके विकास के बिना आत्मरक्षा कैसी सम्भव है ? **'सह नौ भुनक्तु'**–में आश्रम व्यवस्था का ही बोलबाला है–जहाँ जीवन की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नौकर–चाकरों का उपयोग न हो अपितु गुरु और शिष्य स्वयं मिलकर अपने श्रम से भोजनाच्छादन की जरूरतें पूरी कर लेते हों। **'सहवीर्यं करवावहै'** उस स्थिति का संकेत करता है, कि राष्ट्र में कोई नागरिक कायर और दुर्बल न हो। **'तेजस्विनावधीतमस्तु'**–इस बात को द्योतित करता है कि राष्ट्र के बच्चों को ऐसी पुस्तकें न पढ़ाई जाएँ जिनको पढ़ के बेटे अपने बड़ो का मान सम्मान करना ही भूल जाए। अपने पूर्वजों, अपनी संस्कृति, अपने धर्म और अपनी सभ्यता के प्रति हीन भावना पैदा करने वाली, शिक्षा प्रणाली जहाँ व्यक्ति और राष्ट्र को स्वाभिमान से वंचित करती है, वहाँ उनकी अस्मिता छीनकर जीवन में निराशा का संचार करती है।

'मा विद्विषावहै'–शिक्षा प्रणाली में आजकल विद्यमान प्रतियोगिता केवल द्वेष भावना को प्रोत्साहन देती है। पर वैदिक शिक्षा प्रणाली द्वेष भावना के स्थान पर पारस्परिक सहयोग को महत्त्व देती है। यह सहयोग केवल गुरु और शिष्य का ही नहीं शिष्यों के आपसी सहयोग का भी सूचक है। यही शिक्षा का वैदिक आदर्श है और होना चाहिए। इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रक्षा जाए तो शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के सम्बन्ध में दिशाहीनता की स्थिति समाप्त हो सकती है और राष्ट्र के उद्धार के साथ साथ विश्व मानव की एकता के स्वप्न के यथार्थ के धरातल पर उतारा जा सकता है।

शिक्षा का मुख्य तत्त्व है ज्ञान की प्राप्ति अथवा ज्ञान का संवर्द्धन हैं। उस प्राप्त ज्ञान के आधार पर उनका मानव जीवन के लिए उपयोग जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियता, की वृद्धि हो और अविद्यादि दोष दूर हो, उसकों शिक्षा कहते हैं। इस प्रकार शिक्षा की परिभाषा में विद्या (ज्ञान) की प्राप्ति और उनके आधार पर मानवीय गुणों–सभ्यता, धर्म शिष्टाचार का होना आवश्यक है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री **डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार–भारतसहित सारे संसार के कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा का सम्बन्ध नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति से न रहकर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है जिस शिक्षा में ह्रदय और आत्मा की अवहेलना है उसे पूर्ण नहीं माना जा सकता।**

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री **श्री अरविन्द के विचारानुसार**–ज्ञान, भक्ति और निष्काम कर्म आर्य शिक्षा के मूल तत्त्व हैं। हमारा उद्देश्य होना चाहिए ऐसी उपयुक्त शिक्षा देना जिससे भावी संतान ज्ञानी सत्यनिष्ठ और विनीत हो। ईश्वर के लिए मानवता के लिए देश के लिए, दूसरों के लिए और इन सब में अपने आपको जीवित रखने के लिए वैदिक मूल्यों विचारों को शिक्षा में अवश्य स्थान देना चाहिए। इसके लिए ऋषियों ने हमें सूक्ष्मातिसूक्ष्म सूत्र निर्देश किए हैं जों समस्त संसार के शिक्षा सूत्रों में प्रासंगिक हो सकते हैं। वैदिक मूल्यों विचरों एवं आदर्शों से सादगी एकरूपता, समरसता जीवन में आ सकती है। आज भी वे आदर्श सिद्धान्त हमारे सामने उपस्थित हैं। जिनकों बार बार आज के दीक्षान्त समारोहों में पढ़ा जाता है। वे उद्देश्य, लक्ष्य, तैत्तिरीय उपनिषद[5] में प्रतिपादित हैं– **ऋतं च स्वाध्याय प्रवचने च । तपश्च, दमश्च, शमश्च, अग्नयश्च, अग्निहोत्रं च, अतिथियश्च, मानुषं च, प्रजा च, प्रजनश्च प्रजातिश्च,** सबके साथ स्वाध्यायप्रवचनेच' लगा हुआ है।

अभिप्राय यह है कि 'ऋत' अर्थात् सृष्टि के नियमों को यानी विज्ञान को पढ़ो–पढ़ाओ। स्वाध्याय कहते हैं स्वयं पढ़ने को एवं प्रवचन कहते हैं दूसरों को पढ़ाने को। तप कहते हैं इन्द्रियों को वश में रखते हुए पढ़ो पढ़ाओं अग्नि शक्ति अर्थात् भौतिक विज्ञान एवं इंजीनियरिंग को पढ़ो–पढ़ाओ। अग्निहोत्र को करते हुए पढ़ो पढ़ाओ। अतिथि की सेवा करते हुए, मनुष्य मात्र के कल्याण पर विचार करते हुए प्रजा अर्थात् सर्वसाधारण के हित का ध्यान करते हुए, प्रजनन अर्थात् सन्तान वृद्धि की समस्याओं पर विचार करते हुए सत्य, तप पर विचार करते हुए पढ़ो और पढ़ाओं। स्वाध्याय से मस्तिष्क वृद्धि के साथ साथ आत्मिक उन्नति भी होती है। जैसा मन सोचता है, वैसा बोलता है, जैसा बोलता है वैसा करता है। जहां पठन पाठन क्रिया नहीं है वहां पैतृक अनुभव न प्राप्त होने से क्रमशः ज्ञानवृद्धि रुक जाती है। यही ऋषि ऋण है। जो तीन ऋणों में से एक हैं, जिसके पालनार्थ हम यज्ञोपवीत धारण करते हैं। अतः सब को स्वाध्याय अवश्व करना चाहिए। स्वाध्याय का अर्थ है नए नए ग्रन्थों को खोज खोज कर उन्हे पढ़ते रहना और अपने ज्ञान को बढ़ाते रहना। इसको वर्तमान में निरन्तर शिक्षा के नाम से जाना जाता है। स्वाध्याय का दूसरा अर्थ है 'स्व' का अपने आपका अध्ययन करना 'आत्मान विद्धि' आत्म अध्ययन द्वारा अपने जीवन का लेखा–जोखा करते रहना। इस प्रकार ऋत के साथ–साथ सत्य का पालन तथा प्रवचन करना भी अवश्यक है।

इसी प्रकार यम और नियम के द्वारा भी समानता व एकरूपता शिक्षा के अनवार्य अंग हैं। 'यम' से तात्पर्य है बाह्य विषयों की ओर से अपने आपको निवृत्त करना अर्थात् अपने आपको संयत या नियन्त्रित करना। सामाजिक व्यवहार में व्यक्ति के लिए निर्देशक सिद्धान्तो का पालन करना आवश्यक है। वे 'यम' के अन्तर्गत आते हैं–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रहा यमाः। इसी प्रकार नियम–शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान आदि के द्वारा व्यक्ति आत्म अनुशासित एवं संयमित जीवन व्यतीत कर सकता है। ये यम और नियम सार्वत्रिक, सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं सर्वदेशिक हैं। ये सब जगह लागू होते हैं। अतः ऋषि कहते है–'एताः जातिदेशकालसमयनवच्छिन्ना सार्वभौमा महाव्रतम्' कहकर संसार सुख और शान्ति को आसानी से प्राप्त कर सकता है। समस्त संसार के मानवों को सार्वभौम महाव्रत में दीक्षित किया जाना वैदिक विचारों के माध्यम से ही सम्भव है। महार्षि मनु के अनुसार–

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोध दशकं धर्मलक्षणम्।[6]

ये धर्म के दस लक्षण बताए हैं। ये लक्षण सर्वत्र लागू होते हैं। सम्भवतः इसीलिए ऋषियों एवं धर्मग्रन्थों ने दैशिक दृष्टि को तुच्छ समझते हुए मानवमात्र को भाईबन्धु के रूप में ही पहचाना है। ''माता भूमिः **पुत्रोऽहं पृथिव्याः, पृथिव्यै अकरं नमः, 'नमो मात्रे पृथिव्यै, आदि प्रथिवी सूक्त के वैदिक संदेश को एक सार्वभौम शाश्वत धर्म के रूप में संसार के सब संस्थाओं शिक्षालयों, धर्मस्थानों में गर्व से रख सकते हैं–** कोई भी मत मतान्तर इससे उच्च रूप में नेतृत्व न दे सकेगा। शब्द स्पष्ट है–**सतयम् बृहत् ऋतम् उग्रम् दीक्षा, तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवीं धारयन्ति।**

ऐसे अत्यन्त महत्त्व के सिद्धान्तों की पृष्ठभूमि में वैदिक आदर्शों और भावनाओं का उदात्त और उदार होना स्वाभाविक ही है यही कारण है कि वेद को हम विश्वबन्धुत्व,विश्वशान्ति,समष्टिभावना,भद्रभावना, आशावाद, निर्भयता, श्रद्धा सामंजस्य के महान् आदर्शों और उदात्त भावनाओं से ओतप्रोत पाते है। वेद में **'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वणि भूतानि समीक्षे, पुमान् पुमांसं परित्पातु विश्वतः**[7] जैसे विश्वबन्धुत्व और 'शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु' जैसे विश्वशान्ति के भाव भरे पड़े है।

समष्टि भावना–वैदिक प्रार्थनाओं की एक विशेषता यह है कि वे प्रायः बहुवचन में होती है। 'धियो यो नः प्रचोदयात्, 'यद् भद्रं तन्न आसुव'। 'अग्ने नय सुपथा' इत्यादि मंत्रों में बहुवचनों में ही प्रार्थनाएँ की गई हैं। किसी भी समाज की उन्नति तथा रक्षा के लिए यह समष्टि भावना कितनी आवश्यक है इसको

सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। वैदिक साहित्य आशावाद के ओजपूर्ण भावों से परिपूर्ण है। 'ओजोऽस्योजो मयिधेहि'। ' अदीना स्याम शरदः शतम्'। ' अस्माकं सन्त्वशिषः' जैसी प्रार्थनाएँ आशावाद की ही समुज्वल प्रतीक है।

इस प्रकार वैदिक परम्पराएँ शाश्वत हैं। हमें इन परम्पराओं को अपने जीवन में अवश्य स्थान प्रदान करना चाहिए। हमारी अपनी संस्कृति पर हमें स्वाभिमान होना चाहिए। यह वही संस्कृति है जो अनादि है–सा प्रथमा संस्कृति विश्ववाराः''। यह संस्कृति से सम्बन्धित कुछ शब्द 31 जनवरी 1951 को **सरदार पटेल ने कहा था। अहमदाबाद के विद्यार्थियों के समक्ष–हमें अपनी ही संस्कृति को अपनाना चाहिए। हाँ, अपनी ही सभ्यता को, हम अपने जीवन के लिए दूसरों की विचारधारा की भीख नहीं माँग सकते। हमारा जीवन विदेशियों की अपेक्षा सर्वथा भिन्न है।**

वेद में संस्कृति के लिए एक शब्द 'विश्ववारा' आता है। अर्थात् सबसे श्रेष्ठ सम्पूर्ण दोषो को हटाने वाली और सुन्दरता प्रतिपादित करने वाली, जिसके द्वारा कोई सुन्दर वस्तु बनायी जाए तो वह सुन्दर संस्कृति कहलाती है। संसार पर दृष्टि डालकर देखिए कि सामने रखे जो इस कसौटी पर पूरी उतर सके। भारत को अनेकों वर्षों तक इसी संस्कृति ने सुखी सुन्दर तथा शान्तिमय बनाए रखा और यदि संसार फिर सुखी होना चाहता है तो इसी संस्कृति को पूरे विश्व को स्वीकार करना होगा।

वैदिक संस्कृति जहाँ भौतिकता का मार्ग प्रशस्त करती है वहाँ आध्यात्मिक मार्ग पर भी चलती है। यदि कोई कहे कि भोगवाद और त्यागवाद साथ–साथ कैसे चल सकते हैं। इसके लिए वैदिक सन्देश समान है। जहाँ **'वयं स्याम पतयो रयीणाम्' का संदेश दिया गया है। वही तेन त्यक्तेन भुंजी था या 'न कर्म लिप्यते नरे'** जैसा पाठ भी उपदेश रूप में दिया गया है। यह है संस्कृति जिसका वेद आदेश देता है। यही संस्कृति मानवता लाने वाली है। आज संसार इसलिए दुःखी है कि मानव मानव नहीं बन रहा अपितु दानव बन गया है। इस मानवता की आधारशिला वेद ही है। इसलिए वेद का आदेश है मनुष्य मात्र को 'मनुर्भव' ये मनुष्य तू पहले मानव बन। दूसरे के सुख दुःख को अपना समझने का प्रयत्न कर। प्राणी मात्र को पीड़ा दुःख कष्ट मत पहुँचा। इसी मानवता का उपदेश वेद भगवान् द्वारा दिया गया है। हम उठे जागे, फिर से वैदिक संस्कृति को अपना कर सकल संसार को मानवता का पाठ पढ़ाए।

यदि हम अपने जीवन के आध्यात्मिक पार्श्व की उपेक्षा करेंगे तो अवश्य ही हम राक्षस (दानव) बन जाएँगे। **'साक्षरो विपरीततत्त्वे राक्षसो भवति ध्रुवम्'** वैदिक ऋषियों को ही इस बात का श्रेय है कि उन्होने जीवन के समस्त पार्श्वों का अध्ययन किया और एक समन्वय तक पहुँचे। ऋषियों का यह विश्वास था कि जगत् की अधिकांश समस्याओं का समाधान किया जा सकता है यदि जीवन की समीक्षा अनासक्त रूप में की जाए और तभी एक उचित समन्वय पर पहुँच सकते हैं। नाना रीतियों, परम्पराओं, नाना प्रभेदों के बावजूद भी इस वैदिक संस्कृति के अन्दर एक ऐसी अमर एकता है जो देश को शक्ति प्रदान करती है और उसे अक्षुण्ण रखती है। इसके लिए आधुनिक और प्राचीन दोनों का सम्मिश्रण अत्यन्त आवश्यक है। अतीत के अनुभवों से हम सीखते हैं, उज्जवल भविष्य के लिए योजना करते हैं पर जीना तो वर्तामान में ही है। कोई वस्तु इसलिए अच्छी नहीं कि पुरानी है और नया आविष्कार खोज होना कोई बुराई नहीं है। उभयविध का मूल्यांकन करके सार उपादेयता को ग्रहण करना चाहिए केवल मूर्ख लोग दूसरों के विश्वास पर चलते हैं। नया हो या पुराना, पूर्व हो या पश्चिम यह हमारी परम्परा है। इस परम्परा को हमें जीवित रखना है। महाकवि कालिदास कहते हैं–

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्त परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते,मूढ़ः पर प्रत्ययनेयबुद्धिः।[8]

आज भारतवर्ष की अधिकांश समस्याओं का मौलिक कारण राष्ट्रीय भावना का अभाव है। साम्प्रदायिक भावना, जातीय भेदभाव, जातीय संघर्ष, प्रान्तीय एवं क्षेत्रीय विद्वेष, भाषा सम्बन्धी विवाद इन सभी के मूल में राष्ट्रीय विद्वेष, भाषा सम्बन्धी विवाद इन सभी के मूल में राष्ट्रीय एकता समन्वय एवं

भावना का न होना है। समाज में व्याप्त साम्प्रदायिक जातीय संघर्षों असहिष्णुता स्वार्थपरता एवं कर्तव्य की उपेक्षा जैसी व्यापक कुरीतियों पर वैदिक भावनाओं के द्वारा ही विजय प्राप्त की जा सकती है।

शिक्षा मानव जीवन में एक सतत प्रक्रिया है। जीवन भर मनुष्य कुछ न कुछ सीखता रहता है इसलिए वह जीवन भर विद्यार्थी रहता है क्योंकि ज्ञान की पराकाष्ठा की कोई सीमा नहीं हैं। वह अगाध एवं विपुल है। **'अनन्तशास्त्रं बहुलाश्च विद्या'** कहा है। विद्यार्थियों को बाल्यकाल से ही उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण कर्म और स्वभावरूप आभूषणों को धारण कराना माता–पिता आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्तव्य है। इसलिए कहा गया है**–''मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषोवेद''** जब तीन उत्तम माता–पिता और आचार्य हो तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है।

ऋषियों ने कितनी अच्छी व्यवस्था बनाई थी जो सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र के लिए कल्याणकारिणी थी। बालक के जन्म लेते ही हम उसे संस्कारों के सांचे में डालने का प्रयत्न करते थे। माता पिता अपने पूर्ण कर्तव्य के साथ इनका पालन करे ताकि बालक का अच्छा निर्माण हो सके। जब बालक पढ़ने के लिए जाए तो उसका यज्ञोपवीत संस्कार किया जाना चाहिए। जब वह गुरुगृह से वापिस लौटकर विद्या समाप्त करके घर वापिस लौट आता था तब आचार्य उसे यही उपदेश करता था**–''यान्यस्मांक तुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि' यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि''** अर्थात् जो हमारे सुचरित हैं उन्हीं के अनुसार आचरण करना अन्यों का नहीं। जो हमारे द्वारा भूल चूक त्रुटियां अज्ञानवशात् कोई अनिंदनीय कर्म हो जाए तो उन्हे अपने जीवन में स्थान नहीं देना। जो प्रशंसनीय कार्य है उत्तम गुण कार्य स्वभाव हैं उन्हें ही अपनाना, अन्यों को नही। इस प्रकार से वैदिक वाङ्.मय में अनेक ग्रन्थों में शिक्षा विषयक वैदिक मूल्यों का भिन्न–भिन्न प्रकारों से गहन विश्लेषण अध्ययन किया गया है। जिन मूल्यों को आज भी हम शिक्षा–क्षेत्र में प्रासंगिक देखते है।

विद्यास्नातक बनकर शिष्य ''आचार्य कुल से जब स्वगृह वापिस लौट आते थे उस समय तीन समिधाओं से आहुतियाँ देते हुए ब्रह्मचारी कहा करते थे**–''यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभि ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे''**। ये वैदिक शिक्षा के सार्वभौम उद्देश्य थे। सबसे प्रथम श्रद्धा माता–पिता के प्रति, गुरुजनों के प्रति, ईश्वर के प्रति, अपने को अहंकार से बचाना, बुद्धि का विकास, बुरे भले का ज्ञान, विचारशक्ति, हृष्ट और पुष्ट संतान, उत्पन्न करना, धनोपार्जन की योग्यता प्राप्त करना, आयुष्मान होना, शरीर की रक्षा करना, बलवान होना और अमृतत्त्व प्राप्त करना ये शिक्षा के उद्देश्य थे। विद्या विवाद के लिए नहीं ज्ञान के लिए विज्ञान के विकास के लिए होनी चाहिए। धन विलास और व्यसन के लिए नहीं दान के लिए होना चाहिए। शक्ति औरों को कष्ट देने के लिए नही निर्बल की सहायता के लिए यह लक्ष्य होना चाहिए।

प्राचीन काल में भी समस्त ज्ञान विज्ञान छात्रों को पढ़ाया जाता था। यह बात **छान्दोग्य उपनिषद्** के सनत् कुमार एवं नारद के जिज्ञासा भाव से प्रकटित होती है। नारद मुनि आचार्य सनत् कुमार जी के पास पहुँचते हैं तथा उनसे ज्ञान प्राप्ति की चर्चा करते हैं। आचार्य नारदमुनि जी से पूछते हैं तुमने अब तक किन किन विषयों का अध्ययन किया है तब नारदजी उत्तर में कहते हैं–

ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि युजर्वेदं सामवेदमाथर्वणम् चतुर्थ–मितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यम् राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां, नक्षत्रविद्यां सर्पदेवजन विद्यामेतत् भगवोऽध्येमि।''[9]

नरदमुनि कहते हैं ऋग्वेद, युजर्वेद सामवेद, अथर्ववेद को पढ़ चुका हूँ। चौथे इतिहास पुराण को, पित्र्यम्–गृहविज्ञान को,निधिम्–अर्थशास्त्र को वाकोकाक्यम्–तर्कशास्त्र कानून विज्ञान को, एकायनम्–नीतिशास्त्र धर्मशास्त्र को देवविद्याम्–निरुक्तशास्त्र को ब्रह्मविद्या को भूतविद्याम्, प्राणीशास्त्र को क्षत्रविद्याम्–धनुर्वेद को, नक्षत्रविद्याम्, ज्योतिष शास्त्र को, सर्पदेवजनविद्याम्– सर्पचिकित्सा

देवजनविद्या—ललित कला इत्यादि विद्याओं को हे भगवन्! मैं पढ़ चुका हूँ। यह सब कुछ पढ़ कर मैं 'मंत्रवित्' बन गया हूँ, आत्मवित् नहीं हुआ। हे भगवन्! मैने सुना है तरति शोकम् आत्मवित् जो आत्मा को जान जाता है वह दुःख सागर से तैर जाता है। हे भगवन्! मैं शोक सागर में डूबा जा रहा हूँ आज मुझे इससे पार उतारिये। यह सुनकर सनत्कुमार ने नारद से कहा तूने अब तक जो सीखा है वह नाममात्र है। यह तो सीढ़ी मात्र हैं। तू नाम की उपासना कर शब्दज्ञान को जान जरूर। इस प्रकार नाम से आगे अन्य विस्तृत गहन विद्याओं का वर्णन आचार्य ने किया है। कहने का तात्पर्य सब कालों में सब विद्याओं का ज्ञान विज्ञान प्रचुर मात्रा में पढ़ाया पढ़ा जाता था और यह परम्परा आगे भी इसी रूप में अक्षुण्ण बनी रहेगी।

तैत्तिरीय उपनिष्द् का प्रारम्भ तो शिक्षाध्याय से ही हुआ है— **''शीक्षां व्याख्यास्यामः। वर्ण स्वरः। बलम् साम संतानः। इत्युक्तः शीक्षाध्यायः।''**[10] इन थोड़े से वाक्यों में ऋषियों ने कितनी ज्ञान विज्ञान की बातें कह दी हैं। आज भी हम बच्चों को सर्वप्रथम यही शब्दज्ञान वर्णज्ञान कराते हैं। कौन—सा वर्ण अक्षर कैसे बोला जाता है ह्रस्व दीर्घ प्लुत इस प्रकार मात्राओं के भदों को समझकर यथायोग्य उच्चारण करना चाहिए क्योंकि ह्रस्व के स्थान में दीर्घ, दीर्घ के स्थान में ह्रस्व उच्चारण करने में अर्थ का बहुत अन्तर हो जाता है। जैसे 'सिता' और 'सीता'। बल का अर्थ है प्रयत्न। वर्णों के उच्चारण में उनकी ध्वनि को व्यक्त करने में जो प्रयास करना पड़ता है, वही प्रयत्न कहलाता है। इसके बाद शब्द ज्ञान में 'साम' अर्थात् समता से उच्चारण करना आना चाहिए। वर्ण, स्वर, मात्रा, बल और साम के ज्ञान के अनन्तर शब्दों का सन्तान प्रारम्भ हो जाता है। शब्दों से वाक्य और वाक्यों से ग्रन्थ बन जाते हैं। इस प्रकार वर्णों से प्रारम्भ करके वर्णों की सन्तान तक पहुँच जाने में ही सब शिक्षा समा जाती है।

प्रश्न होता है विद्या का उद्गम स्थल, उत्पत्ति कहां से होती है इसके उत्तर में ऋषि कहते हैं— **''अथाधिविद्यम्। आचार्यः पूर्वरूपम्। अन्तेवास्यत्तररूपम्। विद्या सन्धिः। प्रवचनं सन्धानम्। इत्यधिविद्यम्''।**

कितने सुन्दर एवं मार्मिक शब्दों मे पैरा नया विद्या का सविशद वर्णन हुआ है। वस्तुतः आचार्य ही विद्या का उद्गम स्थल होता है उसी से विद्या निस्सृत होती है। विद्या का लक्ष्य भूत केन्द्र प्रधान होता है। अन्तेवासी इसलिए आचार्य पूर्व रूप है तो शिष्य अन्तेवासी उत्तर रूप है। इन दोनों का मेल किंव जोड़ने वाली विद्या होती है इसलिए ऋषि ने उसे सन्धि कहा है तथा इन दोनों से उत्पन्न ज्ञान विद्या की अभिव्यक्ति प्रवचन से होती है। अतः प्रवचन सन्धान है। विद्या के क्षेत्र में आचार्य शिष्य विद्या तथा प्रवचन मानो एक एक वर्ण है। जैसे भिन्न—भिन्न वर्णों की सन्धि से एक अभिन्न अक्षर उत्पन्न होता है। वैसे आचार्य, शिष्य, विद्या, प्रवचन की महासंधि से ब्रह्मज्ञान उत्पन्न होता है। परस्पर मिले हुए पदार्थों का विभाग के साथ अवयव सम्बन्ध का ज्ञान ही मुख्य ज्ञान है और उसी ज्ञान से संसार के परमार्थ सुख की सिद्धि होती है और यही ज्ञान शिक्षा का पूर्ण रूप है। इसलिए परस्पर का ज्ञान करना चाहिए। बालक को केन्द्रीभूत रखकर के अनेक योजनाओं का निर्माण करने में ऋषि मुनि लोग लगे रहते थे। प्रकृति के साथ सम्पर्क जिसका निर्देशन **''उपकहरे गिरीणाम् संगमे च नदीनाम्' धिया विप्रो अजायत''।**[11] ऋग्वेद के मंत्र द्वारा मिलती है। एकान्त स्थान सुरम्य वातारण मस्तिष्क को शुद्ध विचारों से अनुप्राणित कर सकते हैं। दूसरी तरफ कुल की भवना पर विशेष जोर दिया जाता था। पहले माता—पिता के कुल में फिर गुरु के कुल में फिर समाज के कुल में। मूल सिद्धान्त कुल का है। परिवार का है। तीसरी भावना सामाजिक पर्यावरण समानता की भावना जो वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था। सब लोग परस्पर उँच—नीच के भाव को छोड़कर गरीबी एवं अमीरी के भेदभाव को त्याग कर समानता को आधार बनाकर परस्पर गुरु शिष्य के तादात्य सम्बन्ध को प्रकट करता था जिसका निर्देशन अथर्ववेद के काण्ड में मिलता है—

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्ति उदरे विभर्त्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः।[12]

अर्थात् बालक को शिक्षा देने के लिए आचार्य उसे अपने गर्भ में सुरक्षित संभालकर रखता है जैसे माता अपने बच्चे को गर्भ में सुरक्षित रखती है। क्या गुरु शिष्य के निकटतम सम्बन्ध को समझाने के लिए माता तथा गर्भ के सम्बन्ध से अधिक सुन्दर उपमा क्या दी जा सकती है। मन्त्रस्थ कुछेक शब्दों पर विचार करना आवश्यक है। यहाँ गर्भ शब्द का अर्थ है **आकर्षण व प्रभाव से है।** आशय यह है आर्चाय या अध्यापक अपने विद्यादि गुणों से बालक को आकर्षित करने वाला हो। 'उदर' शब्द से आचार्य का आश्रय अर्थ करना ही समुचित है। विद्यालय ऐसे सुरक्षित सुप्रबन्ध में हो जिसमें रहते हुए बालक सांसारिक बुराई से बचकर पूर्ण विकास को प्राप्त कर सकें। जैसे माता के उदर में बालक विकसित होता है और बाहर के कष्टों से बचा रहता है। तद्वत् बालक भी अपने विकास करने में ही लगा रहे। बाह्य कुचेष्टाओं से बचता रहे। क्या आज भी यह आदर्श प्रासंगिक नहीं है। विद्या के साथ–साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है जिसका संकेत मंत्रस्थ 'उदर' शब्द से ज्ञात होता है। 'तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति' क्या तीन रातों में ही बालक को पूर्णतः विकसित किया जा सकता है। मंत्रस्थ रात्रि शब्द का अर्थ वह अंधकारमय रत्रि नहीं अपितु यौगिकार्थ द्वारा 'राति सुखं ददातीति या सा रात्रिः' रा दाने धातु से रात्रि शब्द बनाता है जो सुख देने वाली है इसे रात्रि कहते हैं। तीन रात्रियों से तात्पर्य है (1) ईश्वर जीव, प्रकृति संबन्धिनी तीन प्रकार की विद्याएँ ही वास्तविक तीन रात्रियाँ है जो कि यथार्थ में सुख दात्री हैं। चारों वेदों में ऋग यजु व साम भेदात्मक तीन ही प्रकार के मंत्र हैं। अतः यह त्रिविध मंत्र ही तीन रात्रियाँ है। चारों वेदों के मूल विषय ज्ञान, कर्म, उपासना को जानना ही योग्य है। तीन सवन प्रातः सायं मध्याह्व ही ब्रह्मचारी को शारीरिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास को प्राप्त कराते हैं। वसु रुद्र व आदित्य ये तीन उपाधियां ही तीन रात्रियाँ हैं। इस प्रकार के सर्व निष्णात बालक को देखने के लिए 'द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः' देवगण भी उसका समाज में आदर सत्कार करते थे।

इस प्रकार प्रस्तुत विवेचनीय मंत्र में शिक्षाा कैसी हो? और शिक्षार्थी छात्र गुरुकुल में कब तक पढ़ता रहे तथा आचार्य में किन–किन उत्तम गुणों का होना आवश्यक हैं आदि का विधान कहा गया है। सारांश यह है कि आचार्य सौम्य स्वभाव वाला कर्कश व कठोर न होकर मृदु स्वभाव वाला, विनीत, सुसभ्य, चरित्रवान एवं आकर्षक हो और अपने शिष्य के सर्वांगीण उन्नति करने में समर्थ हो। आज उपरोक्त मंत्र की कितनी अधिक प्रासंगिकता है हम स्वयं जान सकते हैं।

विद्यार्थी को भी आश्रमवास, उपनयन संस्कार, तथा ब्रह्मचर्यव्रत को धारण करना होता था। उसे श्रम ही श्रम करना होता था। आश्रम शब्द का अर्थ ही होता है चारों तरफ से विकास, मेहनत **''स आचार्य तपसा पिपर्त्ति''। ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत''** उसे तप करना आवश्यक था। सर्दी गर्मी धूप छाँव आदि द्वन्द्वों का सहन करना।

यह वैदिक शिक्षा प्रणाली की ही विशेषता थी। नवयुवकों को तपस्वी बनाना। तपस्या के बाद आश्रमवास उँच–नीच, अमीरी गरीबी के भेदभाव को मिटाना, न कोई गरीब न कोई अमीर। सब भेदभावों को भुलाकर एक समान स्थान में बैठकर विद्याऽर्जन् करना ही उनका ध्येय लक्ष्य था। दोनों गुरु शिष्य एक दूसरे के इतने निकट आ जाते थे कि वे एकमना हो जाते थे मम वाचमेकमना जुषस्व'। दोनों के चित्त और ह्रदय एक हो जाए। तभी तो बालक को अंतेवासी कहा गया है वह मानों गुरु का शिष्य ही नहीं अपितु उसके पुत्र के समान है। उसे ब्रह्मचर्य का व्रत धारण कराया जाता था ब्रह्म ज्ञान के साथ–साथ शारीरिक शक्ति का रक्षण करना। इस प्रकार शिक्षा का लक्ष्य बालक को पुस्तकीय शिक्षा के साथ–साथ उसे सदाचारी बनाना है। उस ब्रह्मचारी को जो कि गुरुकुल में प्रविष्ट हुआ है। पिता स्वयं उसे उपदेश देते थे–हे बालक! तू आज से ब्रह्मचारी है सदा कार्य में लगे रहना। आलसी व प्रमादी मत बनना। भाग्य को पछाड़कर पुरुषार्थ से जीना अपने जीवन का लक्ष्य सदा उँचा रखना, चरैवेति चलते रहो, चलते रहो को जीवन का अभिन्न अंग बना देना, दिन में न सोना, अपने आचार्य की आज्ञा का पालन करना, ज्ञान की प्राप्ति में अहर्निश लगे रहना, आचार्य की अच्छी बातों को मानना, बुरी बात को

नहीं, क्रोध न करना झूट मत बोलना, सत्यमेव जयते नानृतम् सत्य की ही वियज होती है, झूट की नही ब्रह्मचर्य का पालन करना, हर प्रकार के अति को छोड़ देना, बुद्धि को छीड़ करने वाली वस्तुओं का सेवन मत करना, आहार विहार संयमित विद्योपार्जन में सदा लगे रहना, सुशील बनना, सभ्यता सीखना इस का पवित्रतम व जीवनोपयोगी उपदेश स्यवं माता–पिता अपने बच्चों को दिया करते थे। इस सारगर्भित उपदेश की आज के विद्यालयों में आवश्यकता है। प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों को ऐसे ही गुणों से ओत–प्रोत देखना चाहते है।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन का सारभूत तत्त्व यही है कि उन प्राचीन नैतिक मूल्यों को आज के परिप्रेक्ष्य में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। आज के सभी शिक्षणालयों का एक ही प्रयोजन उद्देश्य है बालक का सर्वांगीण विकास। उसे एक समर्पित राष्ट्र भक्त बनाना। यदि आज के शिक्षाशास्त्री उन प्राचीन वैदिक मूल्यों की ओर ध्यान प्रदान कर उन सूत्रों को आज की शिक्षा प्रणाली में स्थान दे पाएँ तो अवश्य ही राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। गरीबी अमीरी, के भेदभाव को मिटाया जा सकता है। भाषावाद, प्रान्तवाद, जातिवाद उँचता नीचता की खाई को भरा जा सकता है।

इसमें कोई विवाद का विषय नहीं होना चाहिए कि आप क्या पढ़ा रहे है। सब प्रकार का ज्ञान विज्ञान बच्चों को अवश्य पढ़ाया जाए किन्तु इसके साथ–साथ मानवीय गुणों की अवहेलना नहीं की जानी चाहिए। बालक का सर्वांगीण विकास। सच्चे अर्थों में मानव बनने का संकल्प व्रत प्रतिज्ञा लेने वाले बनें। सरलता, समानता, सामीप्यता इत्यादि गुणों के समुचित विकास के साथ–साथ समाज में राष्ट्र में एक रूपता एवं समरसता का संचार अवश्य होगा। सबकी शिक्षा प्राप्ति का समान सुअवसर मिले। सब सब दिशाओं में सर्वांगीण विकास करें। सर्वे भवन्तु सुखिनः का मार्ग प्रशस्त होगा। इस सरकार राष्ट्र फिर से उस प्राचीन गौरवोक्ति को कह उठेगा।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची :–

1. आपस्तम्ब धर्म सूत्र 1.1.1.16–1।
2. बृहदारण्यकोपनिषद्।
3. अथर्ववेद।
4. बृहदारण्यकोपनिषद्।
5. तैत्तिरीय उपनिषद्।
6. मनुस्मृति।
7. ऋग्वेद 6.75.14 पृथ्वी सूक्त।
8. कालिदास कृत।
9. छान्दोग्य उपनिषद्।
10. तैत्तिरीय उपनिषद् शिक्षाध्याय।
11. ऋग्वेद 5.8.14।
12. अथर्ववेद 11.3।

संस्कृत-वाङ्मय में वर्ण-व्यवस्था की उपादेयता

डॉ. ब्रजेश कुमार शुक्ल*

प्रचीनकाल से ही भारतीय परम्परा ने व्यक्ति की कल्पना समाज के अंगभूत घटक के रूप में की है, इसीलिए वैदिक ऋषि हजारों मस्तकों, आखों एवं पैरों वाले विराट समाज पुरुष की कल्पना करते है–

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठत् दशांगुलम्।।[1]

समाज की शक्ति किसी एक विशिष्ट समूह मात्र में नहीं है, अपितु समाज के सभी अवयव मिलकर ही समाज को शक्तिमान बनाते हैं, इसी भाव को उन्होंने अपनी वाणी के द्वारा विश्व को बताने का प्रयास किया है। जिसमें ऋषि ने कहा है कि ब्रह्म कहे जाने वाले मन्त्रों के अनुशीलन में लगे रहने वाला समूह अथवा वर्ग समाज रूपी पुरुष के मुख अथवा मस्तक के समान, समाज के संरक्षण में संलग्न वर्ग भुजाओं के समान, धनार्जन के द्वारा पोषण और संवर्धन करने वाला वर्ग जंघाओं के समान तथा श्रम अथवा श्रमिक समूह समाज के आधार स्वरूप पैरों के समान था।[2] यह उपमा निश्चित ही इस भाव को आत्मसात करके की गई कि जिस प्रकार समाज के अंग–प्रत्यंग समभाव से शरीर की सर्वांगीण उन्नति के लिए प्रयत्नवान रहते है, उसी प्रकार वैदिक जन भी सम्पूर्ण समाज की उन्नति के लिए मिलकर कार्य करें।

मानव जीवन का अध्ययन करने पर ध्यान में आता है कि प्रत्येक मनुष्य के अन्दर कुछ विशेष गुण होते हैं, जिसके आधार पर उसके जीवन का विकास तथा विविध क्षेत्रों में प्रगति होती है। वैदिक मनीषियों ने इसे ही वर्ण की संज्ञा प्रदान की है। जिसका शाब्दिक अर्थ है– वरण करना अथवा चयन करना।[3] यह चयन गुणों या क्षमता के आधार पर स्वाभाविक ही है। भारतीय वैदिक परम्परा ने इस प्रकार के सम्पूर्ण मानवीय कर्मों को चार वर्गों में वर्गीकृत किया है, जो क्रमशः ज्ञान, प्रशासन, व्यापार तथा सामान्य मानवीय श्रम के रूप में जाने जाते हैं। इन चारो वर्गों से सम्बद्ध जनों को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इन चार संज्ञाओं द्वारा सम्बोधित किया गया है। यहां यह ध्यातव्य है कि सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय में कहीं भी इस व्यवस्था को जन्म पर आधारित नहीं कहा गया है, अपितु सर्वत्र गुणों और कर्मों को ही इसका आधार माना गया है। इसी विषय को गीता में इस प्रकार हा गया हैं–

चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः।
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप।।[4]

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्गों का वर्गीकरण मेरे (परमात्मा के) द्वारा गुणों तथा उन गुणों के कारण सम्पादित कर्मो के आधार पर किया गया है। यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मैंने जो यह ज्ञान तुमको बताया है, उसे मैंने सृष्टि के आदि में मनु से कहा था। इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि गुण–कर्म पर आधारित सामाजिक व्यवस्था स्थापित है।

वेदों में उल्लिखित इस सामाजिक व्यवस्था से सम्बद्ध, संस्कृत वाङ्मय के विविध विभागों में विद्यमान विचारों की विवेचना इस प्रकार है–

वैदिक वाङ्मय में समाज को एक दिव्य संस्था के रूप में वर्णित किया गया है, जिसका आधार स्वयं परमात्मा हैं।[5] जो विविध रूपों में अभिव्यक्त होकर हजारो मस्तकों, आंखों, हाथों तथा पैरों द्वारा विविध कर्मों का सम्पादन करते हैं। ऋग्वेद में वैदिक ऋषि समाज के स्वरूप का वर्णन करता हुआ

*** प्राच्य संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0।**

कहता है कि न कोई बड़ा है, न ही कोई छोटा, अतः मिलकर भ्रातृत्व भाव से एक–दूसरे के सौभाग्य की वृद्धि करो।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठासो एते सं भ्रातरो वावृधः सौभगाय।[6]

इसी प्रकार अथर्ववेद कहता है कि भाई–भाई से तथा बहन–बहन से द्वेष न करे। सब परस्पर मिलकर चलें तथा मधुर वाणी बोलें।

मा भ्राता भातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रयाः।।[7]

ऋग्वेद कहता है कि हम सभी साथ–साथ चलें, परस्पर वार्तालाप करें तथा एक–दूसरे के मनों को जानें अर्थात् भावनाओं को समझें तथा जिस प्रकार एक–दूसरे की उन्नति द्वारा देवों ने प्रगति की उसी प्रकार हम भी प्रगति करें।

सं गच्छध्वं सं वद्ध्वं सं मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथा पूर्वं सञ्जानाना उपासते।।[8]

वेदों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि अनेक वैदिक ऋषि तथा कथित ब्राह्मणेतर कुलों में उत्पन्न हैं जिसमें क्षत्रिय भी हैं और शूद्र भी। इस सन्दर्भ में अनेक उदाहरण प्राप्त होता हैं, जैसे–पुरूरवा[9] तथा पिजवन पुत्र सुदास[10] आदि क्षत्रिय हैं, वहीं भालनंदन वत्सप्रि[11] वैश्य परिवार के हैं। इसके अतिरिक्त अर्बुद पुत्र ऊर्द्धग्रावा,[12] कक्षीवान,[13] घोषा कक्षीवती,[14] शबर,[15] तथा कवष ऐलूष[16] आदि ऋषि तथा ऋषिकाएं शूद्र हैं।

ऋग्वेद की एक ऋचा में वैदिक ऋषि कहते हैं कि मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य हैं तथा मेरी माता अनाज पीसने वाली है। अलग–अलग कर्मों के द्वारा हम सभी धन की कामना करते हैं।''[17]

अनेक वैदिक संहिताएं कहती हैं कि व्यक्ति के माता–पिता के बारे में क्या पूछना ? उत्तर में कहती है कि वेद ही उसके माता–पिता है।[18] इसी को वृहदारण्यक उपनिषद् इस प्रकार कहता है कि आचरण ही व्यक्ति के कुलीन तथा अकुलीन होने का निर्धारण करता है।[19] छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित सत्यकाम जाबालि की कथा इसका ज्वलंत उदाहरण है जहां अज्ञातकुल वाला व्यक्ति भी सत्य भाषण के कारण ब्राह्मण माना गया है।

स्कन्दपुराण कहता है कि जन्म से सभी व्यक्ति शूद्र ही होते है तथा संस्कारो के द्वारा उनमें द्विजत्व का विकास होता है।

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते।

पद्म पुराण के अनुसार जिसका आचरण पवित्र होता है, वह आदरणीय होता है। कोई भले ही चाडांल कुल में उत्पन्न हुआ हो, किन्तु यदि वह तपस्वी स्वभाव वाला है, तो देवता भी उसे ब्राह्मण मानते है।

व्रतस्थमपि चाण्डालं देवाः ब्राह्मणं विदुः।[20]

भविष्यपुराण के अनुसार यदि शूद्र ज्ञानसम्पन्न है, तो वह ब्राह्मण से भी श्रेष्ठतर है और यदि ब्राह्मण आचरण–भ्रष्ट है, तो वह शूद्र से भी निम्नकोटि का है।[21] श्रीमद्भागवतपुराण के अनुसार सृष्टि के प्रारंभ में 'हंस' नामक एक ही वर्ण था।[22] किन्तु कालान्तर में उसके चार विभाग हुए, जिसका आधार गुण और कर्म है। श्रीमद्भागवतपुराण में वर्णित राजा शर्याति जन्मना क्षत्रिय थे, किन्तु वह यज्ञ में पुरोहित का कार्य सम्पन्न करते है।[23] इसी प्रकार गार्ग्य आदि ऋषि जन्मना क्षत्रिय थे, किन्तु कर्म से उन्होने ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया।

आपस्तम्ब धर्मसूत्र में धर्माचण द्वारा वर्णोत्कर्ष तथा अधर्माचरण द्वारा वर्णापकर्ष का वर्णन प्राप्त होता है–

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जाति परिवृतौ।
अधर्मचर्यया पूर्वो पूर्वो जघन्यं वर्णमापद्यते जाति परिवृतौ।।[24]

इसी प्रकार याज्ञवल्क्य स्मृति कहती है कि शील अर्थात् सदाचरण द्वारा वर्ण परिवर्तन सम्भव है–

शूद्रोऽपि शील सम्पन्नो गुणवान ब्राह्मणो भवेत्।
ब्राह्मणोऽपि क्रियाहीनः शूद्रात् प्रत्यवरो भवेत्।।[25]

यहां जानने योग्य यह है कि वर्ण–व्यवस्था में द्विजत्व का आधार वेदाध्ययन है मनुस्मृति के अनुसार वेदज्ञान रहित ब्राह्मण शूद्र है।[26] मनु स्वयं कहते हैं जो व्यक्ति वेदाध्ययन के अतिरिक्त अन्यत्र परिश्रम करता है, वह जीवित ही परिवार सहित शूद्र वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।[27] अन्यत्र कहते हैं कि वेदाध्ययन रूपी जन्म जब तक नहीं होता है, तब तक व्यक्ति शूद्र के समान है।[28] इसी क्रम में एक स्थान पर वह कहते हैं कि जो अन्यान्य वर्णो में दीक्षित हैं, किन्तु अपने कर्तव्यों का निर्वाहन नही करते हैं, वे शूद्र वर्ण में चले जाते हैं।[29] इसी प्रकार वर्ण परिवर्तन के बारे में मनु कहते हैं कि शूद्र ब्राह्मण हो सकता है तथा ब्राह्मण शूद्र हो सकता है–

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तुं विद्यात वैश्यात्तथैव च।।[30]

आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण महाकाव्य में वर्णित है कि राम शूद्र वर्ण की स्त्री शबरी के जूठे बेर खाते है तथा उसे माता की संज्ञा से सम्बोधित करते हैं। तुलसीकृत रामचरितमानस में इसी प्रकार हनुमान जी द्वारा सुरसा को माता की संज्ञा प्रदान की गई है। निषादों का राज्य तथा उसके राजा निषादराज गुह से राम द्वारा गले मिलना तथा उनके यहां अतिथि रूप में भोजन करना वर्ण–व्यवस्था के भव्य स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। इसी प्रकार वानरों के राजा सुग्रीव को मित्र का श्रेणी प्रदान करना तथा उनकी सहायता करना भी एक श्रेष्ठ उदाहरण है। यहां ध्यातव्य है कि ये दोनों ही द्विज कही जाने वाली जातियों से अलग वर्णों से हैं। यह भी एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि दोनों के ही अपने स्वायत्त राज्य भी हैं, जो सम्प्रभु हैं तथा सभी प्रकार के संसाधनों से सम्पन्न हैं। सुग्रीव के सहयोगी तथा वानर जाति के सदस्य हनुमान स्वयं वाल्मीकि के शब्दों में व्याकरण शास्त्र के महान ज्ञाता हैं। राम, ब्राह्मण पिता द्वारा उत्पन्न आसुरी प्रवृत्ति वाले तथा चरों वेदों के ज्ञाता रावण का दुराचरण के कारण वध करते हैं।

इसी प्रकार धीवर की पालिता पुत्री सत्यवती से उत्पन्न महर्षि व्यास द्वारा रचित महाभारत नामक महाकाव्य में भी अनेक श्रेष्ठ उदाहरण प्राप्त होते हैं। महाभारत में वर्णन प्राप्त होता है कि ब्रह्मा ने सभी मनुष्यों को समानभाव से उत्पन्न किया, परन्तु अपने–अपने स्वभाव तथा कर्मों के अनुसार सब अलग–अलग वर्णों में विभक्त हो गये।

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्रह्ममयं जगत्।
ब्रह्मणा पूर्वसृष्टं हि कर्मभिः वर्णतां गतम्।।[31]

यहां भी कर्मों में वैविध्य को ही विविध वर्णों का आधार बताया गया है।इस सन्दर्भ में व्यास जी कहते हैं कि मनुष्य के कुल और जाति के कारण वह ब्राह्मण नही होता है, अपितु संयम के कारण ही वह ब्राह्मण होता है।[32] महाभारत वनपर्व में वर्णित है कि जिस शूद्र वर्ण के व्यक्ति में भी दम, सत्य और धर्माचरण की प्रवृत्ति है, वह ब्राह्मण है और जिस ब्राह्मण में ये गुण नही है, वह शूद्र है।[33]

अन्य परवर्ती काव्यों में महाकवि के रूप में विख्यात कालिदास के बारे में यह किंवदन्ती कि वह जिस डाली पर बैठे थे, उसी को काट रहे थे, वर्णोत्कर्ष की कर्माधारित अवधारणा को पुष्ट करती है। इस सन्दर्भ में महर्षि वाल्मीकि का जीवन स्वयं उदाहरण है, जो पूर्व में चोरी–डकैती का कार्य करते थे। जगत् विख्यात है। कृत्यकल्पतरू के रचनाकार आचार्य लक्ष्मीधर कहते है कि पतित द्विज की अपेक्षा

विशुद्ध मन तथा मस्तिष्क वाला शूद्र श्रेष्ट है।[34] इसी प्रकार चित्त–विनोदनी नामक ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने तप को ब्राह्मणत्व का कारण माना है, जिसका वर्णन इस प्रकार है–

वेश्यागर्भ समुत्पन्नो वशिष्ठश्च महामुनिः।दासीगर्भ उत्पन्नो नारदश्च महामुनिः।
कैवर्तीगर्भ समुत्पन्नो व्यासश्च महामुनिः।क्षत्रियागर्भ समुत्पन्नो विश्वामित्रों महामुनिः।
श्रृंगीगर्भ समुत्पन्नो ऋष्यश्रृगो महामुनिः।कुम्भागर्भ समुत्पन्नो अगसत्यश्च महामुनिः।
शूद्रीगर्भ समुत्पन्नो कुशकश्चय महामुनिः। तपस्याद् ब्राह्मणो भूयात् तस्माज्जातिर्निकारणम्।[35]

स्वयं व्यास के पिता पाराशर ऋषि की माता चांडाल की पुत्री थी। यहां यह भी वर्णित है कि वर्ण और जाति दो अलग संकल्पनाएं है। इस सन्दर्भ में विभिन्न दर्शनों के प्रणेता आचार्यों के वचन दर्शनीय हैं। सांख्य दर्शन के प्रणेता आचार्य कहते हैं कि– **मानुष्यश्चैक जातिः।**[36]

अर्थात् सभी मनुष्यों का एक ही प्रकार या जाति है न्याय दर्शन के प्रर्वतक गौमत के अनुसार जिनके जन्म लेने की विधि एक जैसी है, वे एक जाति के है– **समान प्रसवात्मिका जातिः।**[37] इस क्रम में दूसरी परिभाषा है कि समान आकृति वाले प्राणियों की एक जाति है। **समान आकृति जातिः।**[38]

इस परिभाषा से मनुष्य तथा पशु आदि जीवों की अलग जातियों का बोध होता है। विशिष्टाद्वैत दर्शन के प्रणेता आचार्य रामानुज स्वयं कहते हैं कि मनुष्य के कल्याण का हेतु उसके गुण हैं, न कि जाति।

न जातिः कारणं लोके गुणाः कल्याण हेतवः।

इस प्रकार हमें प्राप्त होता है कि भारतीय चिन्तन में विकसित वर्ण की अवधारणा गुण तथा कर्म पर आधारित है तथा जाति की अवधारणा जन्म तथा आकृति पर। जाति की दृष्टि से सम्पूर्ण मानव समुदाय एक ही जाति का है, जिसका कर्मों के आधार पर चार प्रकार नैसर्गिक हुआ है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची :–

1. ऋग्वेद–10/90/1
2. ऋग्वेद–10/90/12
3. निरूक्त–2.1.6
4. गीता–18/41
5. ऋग्वेद–10/90
6. ऋग्वेद–5.60.5
7. अथर्ववेद–3.30.3
8. ऋग्वेद–10/191
9. ऋग्वेद–10/95
10. ऋग्वेद–10/133
11. ऋग्वेद–10/46
12. ऋग्वेद–10/175
13. ऋग्वेद–1/116
14. ऋग्वेद–10/39
15. ऋग्वेद–10/169
16. ऋग्वेद–10/30
17. ऋग्वेद–9.112.3
18. मैत्रयणी संहिता–48.1
19. वृहदारण्यकोपनिष्द्–1.4.11–15
20. पद्म पुराण–11.203
21. भविष्यपुराण–44.33
22. श्रीमद्भागवतपुराण–11.17.10–12
23. श्रीमद्भागवतपुराण–9.3.1
24. आपस्तम्ब धर्मसूत्र–2.5.10–11
25. याज्ञवल्य स्मृति
26. मनुस्मृति–2.168
27. मनुस्मृति–2.168
28. मनुस्मृति–2.171
29. मनुस्मृति–4.244–245
30. मनुस्मृति–10.65
31. महाभारत शन्तिपर्व–188.10
32. अनुशासन पर्व–143.51
33. वनपर्व–216.14
34. कृत्यकल्पतरू, गृहस्थ–पृ.–336–427
35. चित्तविनोदिनी
36. सांख्य दर्शन सूत्र–5.7
37. सांख्य दर्शन सूत्र
38. न्याय दर्शन

😊★😊

आधुनिक भारत का धर्म-सुधार-आन्दोलन और नारी-चिंतन

आकांक्षा अग्निहोत्री*

19वीं शताब्दी के शुरुआत से ही भारतीय समाज में पुनर्जागरण की एक रूपरेखा तैयार होती है, जिसके अन्तर्गत भारतीय समाज में एक तरफ पुरानी रूढ़ियों, विकृतियों, अंधविश्वासों से मुक्ति की छटपटाहट है तो दूसरी ओर विदेशी पराधीनता। इस तरह भारतीय समाज में पुनर्जागरण की शुरुआत वैश्विक वैचारिक तर्ज पर होती है। ईसाई मिशनरियों ने जब भारत में अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करना प्रारम्भ किया तब प्रबुद्ध भारतीय चिंतक स्वत्व धर्म की चेतना के लिए, अपने धर्म के अभ्युत्थान हेतु आगे आये। परिणामतः ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज आदि धार्मिक आन्दोलनों के नाम सामने आये। इन आन्दोलनों की शुरूआत का मुख्य कारण ईसाई मिशनरियों द्वारा भारतीय समाज एवं उसके धर्मों की निर्भयपूर्वक निंदा करना था। अतः यहाँ के प्रबुद्ध चिन्तकों ने अपने धर्मों में व्याप्त कुरीतियों एवं कुप्रथाओं का खुलकर विरोध किया। यह भी सच है कि इन"समाज एवं धर्मसुधार आन्दोलनों (ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, राधाकृष्ण मिशन, थियोसाफिकल सोसाइटी आदि) ने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने और परिवर्तन लाने में काफी सीमा तक सफलता प्राप्त की।"[1] यह कहने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी कि जिस तरह यूरोप में पहले पुनर्जागरण और फिर धर्म सुधार के आन्दोलन हुए हैं, उसी तरह भारत में भी पहले पुनर्जागरण का दौर चला और फिर धर्म सुधार आन्दोलन का एक लम्बा सफर तय हुआ।

भारत में पहला धर्म–सुधार आन्दोलन ब्रह्मसमाज (1828 ई0) के द्वारा हुआ, जिसकी स्थापना राजा राम मोहन राय ने की थी। बाद में देवेन्द्रनाथ टैगोर और केशवचन्द्र सेन ने इसको विस्तार दिया। इस समाज के संस्थापक ने "1818 ई0 में सती–प्रथा के विरूद्ध लिखना आरम्भ किया और 1829 में लार्ड विलियम बैंटिक ने इस प्रथा को अवैध घोषित किया।"[2] यह स्त्री–जीवन को लेकर किया गया पहला सफल आन्दोलन था। सबसे पहले यह आंदोलन बंगाल में और फिर मुंबई में भी लागू किया जाता है। राजा राममोहन राय केवल सती प्रथा का ही विरोध नहीं करते, बल्कि वह बहु–पत्नी प्रथा के भी खिलाफ थे। लेकिन कुछ विशेष परिस्थिति में, जैसे स्त्री के बाँझ होने पर अथवा गंभीर रोग से पीड़ित होने पर ही दूसरे विवाह के पक्षपाती थे। उन्होंने दो लेख भी इस विषय पर लिखे हैं, पहला On Modern Encroachment on the Ancient Right of Females (1822) दूसरा On the Right of Hindus over Ancestral Property (1838)। डॉ अवस्थी लिखते हैं कि "उन्होंने (राजाराम मोहन राय) नारी स्वातन्त्र्य ; नारी अधिकार और नारी शिक्षा पर बल दिया तथा हिन्दू नारी के साथ किए जाने वाले अन्याय और अत्याचार की कटु निंदा की।"[3] राजा राममोहन राय ने स्वयं कहा भी है कि "कट्टर हिन्दुओं को चाहिए कि वे शैव–विवाहों को भी वही मान्यता दें जो वैदिक विवाहों को प्राप्त है। अगर उनकी सलाह मानी जाती तो विधवा विवाह, अन्तरजातीय विवाह, यौवनारम्भ के उपरान्त विवाह आदि सभी हिन्दू समाज में मान्य होते।"[4] डॉ. वी. एन. सिंह लिखते हैं कि "राजा जी का सर्वप्रथम ध्यान स्त्रियों के उत्थान की ओर गया....सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह–निषेध, बहुपत्नी विवाह आदि इसके उदाहरण है। वे स्त्रियों के क्षेत्र में नई जागृति उत्पन्न करना चाहते थे। वे उन्हें उन भारतीय कुप्रथाओं से सचेत करना चाहते थे, जो धर्म के नाम पर करवाई जाती थी। सन् 1822 में उन्होंने एक ग्रन्थ प्रकाशित किया, जिसमें स्त्रियों के अधिकार की विवेचना की। इसी में उनकी दुर्दशा, उनके हितों की रक्षा, उनके अधिकारों की मर्यादा के पुनः स्थापित करने के लिए प्रयत्न किया गया।"[5]

***341 / 2 ए, बौद्ध नगर, नौबस्ता–कानपुर–208021।**

स्त्री–जीवन से सम्बन्धित ब्रह्म–समाज के दो मुख्य उद्देश्य थे, पहला ''सामाजिक कुरीतियों को दूर करना, जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, बहु–विवाह आदि दूसरा स्त्री समाज में शिक्षा का प्रचार कर उसमें जागृति उत्पन्न करना, जिससे वे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सके।''[6] केशवचन्द्र ने भी आगे चलकर स्त्री–सुधार एवं स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। डॉ0 अवस्थी ने ठीक ही लिखा है कि ''इसने (ब्रह्म समाज) बाल विवाह का विरोध किया और विधवा विवाह का समर्थन। कन्या तथा वर–विक्रय, कन्या वध, सती प्रथा आदि सामाजिक दोषों के विरूद्ध ब्रह्म समाज ने प्रबल आन्दोलन खड़ा कर दिया।''[7] डॉ0 शैलेन्द्र प्रसाद पांथरी भी लिखते हैं कि ''स्त्री–शिक्षा की प्रगति, विधवा पुनर्विवाह आदि के समर्थन में ब्रह्म समाज के निर्देश एवं उदाहरणों ने हिन्दू समाज के सुधारों में सहायता पहुँचाई।''[8] स्त्री सम्बन्धी सुधारों में राजा राममोहन राय सती प्रथा को समाप्त करने के लिए विशेष रूप से जाने जाते है। राधा कुमार भी लिखती हैं कि ''राय पहले भारतीय थे जिन्होंने सती प्रथा के विरूद्ध आन्दोलन चलाया।''[9] आगे यह भी वह लिखती है कि ''1817 में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य पंडित मृत्युंजय विद्यालंकार ने घोषणा की कि सती की कोई शास्त्रीय मान्यता नहीं है। इसके एक वर्ष बाद यानी 1818 में बंगाल के तत्कालीन प्रान्तीय गवर्नर विलियम बैंटिग ने प्रान्त में सती प्रथा पर रोक लगा दी। सारे भारत में इस निषेध को फैलाने में 11 वर्ष लगे। विलियम बैटिंक 1829 में जब भारत के गवर्नर जनरल बने तो उन्होंने सती निर्मूलन एक्ट पास किया।''[10] गर्वनर जनरल ने इस प्रथा पर विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि– ''हमारा दृढ़ एवं स्पष्ट मत है कि सती प्रथा पर दूसरी तरह रोक लगा दी जानी चाहिए ताकि कानून का नैतिक स्वरूप भी कायम रहे और उसे लागू करने की हमारी शक्ति भी।''[11] राजाराम मोहन राय के बाद केशवचन्द्र सेन ने स्त्री–उत्थान के लिए बहुत से प्रयास किए। इनके द्वारा चलाई जा रही कन्या पाठशालाओं में लड़कियों को खाना पकाने, सिलाई–कढ़ाई तथा सेवा–शुश्रूषा आदि की शिक्षा दी जाती थी तथा इन कार्यो में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए लड़कियों के प्रोत्साहन हेतु पुरस्कार भी प्रदान किए जाते थे। इस तरह उनमें आत्मविश्वास जगाने/भरने के लिए अखिल प्रयास होने लगे थे। इसी समय बंगालियों एवं राजपूतों में शिशु–कन्या–वध की प्रथा प्रचलित थी। आर्थिक कारणों से या अन्य कारणों से बचपन में ही उनकी हत्या कर दी जाती थी। 1795 में 21वें अधिनियम तथा 1804 में तीसरे अधिनियम के अनुसार शिशु हत्या मानव हत्या के अपराध के बराबर घोषित कर दिया गया। 1870 में इस प्रथा को रोकने के लिए और भी तमाम कानून एवं नियमावली बनाई गई।

1850 में ईश्वरचन्द विद्यासागर ने बड़े स्तर पर विधवा–पुनर्विवाह पर लगे प्रतिबंध की जबरदस्त वकालत की और उन्होंने बांग्ला में एक पुस्तिका प्रकाशित किया कि जिसमें कहा गया था कि *विधवा पुनर्विवाह शास्त्रसम्मत है*। विद्यासागर इस विषय पर हिन्दू पंडितों के साथ संस्कृत में शास्त्रार्थ भी करते थे, इस बहस से अभियान के नेताओं की प्रशस्ति एवं विरोध में गीत भी गाये गये। राधा कुमार लिखती हैं कि ''प्रशंसा के कुछ गीतों का उल्लेख करते हुए सुमन्त बनर्जी ने टिप्पणी की कि इनमें से अधिसंख्य विधवा की आवाज में थे तथा यह बताने की कोशिश करते हैं कि विधवाएँ अपने वैधव्य से निकलकर पुनर्विवाह के लिए तैयार थी और उनकी खुशी का इजहार इन गीतों में किया गया।''[12] इसके पश्चात् ''विद्यासागर ने अपने पुस्तिका का अंग्रेजी में अनुवाद किया और उसकी प्रतियाँ अंग्रेज अधिकारियों को दी। उनकी सलाह पर विद्यालंकार ने 1855 में भारत के गवर्नर जनरल को विधवा पुनर्विवाह के लिए कानून बनाने के लिए एक याचिका दी।''[13] परिणामस्वरूप 1856 में यह कानून पारित कर दिया गया, लेकिन पुनर्विवाह बहुत कम हुए। राधा कुमार स्पष्ट रूप से लिखती हैं कि– ''1890 के दशक में यह तथ्य सामने आया कि विधवा पुनर्विवाह कानून बनने के बाद विगत 40 वर्षों में कुल पाँच सौ विधवा पुनर्विवाह हुए।... पाँच सौ विधवा पुनर्विवाह भी बाल–विधवाओं या कह लीजिए, कुँवारी विधवाओं के थे। ऊँची जातियों की वे विधवाएँ जो कुँवारी नहीं थी, उन्होंने न तो पुनर्विवाह किया और न ही उनका पुनर्विवाह हो सका।''[14] 1893 में प्रो. कर्वे ने स्वयं विधुर होने पर एक विधवा से पुनर्विवाह किया और 1899 में पूना विधवा आश्रम की स्थापना की, साथ ही 1916 में मुंबई में भारतीय महिला विश्वविद्यालय की

स्थापना भी की। कर्वे के ही प्रयासों से कानूनी रूप से विधवा पुनर्विवाह की मान्यता 7 दिसंबर 1856 में कोलकाता में हो गई।

दूसरा धर्म–सुधार आन्दोलन प्रार्थना–समाज का था। इसकी स्थापना केशवचन्द्रसेन की प्रेरणा से महादेव गोविन्द रानाडे, डॉ0 आत्माराम पाण्डुरंग, नारायण चन्द्रावरकर आदि ने मुम्बई (महाराष्ट्र) में किया। यह धर्म सुधार आन्दोलन ब्रह्म–समाज से प्रभावित था। ठीक ही लिखा गया है कि ''जिस तरह बंगाल में ब्रह्म समाज सामाजिक, धार्मिक सुधार के लिए प्रसिद्ध था, उसी तरह महाराष्ट्र में प्रार्थना–समाज प्रसिद्ध था।''[15] प्रार्थना समाज ने स्त्री जीवन को लेकर निम्न उद्देश्य बनाये थे–

1. बाल विवाह पर प्रतिबन्ध लगाना।
2. स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करना।
3. विधवा पुनर्विवाह का समर्थन तथा उसके लिए संघर्ष करना।
4. सामाजिक समस्याओं का व्यवस्थित रूप से समाधान करना, अनाथाश्रम तथा विधवा आश्रम की स्थापना करना आदि।
5. स्त्रियों के सामाजिक अधिकारों को दिलाना।
6. अन्तरजातीय विवाह सम्बन्धी सुधारों के लिए हिन्दू समाज को पुनः शक्तिशाली बनाना।''[16]

इसी बीच सन् 1873 में फूले ने सत्य–शोधक–समाज की स्थापना पहले पूना तथा बाद में बम्बई में की। ''यह संगठन अन्य गतिविधियों के साथ–साथ विधवा पुनर्विवाह तथा अन्तर्जातीय विवाह कराने में भी व्यस्त था।''[17]

तीसरे धर्म–सुधार आन्दोलन के रूप में आर्य–समाज (1875 ई0) का महत्वपूर्ण योगदान है। इसके संस्थापक Back to the Vedas की उद्घोषणा करने वाले दयानंद सरस्वती है। इन्होंने वैदिक शिक्षा को केवल पुरुषों के लिए ही नहीं बल्कि स्त्रियों के लिए भी अनिवार्य बताया। इनका मानना था कि स्त्रियाँ आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करती थी। (जैसे सुलमा) और स्त्रियों के भी उपनयन और गुरुगृह में वास आदि के संस्कार होते थे। इसी वैदिक शिक्षा के आधार पर ''आर्य समाज ने स्त्रियों को समानाधिकार दिलाने के लिए आन्दोलन प्रारम्भ किया।''[18] उन्होंने स्त्री के विवाह की न्यूनतम आयु 16 वर्ष निर्धारित की तथा विवाह के विषय में बतलाया कि स्त्री–पुरुष का विवाह एक से अधिक हो सकता है किन्तु एक पति अथवा पत्नी के रहते हुए नहीं। राधा कुमार लिखती हैं कि ''दयानंद सरस्वती के अनुसार आर्य भारत में बहुपत्नीत्व, बाल–विवाह तथा स्त्री बहिष्कार जैसी कोई प्रथा विद्यमान नहीं थी। इसके विपरीत उनका मत था कि स्त्री तथा पुरुष दोनों को समान अधिकार प्राप्त हैं।''[19]

चतुर्थ धर्म–सुधार आन्दोलन विवेकानंद ने चलाया। उन्होंने रामकृष्ण मिशन (1896–97) की स्थापना की। वह भारतीय संस्कृति की आदर्श स्त्रियों के आदर्श, मर्यादा एवं त्याग वाले जीवन को अधिक महत्व देते थे और वह मनु के सिद्धान्त, जिस देश में स्त्रियों का सम्मान होता है, वह देश उन्नति करता है, के आधार पर विचार व्यक्त करते है कि अमेरिका के पुरुष–स्त्रियों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे; इसीलिए वह देश उन्नतिशील, विद्वान, स्वतंत्र और बलवान राष्ट्र हो सका है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए वह न्यूयार्क में भाषण देते हुए कहते हैं कि ''मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी यदि भारतीय स्त्रियों की ऐसी बौद्धिक प्रगति हो, जैसी इस देश में हुई है।''[20] स्त्रियों की शिक्षा पर विचार व्यक्त करते हुए वह कहते हैं कि ''हम चाहते है कि भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाय, जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्त्तव्य को भलीभांति निभा सके और संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीराबाई आदि भारत की महान देवियों द्वारा चलाई गयी परम्परा को आगे बढ़ा सके एवं वीर प्रसू बन सके।''[21]

विवेकानंद बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं के घोर विरोधी थे, वे कहते हैं कि ''जिस प्रथा के अनुसार अबोध बालिकाओं का पानिग्रहण होता है, उनके साथ मैं किसी भी प्रकार के सम्बन्ध रखने में असमर्थ हूँ...बाल विवाह से असामयिक सन्तानोत्पत्ति होती है, और अल्पायु में संतान धारण करने के कारण हमारी स्त्रियाँ अल्पायु होती हैं।... आज घर–घर इतनी विधवाएं पाये जाने का मूल कारण बाल विवाह ही है, यदि बाल विवाहों की संख्या घट जाय तो विधवाओं की संख्या स्वयंमेव घट जायेगी।''[22] बी. एन. सिंह ने ठीक ही लिखा है कि ''स्वामी विवेकानंद जी महिला जगत की समस्याओं से अनजान नहीं हैं। वे सबको शिक्षित कर प्रगतिशील बनाने के पक्ष में है किन्तु उनकी यह प्रगतिशीलता बहुत कुछ धार्मिक सीमाओं के अन्दर बंधी हुई है। इस धार्मिक दृष्टिकोण के होते हुए भी वे महिलाओं को अंधविश्वासी नहीं बनाना चाहते हैं बल्कि उन्हें इस योग्य बनाना चाहते है कि वे अपनी समस्याओं का निराकरण स्वयं कर सके।''[23] वह अपने भाषण में एक जगह कहते भी हैं कि ''अपनी महिलाओं को शिक्षित बनाने के लिए मैंने विधवा संगठन का एक केन्द्र रखा है।''[24] इसी दिशा में 1930 में हरविलास शारदा के प्रयासों से **शारदा एक्ट** पास हुआ, जिसमें लड़की की उम्र 14 वर्ष और लड़के की उम्र 18 वर्ष निर्धारित की गयी।

थियोसाफिकल सोसाइटी का मानना है कि– ''आत्मा में स्त्री–पुरुष का भेद नहीं है, अतः स्त्री–पुरुष समान है।''[25] एनी बेसेन्ट की मान्यता थी कि–''नारी को अपना पुराना गौरव दिए बिना, उसके अधिकारों की समुचित रक्षा किए बिना भारत वास्तविक अर्थों में कभी स्वतंत्र नही ंहो सकता।''[26] इन्होंने घोषणा की थी कि– ''स्त्रियों के इन अधिकारों (स्वतंत्रता, सम्पत्ति, सुरक्षा तथा अन्याय–विरोध) को नकारने का अर्थ मानवता को नकारना है। यदि स्त्रियों के अधिकारों को नकारा जाता है तो स्त्रियों के अधिकारों की बात करना बेमानी है या तो सभी मनुष्य के अधिकार समान हो या फिर किसी को कोई अधिकार न हो।''[27] श्रीमती बेसेन्ट ने *'वीमेन्स इण्डियन एसोसिएशन'* की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया और फिर वह ही उसकी सर्वप्रथम प्रेरक–शक्ति बनी। डॉ0 अवस्थी ने लिखा है कि– ''एनी बेसेन्ट ने भारतीय नारियों में इतनी जागृति फैला दी कि होमरूल आन्दोलन के सिलसिले में जब उन्हें गिरफ्तार किया गया तो 1917 में प्रथम बार देश की स्त्रियों ने खुला प्रदर्शन किया और सरकारी दमन नीति का विरोध करने घर से बाहर निकली। वास्तव में एनी बेसेन्ट ने भारतीय नारियों में यह फिजा पैदा कर दी कि वे पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश की स्वतंत्रता के लिए बल देने को आगे बढ़े।''[28] इसी दिशा में 1905 में गोपालकृष्ण गोखले एवं एम. जी. रानाडे **दि सर्वेंट ऑफ़ इंडिया सोसाइटी** की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य देश–सेवा थी। 1915 में गोखले की मृत्यु के पश्चात श्रीनिवास शास्त्री ने इसका अध्यक्ष पद संभाला और फिर इस संस्था ने कई स्थानों पर बालिकाओं के लिए स्कूल खोले।

हिन्दू–सुधार आन्दोलन की तरह मुस्लिम सुधार आन्दोलन, सिक्ख आन्दोलन एवं पारसी सुधार आन्दोलन भी हुआ। रामधारी सिंह दिनकर उस समय के समाज सुधारकों का महत्व आज के सन्दर्भ में बताते हुए कहते हैं कि ''उस समय के सुधारकों का चाहे जो भी विरोध किया हो किन्तु आज तो ऐसा लगता है कि हिन्दू समाज ने रानाडे और आग्रकर, राजा राममोहन राय और केशवचन्द्र सेन तथा दयानंद और विवेकानंद के एक–एक उद्देश्य को अपने हृदय में बिठा लिया है और उसमें से प्रत्येक का हम यथाशक्ति आचरण भी करते जा रहें हैं।''[29]

इस तरह देखा जा सकता है कि 19वीं शताब्दी के अन्त तक धार्मिक रूप से स्त्री सुधार आन्दोलन का रंग जमता गया। इन आन्दोलनों का विरोध भी खूब हुआ, क्योंकि रूढ़िवादी परम्पराओं एवं विचारों में जकड़े हुए लोग स्त्रियों को सिर्फ भोगवादी व वस्तुवादी दृष्टिकोण के साथ उसे अपनी निजी सम्पत्ति मानने के ही पक्षपाती थे। फिर भी इनके तमाम विरोधों के बाद भी धार्मिक सुधार चिन्तकों के मानवीय विचारों को धीरे–धीरे धार्मिक एवं सामाजिक मान्यता मिलती चली गयी और उसके अधिनियम भी पारित होते गये, जिसका जागृत समाज में स्वागत होता रहा और यह जागृत समाज इन आन्दोलनों से

स्त्री–जीवन के प्रति मानवीय विचारों एवं व्यवहारों को मान्यता प्रदान करता चला गया। यह उसके प्रति सोचे–समझे जाने वाले मानवीय विचारों का प्रस्थान–बिन्दु है, जो निरन्तर गतिशील प्रक्रिया का अंग बनके आज भी गतिमान है।

सन्दर्भ–सूची :–

1. आधुनिक भारतीय नव जागरण : डॉ0 शैलेन्द्र प्रसाद पांथरी, मिश्रा ट्रेडिंग कारपोरेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1992–93, पृ0–111।
2. भारतीय सामाजिक चिंतन – डॉ0 बी0 एन0 सिंह, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2010, पृष्ठ–142।
3. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन– डॉ0 ओमेश्वर अवस्थी, डॉ0 रामकुमार अवस्थी, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण 1997, पृ0 45।
4. मार्डन रिव्यू रामानंद चटर्जी, राजाराम मोहन राय, द्वितीय जन्म वार्षिक समारोह समिति पुस्तिका पृ0 2–3।
5. भारतीय सामाजिक चिंतन,, पृष्ठ–142।
6. वही, पृ0 153।
7. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक, पृ0 24–25।
8. आधुनिक भारतीय नवजागरण, पृ0 197।
9. स्त्री संघर्ष का इतिहास (1800–1990) : राधा कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरी आवृत्ति– 2009,पृ0–26।
10. वही, पृ0–26।
11. वही, पृ0–31–32।
12. वही, पृ0–41।
13. वही, पृ0–44।
14. वही, पृ0–49।
15. भारतीय सामाजिक चिंतन, पृ0–15।
16. वही, पृ0–162–163।
17. स्त्री संघर्ष का इतिहास (1800–1990, पृ0–63।
18. भारतीय सामाजिक चिंतन, पृ0–186।
19. स्त्री संघर्ष का इतिहास (1800–1990), पृ0–55।
20. भारतीय सामाजिक चिन्तन, पृ0 207।
21. वही, पृ0 206।
22. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, पृ0 82।
23. भारतीय सामाजिक चिन्तन, पृ0 211।
24. स्वामी विवेकानंद साहित्य संचयन–स्वामी ब्रह्मस्थानन्द प्रकाशन, नागपुर, सतरहवां पुनर्मुद्रण – 2.08.2012, पृ0 733।
25. आधुनिक भारतीय नवजागरण, पृ0 269।
26. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, पृ0–108।
27. स्त्री संघर्ष का इतिहास (1800–1990), पृ0–107।
28. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, पृ0 108।
29. भारतीय सामाजिक चिन्तन, पृ0–163।

समकालीन हिन्दी स्त्री-कथा साहित्य : अस्मिता और मूल्य

मुम्पा मरबम*

एक स्त्री के लिए व्यक्तिगत जीवन में अस्मिता का अत्यंत ही व्यापक महत्व है। वह अपने व्यक्तित्व की इयत्ता को कभी भी खोना नहीं चाहती है और उसकी संरक्षा प्रत्येक स्थिति में किसी भी स्तर पर करना चाहती है। अपने व्यक्तिगत जीवन में अस्मिता की तलाश, रक्षा और उसकी कल्पना को वह अपने जीवन के फलक से बाहर साहित्य में, समाज में भी देखना चाहती है और व्यक्तिगत अस्मिता को भी पात्रों और घटनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करती है। साहित्य में अस्मिताबोध एक वैचारिक आंदोलन के रूप में समक्ष आता है। वर्तमान स्त्री–लेखन में मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, चित्रा मुद्‌गल, मेहरून्निसा परवेज़, मृणाल पाण्डेय, नासिरा शर्मा, सुषम बेदी, नीलाक्षी सिंह, अल्पना मिश्र, अलका सरावगी, राजी सेठ, सिम्मी हर्षिता, निरूपमा सेवती, मृदुला गर्ग, मंजुल भगत, चन्द्रकांता आदि अनेक ऐसी महिला कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कथात्मक रचनाओं यथा–कहानियों और उपन्यासों में ऐसे चरित्रों का सृजन किया है जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में संघर्ष किया है और अपनी अस्मिता की संरक्षा करने का प्रयत्न किया है। कहानियों में अभिव्यक्त स्त्री–सरोकारों के संदर्भ में आलोचकों ने अपने मतों का भी प्रतिपादन किया है। पुष्पपाल सिंह का इस संदर्भ में महत्वपूर्ण कथन है–''मैं पूर्ण दायित्व से यह कहना चाहूँगा कि इस अनुभव वृत्त में नई कहानी के दौर से लेकर अब तक जितने सशक्त रूप में कृष्णा सोबती, उषा प्रियम्बदा, मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्‌गल, मृणाल पाण्डे, मंजुल भगत, सुधा अरोड़ा, राजी सेठ, चन्द्रकान्ता, सूर्यबाला और बाद की पीढ़ी में ऋता शुक्ला, मैत्रेयी पुष्पा, जया जादवानी, क्षमा शर्मा, प्रभा खेतान, सरयू शर्मा, कमल कुमार, सुषम बेदी, तवलीन आदि ने लिखा है। इतने सशक्त रूप में पुरुष कथाकार नहीं लिख सकते थे। सम्बंधों के सत्य पर लिखी गई इनकी कहानियाँ न केवल अपने समय का दस्तावेज अपितु हमारे भाषा के साहित्य का गौरव भी बनती हैं।''[1] वस्तुतः स्त्री लेखन की जो भी उपलब्धि है, वह उनका अपना स्वयं का अनुभव आधार है और असीम उड़ान की कामनाएँ हैं, जो उन्हें दृष्टि का एक नवाकाश उपलब्ध कराती हैं। नमिता सिंह द्वारा लिखित एक प्रमुख कहानी है–'गलत नम्बर का जूता।' इस कहानी में पुरुष पात्र सुधीश उच्च पदस्थ होते हुए भी अपने सीनियर को प्रसन्न करने के लिए अपनी पत्नी पर प्रभाव डालने और विवश करने की कोशिश करता है, परंतु उसकी पत्नी सुजाता अपनी व्यक्तिगत अस्मिता से समझौता नहीं करती है और वह सुधीश से अपने विचार प्रकट करती है–''मैं नौकरी करूँगी अपने पैरों पर खड़े होने के लिए। मैं खुद को इस लायक बनाऊँगी लेकिन अपने तरीके से। तुम्हारे ऐशो–आराम, तुम्हारी महत्वाकांक्षा को पुख्ता करने के लिए नहीं।''[2] प्रख्यात नारीवादी चिंतक और महिला आलोचक, आंदोलनकर्मी रमणिका गुप्ता लिखती हैं–''आख़िर स्त्री–अस्मिता है क्या? दरअसल यह पुरुष के समान स्त्री का समान अधिकार, स्त्री के पति विवेकमूलक दृष्टिकोण तथा स्त्री द्वारा पुरुष के वर्चस्व का प्रतिरोध है।''[3] स्त्री–जीवन के सरोकारों और उसकी पहचान का प्रकटीकरण ही उसकी अस्मिता की अभिव्यक्ति है और आत्मनिर्णय की सुरक्षा और स्वतंत्रता ही व्यक्तिगत जीवन में अस्मिता की पहचान और मुखर द्योतन है।

नारीवादी कथा–साहित्य में यदि व्यक्तिगत अस्मिता की तलाश करनी हो तो कृष्णा सोबती का कथा साहित्य इस हेतु विस्तृत पृष्ठभूमि प्रदान करता है। 'मित्रो मरजानी' और 'ए लड़की' जैसी अमर कृतियों के माध्यम से उन्होंने ऐसी व्यक्तिगत अस्मिता निर्मित की है और समाज को सौंपी है जो अत्यंत

*** शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वेंकटेश्वर मुक्त विश्वविद्यालय, पापुम पारे, अरूणाचल प्रदेश।**

मुखर हैं और समाज को चुनौती देते हुए जीवंत और शाश्वत सवाल खड़े करते हैं। दोनों ही रचनाओं के पात्र तीव्र विद्रोही प्रकृति के हैं और हर कारा, हर बंधन को तोड़कर अपने जीवन को सम्पूर्ण स्वरूप में जीना चाहते हैं। 'ए लड़की' रचना में अम्मू अघोषित रूप से अपनी पुत्री को बाँध कर एक नैतिक दायरे में रखना चाहती है। उसे बेटी के जीवन को पारम्परिक आदर्शों और बँधे–बँधाए मानदण्डों के अनुरूप देखना पसंद है। वह चाहती है कि उसकी बेटी घर–परिवार बसा ले। वह वैवाहिक सम्बन्धों को सामाजिक आदर्शों के अनुकूल मानती है और विवाह न करने वाले को कायर मानती है जो जीवन की चुनौतियों और दायित्वों से भागते हैं, परंतु उसकी बेटी को विवाह और बंधन स्वीकार नहीं थे। वह तो स्वतंत्र उड़ान भरते हुए अपने निर्धारित लक्ष्य को पूर्ण करना चाहती थी। अम्मू कहती है–''जो दिलों पर अर्गलाएँ चढ़ा लेते हैं, उनका आकाश उन्हीं तक रह जाता है। उनकी दौड़ उनके घर तक ही समाप्त। बस उसी के आस–पास थई–थई रोटियाँ सेंकते जाओ, मकड़ी के जाले बुनते जाओ। सुन रही हो न, वहाँ भी ज्यादा कुछ नहीं रखा।''[4] अम्मू का सम्बोधन 'ए लड़की' कहीं न कहीं भीतर ही उसे झकझोर जाता है। अम्मू के एकरस जीवन में बीमारी और उबन के अलावा कुछ भी खास नहीं बचा था, परंतु जिन्दगी के रीतेपन में वह स्वयं भी एक किरदार थी। अपनी बेटी के प्रति उसकी भावना कहीं न कहीं उसके पीड़ित स्त्री–जीवन और उसकी अधूरी अस्मिता के साथ ही अपने बेटी के प्रति सामाजिक असुरक्षाबोध और एक अव्यक्त आशंका भी थी। अम्मू का व्यक्तित्व यदि बाहर से कठोर और रुग्ण दिखाई देता था तो उसके पीछे भी स्त्री–जीवन की विडम्बना ही थी। वह अपनी बेटी से बेहद प्रेम करती थी, परन्तु धीरे–धीरे उसका कठोर होते जाना या पितृसत्ता के स्वरूप में बदलते जाना भी उसकी नियति मात्र थी। वस्तुतः यह उपन्यास भावनाओं की एक यात्रा है जो अम्मू के सीने से होता हुआ बेटी के सीने तक दफन हो जाता है। अम्मू के व्यक्तित्व में इस रुग्ण परिवर्तन के अनेक कारण थे और उसकी कई परतें भी थीं। अम्मू के जीवन का स्वयं विखण्डित और अपूर्ण रह जाना भी उसमें एक प्रमुख कारण था। फ्लैशबैक में चलती हुई अम्मू के समक्ष अपना अतीत भी तैर जाता है। जीवन के कई अन्तरालों की अतीत–यात्रा के कारण अम्मू के चेहरे और हृदय में अनेक भाव उभरते हैं। वह लड़की कभी अम्मू स्वयं भी थीं जो समय के साथ परिवर्तित होती गईं। अम्मू को अपनी दूध पिलाती माँ याद आ जाती है तो कभी अपने विवाह की घटना के साथ ही अपने पति के वर्चस्ववादी और अधिकारवादी व्यक्तित्व की याद ही आती है। अम्मू अपने जीवन के अनेक अंतरालों का स्मरण करते हुए स्वयं को नितांत अकेली पाती है। 'ए लड़की' किरदार जिसका अपना स्वयं का एक नाम तक नहीं है, जिसकी अपनी कोई व्यक्तिगत अस्मिता प्रतीत नहीं होती, वह कोई और नहीं बल्कि अम्मू स्वयं ही है और ऐसी अनगिनत, अनाम स्त्रियाँ और लड़कियाँ हैं जिनकी अपनी कोई व्यक्ति अस्मिता नहीं होती।

इस उपन्यास को पढ़ते हुए सहज ही राही मासूम रजा के उपन्यास 'आधा गाँव' का स्मरण हो आता है जिसमें खानदान में आने वाली बहुओं के वास्तविक नाम हमेशा के लिए मायके में ही छूट जाते और ससुराल में 'फलाँ बीबी' का ओहदा पाकर अपना पूरा जीवन बेनाम ही गुजार देती थीं और तरसती थीं कि कब उनके गाँव की कोई अहीरिन या चमाईन गंगा नहाने के लिए आये और उन्हें उनके वास्तविक नाम से पुकार कर उन्हें उनके व्यक्तित्व और व्यक्तिगत अस्मिता की पहचान कराए। जीवन में अत्यंत ऊर्जावान, निडर और साहसी, आत्मविश्वास से लबरेज अम्मू कब एक चिड़चिड़ी और पुरुषवादी व्यक्तित्व में बदलती गईं, पता ही नहीं चला पर इसके पीछे भी एक तार्किक आधार था। स्वच्छंद जीवन जीने वाली अम्मू विवाह के बाद बंदिशों के चलते धीरे–धीरे टूटती चली गईं और अवचेतन में बसा उनका अवसाद रिसकर एक ग्रंथि के रूप में सामने आने लगा। अम्मू अपनी खो चुकी पहचान के चलते स्वयं को अशक्त महसूस करने लगी थी और बीमारी के कारण यह भाव और अधिक उग्र रूप में मूर्त होने लगा था। 'ऐ लड़की' हमारे घर–परिवार, हमारे आस–पास के समुदाय की कोई भी लड़की हो सकती है, जो अपनी पहचान से हीन है। नर्स सूसन की भूमिका उपन्यास में सीमित है, परंतु उसका मौन भी बहुत

कुछ अभिव्यक्त करता है। अम्मू और लड़की समाज की उन असंख्य स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत होती हैं जो संस्कारों और रिवाजों के पाश में पूरी तरह जकड़ दी गई हैं। ''चल अकेले रही थी पर कोई आहट मेरे पीछे–पीछे भागती आती रही। पहचान करने की कोशिश की तो एड़ीदार जूती की आवाज पीछा कर रही थी।''[5] स्त्री हर आहट से भयभीत होती है और उसे वह आहट अपना पीछझ करती प्रतीत होती है, उसे अपनी आहट से भी भय लगने लगता है। अम्मू एक गहरे द्वन्द्व में जीती रहती हैं तथा उनका व्यक्तित्व उभयपक्षीय हो जाता है। कभी वह क्रूर और पितृसत्तात्मक प्रतीत होती हैं तो कभी उनके व्यक्तित्व का कोमल स्त्री पक्ष मुखर हो कर सामने आता। इसके मूल में उनका पुरुष सत्ता द्वारा दमित और आक्रांत होना भी रहा है। एक ओर अम्मू अपनी सम्पत्ति अपने बेटे को देना चाहती है तो दूसरी तरफ बेटी को विवाह न करने के कारण कोसती भी रहती है–''इतना बता दो कि खुदमुख्तारी चलाओगी किस पर! तेरी पंक्ति में कोई नहीं। न किसी की माँ, न दादी, न नानी। लड़की तुम हो वनस्पति कुश–घास–तिनका! जो कह रही हूँ वह समझती तो हो।''[6] दूसरी ओर उन्हें राग भी उत्पन्न होता है कि उनकी बेटी ने उनके लिए कितना त्याग किया और उनकी कितनी अनन्य सुश्रूषा की। अम्मू स्त्रीत्व के गुणों और उसकी सर्जनात्मक की अपूर्व व्याख्या करती है और स्त्री पक्ष की अनन्य पैरोकार प्रतीत होता है–''लड़की, बच्चा बनाना एक तरह का यज्ञ है री! इन दिनों औरत पूरे ब्रह्माण्ड से शक्ति के कण खींच कर अपनी ऊर्जा ज्वलित कर लेती है। अपने में कुछ विशिष्ट ही जीती है। अपने अंदर का आकाश निरखती है।''[7] स्त्री के आदिम और शाश्वत सौन्दर्य की आभा से परिचित अम्मू स्त्री–सत्य के साथ ही अपनी बेटी को उसका यथार्थ अनुभूत कराने का भी प्रयत्न करती है।

संदर्भ सूची :–

1. महिला लेखन : कुछ विमर्श, पुष्पपाल सिंह, पृ. 28, मधुमती (पत्रिका), जून 1998।
2. गलत नम्बर का जूता, नमिता सिंह, पृ. 123, जंगलगाथा (कहानी संग्रह)।
3. स्त्री विमर्श, कलम और कुदाल के बहाने, रमणिका गुप्ता, पृ. 55, संस्करण 2004।
4. ऐ लड़की, कृष्णा सोबती, पृ. 56, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. वही, पृ. 18–19।
6. वही, पृ. 24।
7. वही, पृ. 425।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका

डॉ. एस. रूपेन्द्र राव*

सन्त कुमार तिवारी**

सारांश :– शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है। यह स्वयं में आत्मविश्वास विकसित करने के साथ ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करती है। यह मनुष्यों को सशक्त बनाकर उन्हें जीवन की चुनौतियों को कुशलता से सामना करने के लिए तैयार करती है। यह जीवन में बेहतर संभावनाओं को प्राप्त करने के लिए अवसरों के दरवाजे खोलती है, जिससे भविष्य में विकास को बढ़ावा मिले। यह समाज के सभी व्यक्तियों में समतामूलक समाज निर्माण की भावना लाती है और देश के विकास को भी नई ऊंचाई प्रदान करती है। ऋग्वेद के एक श्लोक में कहा गया है :–

इयां द्वियं शिक्षमाणस्य देवद क्रंतु दक्षं वरूण सं शिक्षाधि 1 (ऋ. 8/42/3)

अर्थात हे! सर्वव्यापी ज्योतिर्मय! जो ज्ञानेदय के लिए प्रयत्नशील है उसकी बुद्धि विवेक और अंतर्दृष्टि को तीक्ष्णता प्रदान करो।

सच्ची शिक्षा व्यक्ति को अपनी अंतः शक्ति पहचानने की योग्यता प्रदान करती है। यह कठोर प्रशिक्षण और अनुशासन द्वारा हमारी प्रवीणता और प्रतिभा को प्रोत्साहित तथा विकसित करती है।[1] किसी भी देश की सरकार का मुख्य उद्देश्य होता है कि देश में ऐसी शिक्षा पद्धति को लागू किया जाए, जिससे आने वाले समय में ऐसे समाज की स्थापना की जा सके जिससे देश की उन्नति हो। इस सन्दर्भ में भारत सरकार ने स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा का योजनाबद्ध रूप से विकास किया है। 1964 में गठित कोठारी आयोग, 1986 की शिक्षा नीति और सन् 2021 में निर्मित नई शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा विशेषकर दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करना ही प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है।[2]

प्रस्तावना :– सन् 1948 में गठित 'राधाकृष्णन आयोग' ने भारतीय उच्च शिक्षा के विकास के लिए सुझाव दिए, जिसकी सिफारिशों के आधार पर ही भारत में विश्वविद्यालयीन शिक्षा का विकास हुआ। सन् 1952 में 'रामास्वामी मुदालिचर आयोग' ने माध्यमिक शिक्षा के विकास की योजना तैयार की जिस पर 12 वर्षो तक कार्य हुआ। इसके पश्चात् 1964 में भारत का प्रथम शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग) की स्थापना की गई, जिसने सभी वर्गो के लिए शिक्षा प्रदान करने के लिए सुझाव दिए तथा सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान किया।[3] शिक्षा प्राप्त करने से कोई वंचित न रह जाए, इसलिए शिक्षा की वैकल्पिक प्रणाली मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को स्वीकार करते हुए 1985 में भारत सरकार द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) की स्थापना की गई।[4] सन् 1986 में भारत सरकार द्वारा भारत की द्वितीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित की गई, जिसमें शिक्षा प्रणाली का रूपांतरण 10+2+3 के आधार पर स्थापित किया गया और संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के विकास पर विशेष रूप से जोर दिया गया। इसके अन्तर्गत शिक्षा के अवसरो की समानता का प्रयास विज्ञान व तकनीकी शिक्षा पर बल तथा नैतिक व सामाजिक मूल्यों के विकास की सिफारिश की गई। 86 वें संविधान संशोधन 2002 द्वारा शिक्षा के अधिकार को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21क के तहत शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार किया गया।[5] (बेयर एक्ट 2020) सन् 2017 को इसरो के पुर्व प्रमुख रहे वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में 09 सदस्यीय समिति

***सहायक प्राध्यापक–मनोविज्ञान विभाग, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर।**
****सहायक प्राध्यापक–राजनीति विज्ञान, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर।**

ने 2019 में नई शिक्षा नीति का प्रारूप मानव संशाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक को सौपा, जिसे केन्द्रीय कैबिनेट की स्वीकृति के बाद "नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" के नाम जाना जाता है।[6] (मिश्रा 2021) इस शिक्षा नीति में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए विशेष रूप से वर्णित किया गया है कि **"मुक्त और दूरस्थ शिक्षा (ओडीएल) और ऑनलाईन शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए एक प्राकृतिक मार्ग प्रदान करता है।"**[7] (पाठक 2021) दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षक तथा विद्यार्थी को किसी स्थान विशेष पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती है। यह प्रणाली अध्यापन तथा शिक्षण के तौर–तरीकों तथा समय निवारण के साथ–साथ गुणवत्ता सम्बन्धी अपेक्षाओं से समझौता किए बिना प्रवेश मानदंडों से सम्बन्धित है।[8](रा.शि.नी. 1986) इसके अन्तर्गत विश्वविद्यालय छात्रों को पढ़ाने का उत्तरदायित्व नहीं लेता लेकिन छात्रों को निजी तौर पर परीक्षा में बैठने की अनुमति देता है, इसलिए इसे निजी शिक्षा भी कहते है।[9](रा.शि.नी. 2020)

भारत में पत्राचार के माध्यम से दूरवर्ती शिक्षा प्रदान करने की शुरूआत सन् 1960 में भारत के चार विश्वविद्यालयों द्वारा की गई। वर्तमान में 31 विश्वविद्यालय एवं 14 मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रदान की जा रही है जो स्पष्ट रूप से दूरवर्ती शिक्षा की अद्‌भुत प्रगति प्रदर्शित करती है। भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री डॉ. के एल श्रीमाली द्वारा 1962 में भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की शुरूआत करते हुए इसके लिए निम्नलिखित उद्‌देश्यों को निर्धारित किया था–

1. राष्ट्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कम खर्चीली शिक्षण प्रणाली प्रदान करना।
2. वे विद्यार्थी जो व्यक्तिगत, आर्थिक अथवा अन्य कारणों से नियमित विद्यालयों में प्रवेश नहीं ले पाते है, उनकों उच्च शिक्षा में अवसर प्रदान करना।
3. रोजगार में लगे लोगों को कार्य में बिना किसी बाधा के शैक्षिक उन्नति के अवसर प्रदान करना।

भारत में दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में राज्य स्तर पर प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1982 में आन्ध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय हैदराबाद में की गईं थी। इस प्रकार दूरवर्ती शिक्षा के विकास का प्रथम सार्थक प्रयास विश्वविद्यालयी स्तर के स्वायत्त संस्थान की स्थापना के द्वारा किया गया। यद्यपि आन्ध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना भारत में दूरस्थ शिक्षा के इतिहास मे महत्त्वपूर्ण प्रयास था, किन्तु यह राज्य स्तरीय संस्थान होने के कारण इसका विस्तार एवं अधिकार क्षेत्र सीमित था।[10] (सिंह 2021) अतः सभी राज्यों द्वारा एक ऐसे मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना पर बल दिया गया जो सम्पूर्ण देश में फैले हुए पत्राचार शिक्षा संस्थानो के कार्यो में समन्वय स्थापित कर सके साथ ही यह भी सुनिश्चित किया गया कि वे उच्च शिक्षा के विकास में पूर्णतया समर्पित होकर कार्य करे। इस मांग के परिणाम स्वरूप सितंबर 1985 ई. में भारत सरकार ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की, इसके प्रमुख उद्‌देश्य निम्नलिखित है–

- मुक्त विश्वविद्यालय एवं दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली के विकास को प्रोत्साहन देना।
- दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षण, मूल्यांकन एवं शोधकार्य के स्तर को निर्धारित करना।
- विश्वविद्यालय की परिनियमावली के अनुसार महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च अध्ययन केन्द्रों को अनुदान आबंटित करना।

इस राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के स्थापना को शिक्षा के विकास में एक सराहनीय प्रयास माना गया, क्योंकि यह विश्वविद्यालय पूर्णतया मुक्त एवं दूरवर्ती शिक्षा के लिये ही था, तथा इससे परंपरागत विश्वविद्यालय द्वारा मुक्त एवं दूरवर्ती शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित संस्था की कठिनाओं को दूर करने में भी सहायता मिल सकेंगी। केन्द्रीय स्तर पर मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात् वर्तमान भारत में राज्य स्तर पर कुल 14 प्रान्तो में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की जा चुकी है।[11](श्रीवास्तव 2015) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी पत्राचार/मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देते हुए सभी के लिए शिक्षा की उपलब्धता निर्धारित की तथा ऐसे विद्यार्थी निम्नलिखित श्रेणी की अपेक्षाओं को सफलतापूर्वक पूर्ण कर सकते है उन्हें उच्च शिक्षा के पयार्प्त अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्धता घोषित की।

1. जिन विद्यार्थियों को आर्थिक या अन्य कारणों से अपनी औपचारिक शिक्षा बीच में छोड़ना पड़ा हो।

2. भौगोलिक दृष्टि से दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थी।
3. ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने योग्यता या प्रेरणा के अभाव में शिक्षा छोड़ी हो, किन्तु अब वे शिक्षा के लिए स्वतः प्रेरित होकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हो।
4. ऐसे विद्यार्थी जो सामान्य विश्वविद्यालयों में सीटों की कमी के कारण प्रवेश नही पाते है।
5. सेवारत व्यक्ति जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हो एवं व्यावसायिक उन्नति करना चाहते है।
6. वे लोग जो शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया मानकर वर्तमान विषय के ज्ञान में वृद्धि या किसी नवीन क्षेत्र का ज्ञान अर्जित करना चाहते है।[12] (त्रिवेदी 2007)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 मुक्त एवं दूरवर्ती शिक्षा – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को बढावा देने के लिए मुक्त विश्वविद्यालयों, दूरवर्ती अधिगम तथा संचार माध्यमों की भूमिका के महत्व को मान्यता प्रदान करती है। इस शिक्षा नीति के प्रतिवेदन में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि " The Open University System has been initiated in order to augment opportunites for higher education and as an instrument of domocratising eduction. The Indira Gandhi National Open University, established in 1985 in fulfiltment these objectives will be strengthened. This powerful instrument will have to be developed with care and extend with education"[13] NPE(1986) अर्थात् इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार मुक्त विश्वविद्यालय का प्रारंभ उच्च शिक्षा के लिए अवसरो के विस्तार तथा शिक्षा के लोकतंत्रीकरण के एक प्रभावशाली साधन के रूप के किया गया है। सन् 1985 में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सुदढ़ किया जाएगा। इस शक्तिशाली साधन का विकास एवं विस्तार सावधानीपूर्वक एवं अच्छी देखरेख के साथ किया जाना होगा।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, आज के बदलते परिवेश में परिवर्तन की धारा ने शिक्षा को विशेष रूप से प्रभावित किया है। परिवर्तन से शिक्षा में जहां नवीनता आयी है, वह समसामयिक भी हो जाती है। इस आधुनिक युग में जहां पुरानी शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाना आवश्यक है, वही एक नये युग में प्रवेश जैसी धारणा को ध्यान में रखकर उसके पाठ्यक्रम शिक्षण विधियों, मूल्यांकन व्यवस्था तथा उसको प्रदान किये जाने वाले अनुभावों को एक नया स्वरूप प्रदान करना होगा, जिससे शिक्षा जन–साधारण तक पहुंच सके[14](अतुल 2016) आज बढ़ती प्रतिस्पर्धा के युग में सीमित समय में असीमित ज्ञान लेना एवं जीवन में उसका उपयोग करना तथा अपने ज्ञान को नवीनीकृत करते रहना समय की आवश्यकता बन चुकी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी अपने शीर्षक में समतामूलक एवं समावेशी शिक्षाः सभी के लिए अधिगम में इसी तरह की बात कही है शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने, नवोन्मेष और शोध को बढ़ाव देने और देश को ज्ञान की शिखर तक पहुचाने के लिए 34 साल बाद नई शिक्षा नीति की आवश्यकता पड़ी। इस शिक्षा नीति से स्कूली शिक्षा के सभी स्तरो की प्री स्कूल से माध्यमिक स्तर तक सबके लिए एक समान पहुंच सुनिश्चित करने, नवोन्मेष व शोध की संभावना तथा रट्टेदार शिक्षा के स्थान पर जीवनोपयोगी एवं आत्मनिर्भर शिक्षा प्रदान करने को ध्यान में रखा गया। इतना ही नहीं स्कूल छोड़ चुके बच्चों को फिर से मुख्यधारा में शामिल करने तथा स्कूल के बुनियादी ढांचे का विकास और नवीन शिक्षा केन्द्रों की स्थापना भी इसके प्रमुख उद्देश्य है।[15](एडुसर्च 2016)

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020– यह नीति सतत विकास के लक्ष्यों को साकार कर एक समान और समावेशी कक्षा का वातावरण प्रदान करने में सहायक होगी। इस नीति में छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कौशल विकास पर अधिक ध्यान दिया गया है व्यावसायिक शिक्षा के विकास के लिए कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय एवं वित्त प्रदान करने वाले मंत्रालय के साथ–साथ केन्द्र और राज्य सरकारों के विभिन्न मंत्रालयों एवं विकास एजेंसियों के साथ तालमेल की एक प्रभावी व्यवस्था का भी इसमें प्रावधान किया गया है। इस नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रथम पांच वर्षों (1 अप्रैल, 2021 से 31 मार्च, 2026) की अवधि के लिए भारत सरकार द्वारा 2 लाख 94 हजार करोड़ रूपये से अधिक की राशि खर्च करने का प्रावधान किया

गया है, इसके अन्तर्गत 1.16 लाख स्कूलों, 15.6 करोड़ से अधिक छात्रों और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों के 57 लाख से अधिक शिक्षकों को इस नीति के तहत सम्मिलित किया गया है।[16] (पांचजन्य 2021)

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख लक्ष्य निम्नलिखित है[17](रा.शि.नी. 2020)–

1. 2030 तक सकल नामांकन अनुपात 100% करना है।
2. प्राथमिक शिक्षा अर्थात 05 वी तक शिक्षा मातृभाषा/स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में प्रदान करना।
3. मात्र भाषा को उच्च प्राथमिक (कक्षा 08 वी) और उससे आगे की शिक्षा के लिए प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है।
4. इस शिक्षा नीति के अन्तर्गत 03 से 18 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून 2009 तहत् रखा गया है।
5. इस नीति का प्रमुख उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है।
6. 2025 तक पूर्व माध्यमिक शिक्षा (03 से 06 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौमिक बनाना है।
7. शिक्षा क्षेत्र पर भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 06% हिस्से को सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है।
8. भारत के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए भारतीय उच्च शिक्षा परिषद् नामक एक एकल नियामक की उपकल्पना की गई।

नई शिक्षा नीति की प्रमुख सात विशेषताएं[18](महापात्र 2021) –

1. आत्मनिर्भर भारत
2. सतत् विकास लक्ष्य
3. आर्थिक वृद्धि के रूप में शिक्षा
4. उच्च शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण
5. डिजिटलीकृत शिक्षा और कक्षाएं।
6. नियामक संस्था
7. एक स्तरीत मान्यता प्रणाली

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा से संबंधित प्रमुख प्रावधान :– पहली बार देश के नई शिक्षा नीति 2020 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रासंगिकता को स्वीकार करते हुए वर्णित किया गया है। ''ओ. डी. एल. ऑनलाईन शिक्षा, और गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए प्राकृतिक मार्ग प्रदान करता है (12.5)। इस नीति में दूरस्थ शिक्षा की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने, परिवर्तित स्वरूप के अनुरूप स्वयं को नये रंग में ढ़ाल कर शिक्षा के विकास में सकारात्मक योगदान की अपेक्षा की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के लिए बिन्दुवार व्याख्या की गई है[19](सिंह 2021)–

5.23 – इसमें अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करने और सेवारत प्रशिक्षित शिक्षकों के ज्ञान में वृद्धि के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालयों का योगदान अतुल्यनीय रहा है। इस प्रक्रिया को अनवरत बनाये रखने की अपेक्षा करते हुए अन्य संस्थानों को ऐसे पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की ओर इशारा किया गया है।

10.10 – भारत के समग्र विकास के लिए शिक्षा के सकल नामांकन लक्ष्य 2030 को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए मुक्त और दूरस्थ शिक्षा संस्थानों से अपेक्षा की गई है। इन शिक्षा संस्थानों से उच्च गुणवत्ता वाले ऑनलाईन पाठ्यक्रमों का विकास करने को निर्देशित किया गया तथा देश के अन्य शिक्षा संस्थानों से भी इस दिशा में कार्य करने के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रयास करने की अपेक्षा की गई है। परंपरागत पाठ्यक्रमों के साथ साथ ऑनलाईन पाठ्यक्रमों को भी बढ़ावा देने की चर्चा इसी बिन्दु में की गई है।

11.07 – इसके अन्तर्गत वर्णित किया गया है कि स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति को बढ़ावा देने वाले पाठ्यक्रमों के लिए मुक्त और दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को क्रेडिट दिया जायगा।

12.05 – दूरस्थ और मुक्त शिक्षा के भविष्य की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए इसकी गुणवत्ता में सुनिश्चित करने एवं शिक्षा का प्रसार के लिए समुचित दिशा निर्देश दिये गये है इसके लिए नियम और मानक सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एक ही रूपरेखा के रूप में उपलब्ध करायें जाएंगे।

12.06 – मुक्त और दूरस्थ शिक्षा के द्वारा पाठ्यक्रमों को परंपरागत एवं ऑनलाईन माध्यम से वैश्विक गुणवत्ता के समतुल्य बनाये जाने की अपेक्षा की गई है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा से संबंधित संस्थान प्रयोग धर्मी बने तथा नये प्रतिमानों का अध्ययन और व्यवस्थापन करें।

16.05 – भारतीय लोक कलाओं के विकास एवं नयी पीढ़ी के लिए रूचिकर बनाने के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों से नए पाठ्यक्रमों को शामिल करने की आपेक्ष की गई है। लुप्तप्राय हस्तशिल्प को संरक्षित करने के लिए इसमें दिशा निर्देश दिए गए है।

15.09 – शोधरत विद्यार्थियों को शोधकाल के दौरान अपने भूल विषय से सम्बधित शिक्षण शास्त्र का क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम पूरा करना होगा। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को तत्काल इस दिशा में आवश्यक कदम उठाने चाहिए। 2–4 क्रेडिट के शिक्षणशास्त्र का पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए देश के सभी विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों को ऑनलाईन पाठ्यक्रम के रूप में उपलब्ध कराना चाहिए।

24.04(अ) – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दूरस्थ तथा मुक्त उच्च शिक्षण संस्थानों से अपेक्षा की गई है कि वे ऑनलाईन शिक्षा से जुड़े भिन्न प्रारूपो ई–विषयवस्तु, अध्ययन विधियों पर पायलट स्टडी करके निष्कर्ष के आधार पर देश की शिक्षा व्यावस्था में आवश्यक सुधारो में योगदान दें।

इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा को भविष्य की ऑनलाईन शिक्षा के रूप में रेखांकित किया गया है। नीति में प्रावधान किया गया है कि भारत के सभी विद्यालयी शिक्षा को प्रतिवर्ष 50 या उससे अधिक घंटों का सतत् वृत्तिक विकास का पाठ्यक्रम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से ऑनलाईन पूरा करना होगा। वर्तमान में भारत में लगभग 90 लाख (प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक तक) शिक्षक है। इतनी बड़ी संख्या को प्रतिवर्ष पाठ्यक्रम उपलब्ध कराना एक चुनौती भी है और अवसर भी। इसके अन्तर्गत परंपरागत विषयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने की स्वतंत्रता तथा अवसर सभी को उपलब्ध कराये जाने की जिम्मेदारी इन संस्थाओं को सौपी गई है।[20](शर्मा 2014)

शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना ही नहीं बल्कि सशक्त भारत के निर्माण के लिए समग्र व समावेशी शिक्षा सभी के लिए उपलब्ध कराना है। एक शिक्षित व्यक्ति ही कर्तव्य निष्ठ, जिम्मेदार नागरिक और राष्ट्रभक्त हो सकता है। अतः पहली प्राथमिकता यह है कि भारत का कोई भी व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने से वंचित न रह जाये। इसके लिए आवश्यक है कि जैसे केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने जिस तरह से छात्रों की बढ़ती भीड़ या औपचारिक शिक्षा में प्रवेश न पाने वाले विद्यार्थियों की सुविधा के लिए 1999 में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय की स्थापना की थी वैसे ही पूरे देश में माध्यमिक स्तर पर भी मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा के लिए कारगर प्रयास किये जाने चाहिए ताकि समग्र एवं समावेशी शिक्षा के माध्यम से 100ः साक्षरता दर को प्राप्त किया जा सके।[21](आउटलुक 2021)

शिक्षा के विशाल आयाम में गुणवत्ता लाकर देश के शिक्षित नवयुवकों को राष्ट्रीय तथा अंतरर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में लाने का लक्ष्य इस शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य है। शिक्षा लोगों के मष्तिष्क को उच्च स्तर पर विकसित करने का कार्य करती है और समाज में लोगों के बीच सभी भेदभावों को मिटाने में मदद करती है।[22](न्यू इंडिया 2021) शिक्षा में नवोन्मेष जितना आवश्यक है, उतना ही जरूरी है उसे संस्कृति से जोड़ना। इन दोनों के समन्वय से ही कोई देश प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है, नई शिक्षा नीति में इसी बात पर जोर दिया गया है। इस नीति की यह विशेषता है कि इसमें भारत को केन्द्र में रखा गया है, अर्थात भारत की परिस्थितियों के अनुसार वैश्विक प्रतिस्पर्धा की चर्चा तो की गई है, किन्तु अन्धानुकरण को स्वीकार नहीं

किया गया है। इसके अन्तर्गत विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में स्वागत करने के साथ ही भारतीय विश्वविद्यालयो को विदेशों में परिसर खोलने की स्वीकृति दी गई है जिससे भारत की ज्ञान परंपरा, गौरव तथा वैज्ञानिक दृष्टि को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करने का सुअवसर प्राप्त हो सके।[23](मुधाल 2004)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास, समानता के लिए शिक्षा, महिला शिक्षा, तकनीकी एवं प्रबंधन शिक्षा आदि को कारगर बनाने के लिए शिक्षा की विषयवस्तु एवं प्रक्रिया को नया मोड़ देने तथा शिक्षा की प्रबंधन व्यावस्था को पुनर्गठित करने पर विशेष बल दिया गया है। इन कार्यक्रमों में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। कुल मिलाकर यह नई शिक्षा नीति युवा पीढ़ी के उज्जवल भविष्य और शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव लेकर आयी है। अब तक संशोधित और सुनियोजित शिक्षा नीति राष्ट्र को प्रगति के मार्ग पर ले जाने के लिए तैयार है, आवश्यकता है तो बस उपर्युक्त कार्यान्वयन की जिससे जमीनी स्तर पर इसका लाभ सभी को मिल सके।

संदर्भ–सूची :–

1. डॉ. अतुल (नवंबर 2016) "दूरस्थ शिक्षा में नवाचारी तकनीकी", द्वितीय संस्करण, राज प्रिन्टर्स मेरठ, पृष्ठ 65।
2. कंवरिया विनोद कुमार (2018) "भरतीय आधुनिक शिक्षा", अंक–3, प्रकाशन विभाग एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, नई दिल्ली पृष्ठ 86–87।
3. इग्नू (1985) इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अधिनियम 1985 और विधियां विश्वविद्यालय दिल्ली पृष्ठ 13–18।
4. डॉ. बसु, डी.डी. (2016) "भारत का संविधान", 6वां संस्करण, लेक्सिस नेक्सिस प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 30–34 06।
5. बेयर एक्ट (2020) "भारत का संविधान", 10वां संस्करण, प्रयाग पुस्तक सदन, प्रयागराज, पृष्ठ 12।
6. महापात्र प्रो. भुवन चन्द्र (2021) गाइडलाइन नई शिक्षा नीति 2020, अंक–1, माधव प्रकाशन आगरा, 2021, पृष्ठ 1–14।
7. मिश्रा, सुरेश कुमार (2021) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, ताउरीन पब्लिकेशन, दिल्ली पृष्ठ 230–235।
8. मानस डॉ. सुनील कुमार (2021) आलोचन दृष्टि, शांति शिक्षा की समकालीन प्रासंगिकता एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अंक–23, सृजनश्री न्यास प्रकाशन, फतेहपुर उ.प्र. पृष्ठ 91–95।
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारत सरकार 1986।
10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारत सरकार 2020।
11. डॉ. सिंह, गौरव (सितंबर 2021) "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020ः एक अध्ययन", अंक–9, इंद्रप्रस्थ भारती हिन्दी अकादमी, नई दिल्ली पृष्ठ 61–67।
12. डॉ. श्रीवास्तव छाया, कुमार नरेंद्र (2015) शिक्षा नीतियां विद्यालय नेतृत्व एवं प्रबंधन, 7वां संस्करण, राखी पबिलकेशन, आगरा पृष्ठ 26–51
13. डॉ. शर्मा शंकर दयाल (2007) संस्कृति और साहित्य, प्रथम संस्करण, पंकज पुस्तक मंदिर, दिल्ली पृष्ठ 58–62।
14. शर्मा, आर. ए.(2014)दूरवर्ती शिक्षा, प्रथम संस्करण, प्रथम संस्करण, राज पिन्टर्स, मेरठ पृष्ठ 40–45।
15. त्रिवेदी, राकेश (2007) भारतीय शिक्षा इतिहास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली पृष्ठ 01–10।
16. एडुसर्च जर्नल (2016) दूरस्थ शिक्षा में नवाचार की भूमिका, अंक–17 पृष्ठ 31–37।
17. पांचजन्य (8 अगस्त 2021) राष्ट्रीय शिक्षा नीति मुक्ति की मार्गदर्शक, भारत प्रकाशन, अंक–11, नई दिल्ली।
18. आउटलुक स्पॉटलाइट परिशिष्ट (13 दिसंबर 2021) शिक्षा, में गुणवत्ता, अंक–61, आउटलुक प्रकाशन न्यू दिल्ली।।
19. न्यू इंडिया समाचार (1–15 सितंबर 2021) शिक्षा, सम्मान और सुरक्षा को प्रतिबद्ध सरकार, अंक–6, कम्युनिकेशन सूचना भवन नई दिल्ली पृष्ठ–31।
20. Mudhal S. M.N; Khan ¼2004½ A Hand Book on Distance Education, Frist Edition, Ess Ess Publication, New Delhi Page 13-18.
21. आउटलुक स्पॉटलाइट परिशिष्ट (13 दिसंबर 2021) शिक्षा, में गुणवत्ता, आउटलुक प्रकाशन न्यू दिल्ली। सम्मान और सुरक्षा को प्रतिबद्ध सरकार, कम्युनिकेशन सूचना भवन नई दिल्ली, पृष्ठ 11।
22. न्यू इंडिया समाचार (1–15 सितंबर 2021) शिक्षा, सम्मान और सुरक्षा को प्रतिबद्ध सरकार, अंक–6, कम्युनिकेशन सूचना भवन नई दिल्ली पृष्ठ–31।
23. मुधाल (2004), ए हैंड बुक ऑन डिस्टेंस एडूकेशन, प्रथम संस्करण, एस एस पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृष्ठ–15।

ꕥ★ꕥ

वस्तु एवं सेवाकर का प्रशासनिक विवेचन

डॉ. अनिल कुमार पारीक*

सार :– जीएसटी 'एक राष्ट्र, एक कर, एक बाजार' के उद्देश्य से भारत को एक सच्चे आर्थिक संघ में बदलने का इरादा रखता है। माल और सेवाओं की मुफ्त आवाजाही रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देगी और उपभोक्ताओं को एक व्यापक विकल्प और बेहतर कीमत दे रहा है। यह आर्थिक एकीकरण न केवल आर्थिक विकास को बढ़ावा देगा, बल्कि देश को बेहतर ढंग से बाँध देगा। इससे देश के बिक्री कर प्रशासन में भी आमूल चूल परिवर्तन देखा गया है। भारी मात्रा में नए पदों का सृजन हुआ है। यह एक ऐसा विचार था जिसका समय आ गया है और वह संवर्धित नहीं होगा बल्कि केंद्र और राज्यों द्वारा प्रदर्शित सहयोग की भावना के लिए होगा। दरअसल, भारत में जीएसटी की अपनी एक अवधारणा है और ये अधिनियमन और कार्यान्वयन 'सहकारी संघवाद' का एक बेहतर उदाहरण है, ये इसलिए भी खास है क्योंकि भारत अद्वितीय चरित्र व विविधता में एकता' के साथ जाना जाता है । भारत में इस कर को लागू हुए 5 साल हो गए है, कोविड महामारी की वजह से देश को इसका पूरा लाभ नहीं मिल पाया है। हाल में 2022 के केंद्रीय बजट में जी एस टी में कुछ और आवश्यक सुधार किए गए है। आगे चलकर यह केंद्र राज्य में प्रभावी सुधार हेतु मार्ग प्रशस्त करेगा।

शब्द संक्षेप :– करारोपण, रिटर्न, इनपुट टैक्स क्रेडिट, परिषद्, बिक्री कर, वेट।

परिचय :– अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वप्रथम फांस ने 1954 में (जीएसटी) वस्तु एवं सेवा कर सबसे पहले लागु किया। बाद में 1986 में न्यूजीलैण्ड ने लागू किया। कनाडा में चालू निर्माण एवं बिक्री कर के स्थान पर 1991 में वस्तु एवं सेवा कर लागू किया। आस्ट्रेलिया ने वर्ष 2000 में फेडरल होलसैल टैक्स की जगह वस्तु एवं सेवा कर लागू किया। भारत में इसे 01.07.2017 से लागू किया। इस समय तक विश्व में जीएसटी 160 से भी अधिक देशो द्वारा लागू कर चुके थे।

भारत में वर्ष 2000 में पहली बार अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने वस्तु एवं सेवा कर लागू करने का सुझाव दिया। 2004 में विजय एल. केलकर की अध्यक्षता में गठित केलकर टास्क फोर्स ने अपने सुझाव दिये कि भारत में वर्तमान कर ढांचे में अनेक प्रकार की विसंगतियां हैं जो वस्तु एवं सेवा कर इन्हें दूर किया जा सकता है। इसके बाद वित्त मंत्री पी चिदम्बरम ने केन्द्रीय बजट 2007–2008 का पेश करते समय घोषणा की गई कि देश में 01.04.2010 से जीएसटी लागू किया जाएगा। लेकिन राजनीतिक व्यवस्थाओं के कारण इसे लागू करने के लिए निराशा के बादल मण्डराते ही रहे। 2014 में देश में राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक गठबंधन की सरकार बनने पर जीएसटी का मुद्दा चर्चा में आने लगा और सरकार ने संविधान 122 वां संशोधन बिल 2014 जीएसटी के संबंध में लोकसभा में प्रस्तुत किया। जीएसटी बिल को लोकसभा द्वारा 06.05.2015 तथा राज्यसभा द्वारा 03.08.2016 को पारित किया गया और 08.08.2016 को राष्ट्रपति की स्वीकृति मिलने पर 101 वां संशोधन अधिनियम 2016 बना जिसे सम्पूर्ण भारत में जीएसटी पर 12.04.2017 को अधिनियम बना और 01.07.2017 से लागू किया गया। वस्तु एवं सेवा कर एक अप्रत्यक्ष कर है जो इस अधिनियम के अनुसार पूरे भारत में समान दरो से लगाया जाता है। [1] जीएसटी से पूर्व देश में कई अप्रत्यक्ष कर प्रचलन में थे, जैसे केन्द्रीय विक्रय कर, राज्य वैट, उत्पाद शुल्क, सेवा कर आदि प्रमुख अप्रत्यक्ष कर थे। जीएसटी लागू होने के बाद किसी एक वस्तु या सेवा का विक्रय सेवा प्रदान करने पर सभी राज्य सरकारें एक समान दर से जीएसटी लगाने

***सहायक आचार्य– लोक प्रशासन, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत।**

पर पाबंद होंगी। इसलिए जीएसटी कर का प्रचार करते समय इसके लिए एक राष्ट्र एक कर का नारा दिया।

वस्तु एवं सेवा कर की आवश्यकता :– पुरानी अप्रत्यक्ष कर प्रणाली VAT में वस्तु एवं सेवाओ पर अन्तिम उपभोक्ता तक पहुंचने के पूर्व जिस स्तर पर भी कर लगता उसे वस्तु या सेवा की लागत में जोड़ लिया जाता है, जिससे उसकी कीमत में वृद्धि होती जाती और उसका भार अन्तिम उपभोक्ता को ही वहन करना पड़ता था। हमारे देश में राज्यों की भौगोलिक स्थितियां भिन्न–भिन्न होने के कारण कुछ राज्यों में उत्पादन/निर्माण अधिक होता है, या खनिज पदार्थों की उपलब्धता अधिक होती है तथा कुछ राज्यों में वस्तुओं का उत्पादन/निर्माण नहीं होता है ये उपभोक्ता राज्य कहलाते हैं।[2] उत्पादक राज्य से माल दूसरे राज्य में जाने पर वह राज्य केन्द्रीय विक्रय कर की दर अधिक लगाने का प्रयास करेगा इसी प्रकार से उपभोक्ता राज्य की सरकार माल विक्रय पर VAT दर अधिक लगाने पर अधिक राजस्व प्राप्त करने का प्रयास करेगी अतः दोनों ही परिस्थितियों में कर भार उपभोक्ता पर पडेगा। जिससे वस्तुएं मंहगी प्राप्त होगी।

कर नियमों में पारदर्शिता नहीं होने के कारण इनपुट कर जमा का समायोजन नहीं होता जैसे केन्द्रीय विक्रय कर के संबंध में इनपुट कर जमा का प्रावधान नही है तथा उत्पाद शुल्क के संबंध में कर जमा का प्रावधान है परन्तु यह केवल उत्पाद शुल्क के संबंध में ही है। राज्य VAT कर से इसकी जमा नहीं ली जा सकती है। इसी प्रकार VAT कर की इनपुट कर जमा उत्पाद शुल्क के कर से नही ली जा सकती है इससे उपभोक्ता को राहत नहीं मिलती । देश में अप्रत्यक्ष कर अलग–अलग सरकारी महकमा की प्रशासन व्यवस्था अलग–अलग होने के कारण प्रशासनिक व्ययों के कारण कीमत में वृद्धि होती है जिसे उपभोक्ता को ही वहन करना पड़ता है।

कर चोरी एवं काले धन पर अंकुश नहीं :– कर चोरी व काले धन की समस्या चिरकाल से है तथा इसे दूर करने के लिए सरकार भी समय– समय पर प्रयास करती है लेकिन कोई ठोस सार्थक परिणाम सामने नहीं आये। राजनेता, सरकारी कर्मचारी, अधिकारी, व्यापारी एवं उपभोक्ता कोई भी इसके प्रति गम्भीर एवं उत्तरदायी नहीं है। जैसे ग्राहक कहता है कि कीमत कम कर दो, हमें बिल नहीं चाहिए। । इसी प्रकार कर्मचारी कहता है– सारा काम ठीक से करो हम कहां जायेंगे, हमें तो हमारा हिस्सा चाहिए। इसी प्रकार से राजनेताओं को चुनावी खर्च के लिए वसूली चाहिए तो उन्हें व्यापारियों को छूट देनी पड़ती है तथा व्यापारी अपने लाभ को बढ़ाता है अतः कुछेक अपवादस्वरूप छोडकर लोग कर चोरी एवं काले धन के भागीदार होते हैं।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा में कठिनाई होना :– देश के राज्यों में भिन्न–भिन्न अप्रत्यक्ष करों के कारण देश में निर्मित वस्तुएं महंगी होगी तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में दूसरे देशों के मुकाबले मंहगी वस्तुएं बेचने में परेशानी आती है। [3] तथा दूसरे देशों में वस्तुएं सस्ती होने पर उन्हें आसानी से बाजार मिल जाता है। इससे देश के उद्योगों को नुकसान होता है। चीन, जापान, स्विजरलैण्ड आदि देशों का माल कम कीमत पर मिलने के कारण हमारी सरकार को निर्यात कर हटा कर या आयात कर की दर ऊँची करके उद्यमियों की मदद करनी पड़ती है। ताकि वे प्रतिस्पर्धा में टिक सकें।

वस्तु एवं सेवा कर के लाभ/सफलताएं :– जीएसटी वस्तु एवं सेवाकर का लागू होना भारत देश के लिए सुखद गौरव की बात है. चूंकि उससे अप्रत्यक्ष कर ढांचे में महत्वपूर्ण सुधार से केन्द्र, राज्य सरकार राजनैतिक नेताओं, उद्योगपतियों एवं उपभोक्ताओं आदि द्वारा एकसमान कर व्यवस्था होने पर सभी हितधारकों, सरकारों, उद्योग एवं व्यापार जगत एवं उपभोक्ताओं को कम कीमत पर वस्तु एवं सेवाओं का मिलने पर सुखद अनुभव प्राप्त होगा माल एवं सेवाओं की लागत में कमी होगी। आर्थिक विकास में तेजी

से वृद्धि होगी तथा वस्तु एवं सेवाएं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा का सामना करने में मजबूत स्थिति में होगी।[4]

उपभोक्ता को कर भार में कमी होगी :– देश में जीएसटी लागू होने से पहले केन्द्र व राज्य सरकारें अनेक प्रकार के अप्रत्यक्ष कर लगाये जाते थे।[5] जो वस्तु एवं सेवा की लागत में जोड़ने से लागत में वृद्धि होती है तथा इनकी बिक्री कर पर कर की वसूली करने पर कर की गणना होती थी। इस कारण उपभोक्ता को करो का भार अधिक वहन करना पड़ता था। इनमें से अनेक करों के संबंध में कर जमा लाभ भी नहीं मिलता था। परन्तु जीएसटी में आपूर्ति के प्रत्येक स्तर पर कर जमा का लाभ मिलने के कारण अब कर पर कर की गणना नहीं होती है।

विभिन्न प्रकार की अप्रत्यक्ष कर एवं दोहरी करारोपण का स्वतः समाप्त होना :– सरकारों द्वारा जीएसटी पूर्व हमारे देश में केंन्द्र एवं राज्य पर विभिन्न प्रकार के कर लगाये जाते थे। जिससे केन्द्रीय बिक्री कर, उत्पाद राज्य वैट, परिवहन भाडे पर सेवा कर प्रवेश माल कर चूंगी आदि कर माल पर लगाये जाते थे जिन्हें लागत में शामिल कर लिया जाता है। जीएसटी में इन सभी करों को एक करके केवल वस्तु एवं सेवा कर में शामिल कर दिया गया तथा इस कर की दर पुराने समान करो के योग की तुलना में कम हो गयी।[6] साथ ही इस कर की दर समान रूप से पूरे देश में माल एवं सेवाओं दोनो पर लागू करने पर विवादास्पद की स्थिति नहीं आयेगी तथा व्यापार करने में सुविधा होगी ।

देश में एक समान राष्ट्रीय बाजार का निर्माण :– वस्तु एंव सेवा कर जीएसटी की दरें सम्पूर्ण देश में एकसमान होंगी तथा एकसमान प्रक्रिया होने के कारण व्यापार जगत में आने वाली बाधाएं स्वतः दूर हो जायेंगी तथा देश में एकसमान बाजार प्रक्रिया होगी। जिससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा को बल मिलेगा।

वस्तु एवं सेवा की कीमत कम होने से विदेशी बाजार प्रतिस्पर्धा में सक्षम :– वस्तु एवं सेवा कर लागू होने से अनेक अप्रत्यक्ष करो का समाप्त होने पर वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमत में कमी होगी साथ ही नौकरशाही, लालफीताशाही की समस्याओं में कमी आयेगी। जिससे उत्पादन लागतो में कमी होगी कीमतो में कमी आने से हमारे देश का माल व सेवाओं का अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा में मजबूती आयेगी। जिससे विदेशी बाजार में जगह मिलेगी। और सरकार को आयात निर्यात करों में परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं होगी। इससे हमारे देश में वस्तुओं के निर्माण में वृद्धि होगी तथा केन्द्रीय सरकार की मेक इन इण्डिया पहल को प्रोत्साहन एवं ताकत मिलेगी।

आम जनता के लिए कुल कर भार में कमी :– देश में वस्तु एवं सेवा कर जीएसटी से पूर्व अनेक प्रकार के अप्रत्यक्ष करों का भार आम जनता को वहन करना पडता था। जनता को क्रय करने पर केवल बिक्री कर का ही भुगतान करने पर पता लगता था। लेकिन उस माल में अनेक अप्रत्यक्ष करों का पता ही नहीं चलता था। जीएसटी की दर अधिक लगती है लेकिन वस्तु स्थिति का पता लगने पर कई अप्रत्यक्ष दरों को शामिल करने पर जीएसटी की दरें कम हो जाती हैं तथा वस्तुएं सस्ती कीमत पर मिलती है।

सरकारी राजस्व अधिक प्राप्त होना :– वस्तु एवं सेवा कर में उपभोक्ता द्वारा कर भार में कमी होने पर सरकारी राजस्व में कमी होने पर कैसे वृद्धि होगी हास्यापद लगता है लेकिन वस्तु स्थिति यही है कि केन्द्र व राज्य सरकारों की राजस्व में वृद्धि होगी। जैसे ही कर का विस्तृत क्षेत्र होगा जो वस्तु व्यक्ति अब तक वँचित रहते थे कर के दायरे में आने से राजस्व में वृद्धि होगी। देश विदेश में मांग में वृद्धि होने पर निर्माण व उत्पादन में वृद्धि होगी सेवाओं की आपूर्ति बढ़ेगी और सरकारी राजस्व की प्राप्ति में इजाफा होगा। जीएसटी से कर चोरी में कमी होगी और सरकारों को अधिक राजस्व मिलेगा।

प्रशासन सुगम तथा खर्चों में कमी होगी :– वस्तु एवं सेवा कर जीएसटी कर कानून में पारदर्शिता डिजिटल एवं इलेक्ट्रॉनिक साधनों द्वारा बिल बनता है, रिटर्न भरनी पड़ती है। सभी दस्तावेजों का ऑनलाइन ट्रांजेक्शन हो जिससे प्रशासन को कार्य में आसानी होगी और खर्चा में भी कमी आयेगी। कर अधिकारित व्यापारियों के मध्य व्यक्तिगत संपर्क में कमी आने से भी करो को चुकाने में मन स्थिति बदलाव आयेगा तथा स्वकर निर्धारण प्रणाली को लागू करने से भी कर प्रशासन सुगन सुखद एवं सुविधाजनक रहेगा।

वस्तु एवं सेवा कर में इनपुट टैक्स क्रेडिट का प्रोविजन :– जीएसटी में इनपुट टैक्स क्रेडिट का इजाफा केवल रजिस्टर्ड व्यापारी को ही मिलता है। पंजीकृत व्यापारी जब वस्तु या सेवाओं की आपूर्ति करता है तो आपूर्ति प्राप्त करने वाले से सीजीएसटी, एसजीएसटी या आईजीएसटी (जैसी भी स्थिति हो) वसूल करेगा। इसी तरह से जब उसे माल या वस्तुओं की आपूर्ति होगी तो वह सीजीएसटी, एसजीएसटी या आईजीएसटी का भुगतान करेगा । इनपुट कर जमा का अभिप्राय पंजीकृत व्यापारी द्वारा वसूल किये गये जीएसटी में से चुकाये गये कर का समायोजन करना है। तथा जीएसटी की राशि सरकारी कोष में जमा करवा देना है। जीएसटी प्रावधान में यह भी है। कि कौनसे कर की इनपुट कर जमा कौन–कौनसे करो द्वारा होगी या उनके उपयोग का क्रम क्या होगा। एक कर की दूसरे कर से इनपुट कर जमा का समायोजन संबंधी प्रावधान निम्न है।[7]

1. सीजीएसटी का समायोजन सीजीएसटी एवं आईजीएसटी से किया जा सकता है।
2. एसजीएसटी का समायोजन एसजीएसटी एवं आईजीएसटी से किया जा सकता है।
3. आईजीएसटी का समायोजन आईजीएसटी सीजीएसटी एसजीएसटी से इसी क्रम में किया जा सकता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि सीजीएसटी का समायोजन एसजीएसटी से नहीं किया जा सकता है। इसी प्रकार एसजीएसटी का समायोजन सीजीएसटी से नहीं किया जा सकता है।

छोटे व्यापारियों को पंजीकरण से मुक्ति :– जीएसटी की सीमाओ में आने वाली वस्तुएं एवं सेवाओं की आपूर्ति करने वाले व्यापारी का पंजीकरण करवाना होता है। साथ ही यह भी प्रावधान है कि कोई व्यापारी का एक वित्तीय वर्ष मे कुल आवर्त 40 लाख या 20 लाख रुपये/10 लाख (उस राज्य में जैसा भी लागू हो) से अधिक नहीं होने पर पंजीकरण करवाना आवश्यक नहीं है।

टैक्स रेट ऑफ जीएसटी :– जीएसटी काउंसिल ने जीएसटी की निम्न 4 दरे निर्धारित की है–

1. Revenue Nuetral Rate (RNR)
2. Product/service which are basic necessities
3. Essential Goods
4. Demerit and Luxury Good

उपरोक्त जीएसटी की दरे राज्य के भीतर की आपूर्ति करने पर सीजीएसटी एवं एसजीएसटी दोनो के लिए 50 प्रतिशत सीजीएसटी व 50 प्रतिशत एसजीएसटी है। राज्य के भीतर की आपूर्ति के लिए जीएसटी की अधिकतम दर 40 प्रतिशत तक हो सकती है जिसमें केन्द्र व राज्य को आधा आधा हिस्सा प्राप्त होगा। अन्तर्राज्यीय आपूर्ति पर भी जीएसटी की दर अधिकतम 40 प्रतिशत हो सकती है। सीजीएसटी की दरो का निर्धारण जीएसटी काउंसिल की सिफारिश पर केन्द्र व राज्य सरकारो द्वारा तथा आईजीएसटी की दरो का निर्धारण केन्द्र सरकार द्वारा किया जायेगा। राज्य सरकारो ने काउंसिल से दरों में कम ज्यादा करने का विकल्प ले रखा है।

एक कर का निर्धारण :– जीएसटी अधिनियम में पंजीकृत प्रत्येक व्यापारी द्वारा देय कर का निर्धारण स्वयं करेगा/निर्धारित करने के बाद ही विवरणी प्रस्तुत करनी होती है।

जीएसटी वस्तु एवं सेवा कर की असफलता, दोष, कठिनाई एवं हानियां :–

1. जीएसटी की कार्यविधि केवल कंप्यूटर पर आधारित है। सभी व्यापारियों द्वारा बिल व्यवस्था रिटर्न प्रस्तुत करना एवं कर जमा संबंधी सम्पूर्ण कार्य ऑनलाइन कम्प्यूटर द्वारा किया जाता है लेकिन अधिकतर व्यापारी इस कार्य से अनभिज्ञ है।

2. **जीएसटी में इनपुट कर क्रेडिट के प्रावधान –** विपरित प्रभार तंत्र के आधार पर इसकी कार्यप्रणाली जटिल है। इन्पुट टैक्स क्रेडिट में व्यापारी को पूरा हिसाब रखना होता है तथा इसका मिलान आपूर्तिकर्ता द्वारा प्रस्तुत विवरणों से मिलान करने पर ही समायोजन किया जाता है। जीएसटी में व्यापारी का सभी अकाउंट्स व निजी जानकारियों कम्प्यूटर में रखी जाती हैं. कई बार खराब नियति वालों द्वारा कम्प्यूटर के डेटा को हैक कर लिया जाता है तो व्यापारी की सभी जानकारी सार्वजनिक हो सकती है या इसका दुरुपयोग किया जा सकता है।

3. जीएसटी की ऊँची दरों के कारण अधिक कर भार :– सरकार का कहना है कि जीएसटी लागू होने पर कई प्रत्यक्ष करों को समाप्त कर दिया जाएगा जिससे कर की दरें कम होगी तथा अंतिम उपभोक्ता को वस्तुएँ कम कीमत पर मिलेगी। परन्तु वस्तुस्थिति इसके विपरीत प्रतीत हो रही है क्योंकि जीएसटी में वस्तुओं का वर्गीकरण करने में जो वस्तु जिस दर के वर्ग में होनी चाहिए उस वस्तु को अधिक दर वाली वस्तुओं के वर्ग में रखा गया अर्थात जीएसटी दर वस्तुओं का वर्गीकरण विवेकपूर्ण नहीं किया गया। जो वस्तु 4 से 5 प्रतिशत वर्ग में आती उसे 12 प्रतिशत की दर में तथा जो वस्तु 14 से 15 प्रतिशत की दर में आती उसे 18 या 28 प्रतिशत दर वाले वर्ग में रखा गया। इसी प्रकार से सेवा दर भी 15 प्रतिशत के स्थान पर 18 प्रतिशत रखा गया जिससे उपभोक्ता को अधिक कर चुकाना पड़ता है।

4. वस्तु एवं सेवा कर (GST) में प्रतिवेदन/विवरणी/रिटर्न की संख्या अधिक होने पर परेशानी :– जीएसटी में व्यापारी को प्रत्येक माह में तीन विवरणी/प्रतिवेदन बनाकर जमा करवाना होता है तथा वर्ष के अंत में एक विवरणी और देना पड़ता है। इस प्रकार से अधिकांश व्यापारियों को 37 विवरणी बनाकर जमा करवाना पड़ता है जिससे एक व्यापारी को इन्हें बनाने में ही अपना अधिकांश समय देना पड़ता है।[8] विवरणी के लिये सी ए के माध्यम से ही जमा करने की प्रक्रिया है जिससे सी ए की फीस ज्यादा होने पर व्यापारी को सीधा नुकसान होता है। पिछले कुछ समय से सरकार ने इस ओर ध्यान दिया है और इन विवरणियों की संख्या में कमी कर व्यापारियों को राहत दी गई है।[9]

5. उत्पादन एवं निर्माण वाले राज्यों को एक समान कर व्यवस्था होने पर आर्थिक नुकसान होना :– देश के कुछ राज्यों में उत्पादन अधिक होता है. कुछ राज्यों में खनन का कार्य अधिक होता है इसके विपरीत कुछ राज्य ऐसे है जहां उत्पादन/निर्माण बहुत कम होता है और उपभोग अधिक होता है। लेकिन जीएसटी में पूरे देश में एक समान कर व्यवस्था होने के कारण निर्माण/उत्पादन दूसरे राज्यों को निर्यात करने पर कोई अतिरिक्त कर प्राप्त नहीं होता। इसके लिये संघ राज्यों द्वारा अपनी सहमति दी गई लेकिन कई राज्यों द्वारा समय समय पर अपना विरोध प्रकट करते रहते हैं। इससे राज्यों को होने वाली हानि की क्षतिपूर्ति हेतु केन्द्र सरकार द्वारा अगले 5 वर्षो के लिये आश्वासन दिया गया है।[10]

6. कम्प्यूटर सिस्टम की सुरक्षा का खतरा :– जीएसटी प्रणाली कम्प्यूटर वेबसाइट से ऑनलाइन जुड़ी हुई है यदि इस सिस्टम में वायरस से कोई खराबी हो जाए तो सभी व्यापार जगत की गतिविधियों में अवरोध का खतरा हो सकता है।

7. कर चोरी एवं भ्रष्टाचार पर नियंत्रण में कमी :— जीएसटी लागू होने पर माना जाता था कि अब कर चोरी व भ्रष्टाचार पर नियंत्रण होगा लेकिन ऐसा संभव नहीं लगता। बिना बिल के माल का क्रय विक्रय पूर्व की भांति हो रहा है तथा कई अधिकारी व्यापारियों से रिश्वत लेते हुए ट्रेप हो रहे हैं। लेकिन ये जीएसटी का दोष नहीं है।

जीएसटी के उपरोक्त दोषों को सरकार द्वारा समय समय पर दूर करने का प्रयास किया जाता है। जीएसटी को सफल बनाने हेतु सरकार द्वारा इसे युक्तिसंगत व सरल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। जीएसटी का मुख्य उद्देश्य पूरे देश में एक समान कर प्रणाली लागू करना है इससे व्यापारी वर्ग पर विभिन्न राज्य एवं केन्द्रीय करों के अनावश्यक बोझ को कम कर दिया गया है और हितधारकों व उपभोक्ता के लिये माल सस्ता कर दिया है। जीएसटी से अधिक पारदर्शिता और भ्रष्टाचार को खत्म करके कराधान प्रणाली को बढावा मिलेगा। जीएसटी को इस प्रकार से बनाया गया है कि जिससे व्यापारी वर्ग व उपभोक्ता दोनों को फायदा हो भारत देश को वस्तु एवं सेवा कर प्रणाली की आवश्यकता थी। जीएसटी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिष्ठा बनाती है। इसके अलावा छोटे उद्यमियों व अन्य संगठित क्षेत्र को मुख्य धारा में लाने का प्रयास करता है जो देश को एक बेहतर अर्थव्यवस्था की ओर ले जाने का प्रयास करेगा।

निष्कर्ष :— ई—वे बिल की शुरुआत के साथ—साथ नकली चालान पर कार्रवाई करने से जीएसटी राजस्व में बढ़ोतरी करने में मदद मिली है, जिसकी या तो अब तक चोरी की जा रही थी या कम राजस्व दर्ज किया जा रहा था। ई—चालान प्रणाली करदाताओं को पूरी तरह से स्वचालित अनुपालन व्यवस्था प्रदान करती है, जिसमें कर देनदारियों की गणना और इनपुट टैक्स क्रेडिट का मिलान आसनी से किया जा सकता है।

आयात पर क्रेडिट उपलब्धता हेतु सीमा शुल्क पोर्टल को जीएसटी पोर्टल से जोड़ने, इनपुट टैक्स क्रेडिट के मिलान हेतु उचित साधन उपलब्ध कराने, चालान रजिस्ट्री पोर्टल के निर्बाध संचालन हेतु रिफंड प्रक्रिया के स्वचालन में वृद्धि जैसी विभिन्न पहलों ने कर अनुपालन को आसान बनाने में मदद की है। 2020— 2021 में जीएसटी परिषद ने कानून में सुधार किया, जटिल मुद्दों पर स्पष्टीकरण जारी किया, जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाया और कोविड—19 महामारी से निपटने के लिये छूट की शुरुआत की, जो कि जीएसटी परिषद की बेहतरीन कार्यात्मक संरचना का परिणाम है। देखा जाए तो भारत ने 'वस्तु एवं सेवा कर' जैसी सर्वाधिक जटिल कर परिवर्तन परियोजनाओं में से एक को सफलतापूर्वक लागू कर दुनिया के लिये एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत किया है।

सन्दर्भ—सूची :—

1. वस्तु एवं सेवा कर प्रो. सी. के. शाह, प्रो. एस. के. मंगल।
2. वस्तु एवं सेवा कर एन. एल. चौधरी, प्रो. एस. सी. बरडिया, डॉ. सीमा अग्रवाल, डॉ. सीमा बलदुआ।
3. जीएसटी एवं कस्टम कानून श्रीपाल सकलेछा, अनिल सकलेछा।
4. मार्गदर्शिका जीएसटी राकेश कुमार।
5. माल एवं सेवा कर डॉ. एच. सी. मेहरोत्रा, प्रो. वी. पी. अग्रवाल।
6. अधिसूचना सं 3/2017 व दृष्टि इंस्टीट्यूट ऑफ जनरल साइन्स पत्रिका।
7. https:/www-indiafilings-com.learn.gst.
8. https:/www-pwc-in/assets/pdfs/publications/2017/pwcreportinginbrief&impact&of&gst&on&ind&as&reporting.
9. कपूर वर्मा, वस्तु एवम सेवाकर अधिनियम,कंटेम्परेरी इशू इन कॉमर्स एन्ड मैनेजमेंट, 23—29, उदयपुर, 202।
10. टाइम्स ऑफ इंडिया, समाचार पत्र।

प्राथमिक-विद्यालयों में कार्यरत शिक्षामित्रों एवं सहायक अध्यापकों की शैक्षणिक-दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन

इन्द्र प्रकाश सतोईया*
डॉ. दीप्ती कुमारी**

सारांश :— प्रस्तुत शोध अध्ययन में बुन्देलखण्ड मण्डल के जनपद झाँसी व ललितपुर में स्थित बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित **प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षामित्रों तथा सहायक अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन** करना था। न्यादर्श के रूप में जनपद झाँसी व ललितपुर के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने वाले कुल 600 शिक्षकों (300 सहायक अध्यापक व 300 शिक्षामित्र) का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु **बी. के. पासी और श्रीमती एम. एस. ललिथा** द्वारा निर्मित **'सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी'** का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। विश्लेषणोंपरान्त यह निष्कर्ष पाये गये कि :— बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष एवं महिला सहायक अध्यापकों के शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। पुरुष एवं महिला शिक्षामित्रों के शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। पुरुष सहायक अध्यापक एवं पुरुष शिक्षामित्रों के शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर पाया गया। महिला सहायक अध्यापक एवं महिला शिक्षामित्रों के शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर पाया गया।

1.0 प्रस्तावना :— भारत की शैक्षिक व्यवस्था में शिक्षा को एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है, जो निरन्तर गतिशील रहती है तथा मनुष्य की अर्न्तनिहित शक्तियों का विकास, उनका परिमार्जन करके उसका सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा प्रक्रिया का प्रमुख स्तम्भ अध्यापक होता है पुरातन समय में शिक्षण कार्य को व्यवसाय के रूप में नहीं, अपितु सेवाभाव के रूप में किया जाता था, लेकिन आधुनिक समय में शिक्षण कार्य सेवा कार्य न रहकर एक व्यवसाय (पेशे) के रूप में परिवर्तित हो गया, तो यह आवश्यक हो जाता है, जो भी व्यक्ति शिक्षण कार्य को कर रहा हो वह शिक्षण कार्य में दक्षता रखता हो, क्योंकि व्यक्ति अपने कार्य में दक्षता प्राप्त नहीं करता है, तो वह कभी भी अपने नैतिक दायित्व एवं भूमिका के साथ न्याय नहीं कर पायेगा। विद्यालय के विकास में शिक्षकों की शिक्षण दक्षता तथा उनकी कार्य संतुष्टि समान रूप से प्रभाव डालती है।

आधुनिक समय में व्याप्त शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों तथा पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव को देखते हुये वर्तमान में उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में सहायक अध्यापक तथा शिक्षामित्र शिक्षण कार्य कर रहे हैं। दोनों की पारिवारिक पृष्ठभूमि में काफी अंतर है। शिक्षामित्र जहां अधिकतर ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले हैं, वहीं सहायक अध्यापकों की पारिवारिक पृष्ठभूमि शहरी है। दोनों की शैक्षिक पृष्ठभूमि में काफी अंतर है। सहायक अध्यापक जहां पूर्णरूप से उच्च शिक्षित तथा प्रशिक्षित होते हैं, वही शिक्षामित्र अपेक्षाकृत कम प्रशिक्षित होते हैं। यदि शिक्षण दक्षता की

***शोध छात्र, शिक्षा संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, (उ0प्र0)।**
**** सहायक आचार्य, शिक्षा संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, (उ0प्र0)।**

बात की जायें तो इसका सीधा सम्बंध शैक्षिक प्रक्रिया के कार्य कौशलों में सिद्ध हस्त (दक्ष) होने से है। वही व्यक्ति शिक्षण में अपने नैतिक दायित्वों एवं भूमिका के उचित ढ़ंग से निर्वाहन कर सकता है, जो अपने पेशे से सम्बन्धित सभी कौशलों में निपुण हो। प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य कर रहे सहायक अध्यापकों एवं शिक्षामित्रों की शिक्षण पेशे में शिक्षण दक्षता कैसी है? को जानने के लिए शोध कार्य को करने की आवश्यकता महसूस हुई और **प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षामित्रों तथा सहायक अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन** पर शोध कार्य किया।

1.1 शोध अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये–

1. पुरुष एवं महिला सहायक अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. पुरुष एवं महिला शिक्षामित्रों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सहायक अध्यापक पुरुष एवं शिक्षामित्र पुरुष की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सहायक अध्यापक महिला एवं शिक्षामित्र महिला की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.2 शोध अध्ययन की परिकल्पनायें–

1. पुरुष एवं महिला सहायक अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. पुरुष एवं महिला शिक्षामित्रों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. सहायक अध्यापक पुरुष एवं शिक्षामित्र पुरुष की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सहायक अध्यापक महिला एवं शिक्षामित्र महिला की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.3 शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–

1.3.0 प्राथमिक विद्यालय– उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित वे सरकारी विद्यालय जिनमें बच्चों को कक्षा 1 से 5 तक की शिक्षा प्रदान की जाती है।

1.3.1 शिक्षामित्र– अध्यापक, जो प्राथमिक विद्यालय में शिक्षण कार्य हेतु अस्थाई तौर पर नियुक्त किए गए , जिन्होंने बी.एड. एवं बी.टी.सी. का कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया था। किंतु वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दूरस्थ माध्यम से दो वर्षीय बी.टी.सी. का प्रशिक्षण चरणबद्ध तरीके से दिया गया एवं स्थाई समायोजन हेतु प्रयास किया जा रहा है।

1.3.2 सहायक अध्यापक– अध्यापक, जो बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. का प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए हैं एवं प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक पद पर कार्यरत हैं, जो विद्यालय में छात्रों को किसी भी समस्या के साथ सीखने–सिखाने की अन्तःक्रिया में लिप्त रहता है तथा अन्तःक्रिया के माध्यम से उसमें केन्द्रीय परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। इन्हें सरकार द्वारा वेतन तथा अन्य सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।

1.3.3 शिक्षण दक्षता– शिक्षण दक्षता प्रभावशीलता को सुनिश्चित करने वाली प्रमुख कसौटी है, शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य अंग है ज्ञान, योग्यता, अभियोग्यता व कौशल जो अंततः छात्रों के उपलब्धि को सुनिश्चित करता है, अतः शिक्षण को शिक्षक के ऐसे निरीक्षणीय व्यवहार को मान सकते हैं, जो छात्र में वांछित परिणाम लाता है। शिक्षण दक्षता का तात्पर्य विभिन्न

शैक्षणिक कौशलों के प्रभावी उपयोग से लगाया जा सकता है। शिक्षण प्रक्रिया को सुचारू रूप से संपन्न करने में शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों की अपनी–अपनी अहम् भूमिका है।

1.4 परिसीमांकन–

प्रस्तुत शोध कार्य का भौगोलिक क्षेत्र झाँसी मण्डल के जनपद झाँसी व ललितपुर में स्थित बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सहायक अध्यापकों एवं शिक्षामित्रों तक सीमित है।

1.5 न्यादर्श–

शोध अध्ययन में बुन्देलखण्ड मण्डल के जनपद झाँसी व ललितपुर में स्थित बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 300 सहायक अध्यापकों (150 पुरुष सहायक अध्यापक एवं 150 महिला सहायक अध्यापक) एवं 300 शिक्षामित्रों (150 पुरुष शिक्षामित्र एवं 150 महिला शिक्षामित्र) का चयन न्यादर्श के रूप में **साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि** द्वारा किया गया।

1.6 शोध का प्रकार व शोध विधि–

प्रस्तुत शोध का प्रकार **वर्णनात्मक** व शोध में **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

1.7 शोध उपकरण–

शोधकर्ता ने आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु **बी. के. पासी और श्रीमती एम. एस. ललिथा** द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण **'सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी'** का प्रयोग किया गया।

1.8 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी–

शोधकर्ता ने प्रदत्तों के विश्लेषण एवं विवेचन करने के लिये **मध्यमान, मानक विचलन** एवं **क्रांतिक अनुपात** सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है।

1.9 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं उनकी विवेचना–

H_{01} पुरुष एवं महिला सहायक अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक– 01

क्र.सं.	प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर 0.05
1	पुरुष सहायक अध्यापक	150	86.5	20.54	**0.77**	**असार्थक**
2	महिला सहायक अध्यापक	150	84.7	19.81		

सारणी क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 0.77 है। जो मुक्तांश 298 पर सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.97 से कम हैं। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। और कहा जा सकता है कि पुरुष एवं महिला सहायक अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{02} पुरुष एवं महिला शिक्षामित्रों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक– 02

क्र.सं.	प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर 0.05
1	पुरुष शिक्षामित्र	150	81.3	22.24	**0.46**	**असार्थक**
2	महिला शिक्षामित्र	150	80.1	21.98		

सारणी क्रमांक 02 से स्पष्ट है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 0.469 है जो मुक्तांश 298 पर सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.97 से कम हैं। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। और कहा जा सकता है कि पुरुष एवं महिला शिक्षामित्रों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{03} सहायक अध्यापक पुरुष एवं शिक्षामित्र पुरुष की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक– 03

क्र.सं.	प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर 0.05
1	सहायक अध्यापक पुरुष	150	86.5	20.54	2.10	सार्थक
2	शिक्षामित्र पुरुष	150	81.3	22.24		

सारणी क्रमांक 03 से स्पष्ट है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 2.10 है जो मुक्तांश 298 पर सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.97 से अधिक हैं। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। और कहा जा सकता है कि सहायक अध्यापक पुरुष एवं शिक्षामित्र पुरुष की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है।

H_{04} सहायक अध्यापक महिला एवं शिक्षामित्र महिला की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक– 04

क्र.सं.	प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर 0.05
1	सहायक अध्यापक महिला	150	84.7	19.81	2.15	सार्थक
2	शिक्षामित्र महिला	150	80.1	21.98		

सारणी क्रमांक 04 से स्पष्ट है कि सांख्यिकीय गणना से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 2.15 है जो मुक्तांश 298 पर सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.97 से अधिक है। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। और कहा जा सकता है कि सहायक अध्यापक महिला एवं शिक्षामित्र महिला की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है।

1.10 शोध अध्ययन के निष्कर्ष–

1. बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष एवं महिला सहायक अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। किन्तु पुरुष सहायक अध्यापकों की तुलना में महिला सहायक अध्यापकों में शिक्षण दक्षता कम पायी गयी।
2. बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षामित्रों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। किन्तु पुरुष शिक्षामित्रों की तुलना में महिला शिक्षामित्रों में शिक्षण दक्षता कम पायी गयी।

3. बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष सहायक अध्यापक एवं पुरुष शिक्षामित्रों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर पाया गया। पुरुष सहायक अध्यापकों की तुलना में पुरुष शिक्षामित्रों में शिक्षण दक्षता कम पायी गयी।
4. बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला सहायक अध्यापक एवं महिला शिक्षामित्रों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर पाया गया। महिला सहायक अध्यापकों की तुलना में महिला शिक्षामित्रों में शिक्षण दक्षता कम पायी गयी।

1.11 शैक्षिक निहितार्थ–

शैक्षिक प्रक्रियाओं का मुख्य कर्ता–धर्ता राष्ट्रनिर्माता शिक्षक ही होता है, जो देश की शिक्षा के नियोजित और समन्वित विकास का सर्वाधिक जिम्मेदार व्यक्ति होता है। यदि शिक्षक शैक्षिक प्रक्रियाओं के कार्य में दक्ष व निपुण है, तो वह शैक्षिक प्रक्रियाओं के नैतिक दायित्वों व कर्तव्यों का पालन करने वाला होता है, वह संस्थायें अत्यधिक सामाजिक उद्देश्यों को प्राप्त करने वाली, तथा इन संस्थाओं में अधिगम करने वाले विद्यार्थियों का उत्तम सर्वांगीण विकास सम्भव होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. **Abdullah, Saif Altobi, Muhannad, Anwar, Al-Shboul and Adnan, Salem Al-Doulat (2018).** "Teaching Competencies And Job Satisfaction among Basic Education Teachers", *Journal Of Modern Applied Science*, Vol.13, No.2:140 (URL:https://doi.org/10.5539/mas.v13n2p140.).
2. **Gopinath, K. and Sivakumar, P. (2018).** "Predictor variables of life skills and teaching competencies of prospective students in college of education", *Paripex Indian journal of research*, Vol.VII, Issue XII.
3. **गुप्त, संतोष कुमार (2021) :** "माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण दक्षता एवं उनकी अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता का एक अध्ययन", पी–एच. डी., शिक्षाशास्त्र, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ. प्र.)। http://hdl.handle.net/10603/364378
4. **गुप्ता, एस. पी. (2008) :** *''व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ''*, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, 11–यूनीवर्सिटी रोड।
5. **ज्योति, बाला और देव, अमित कुमार (2018)** ''आदिवासी तथा गैर आदिवासी शिक्षकों के अध्यापन दक्षता का अध्ययन'' *International Journal of Advanced Educational Research*, Vol.-3, Issue -2, pp. 582-587, March 2018.
6. **शर्मा, आर0 ए0 (2016) :** *''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया''*, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
7. **शर्मा, आर0 ए0 (2010) :** *''अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी''*, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
8. **सिंह, अरूण कुमार (2011) :** *''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ''*, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास, बंगलो रोड़।
9. **सिंह, अरूण कुमार (2018) :** *''शिक्षा मनोविज्ञान''*, पटना, भारती भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
10. **वर्मा, कविता और अदिल, हितेश्वरी (2018).** "शिक्षकों के व्यावसायिक विकास एवं शिक्षण दक्षता का सहसंबंधात्मक अध्ययन", *Review of research*, Vol 8,Issue 2, November 2018.
11. **सिंह, इन्द्रजीत (2020) :** "सेवारत तथा सेवापूर्व अध्यापकों की शिक्षण दक्षता, विषय वस्तु विश्लेषण योग्यता तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन", पी–एच. डी., शिक्षाशास्त्र, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ. प्र.)। http://hdl.handle.net/10603/311366

समकालीन हिन्दी स्त्री कथा लेखन की विविध छवियाँ

मुम्पा मरबम*

स्त्री लेखिकाओं ने कथा–साहित्य को आधार बनाकर अनेक ऐसी रचनाओं का सृजन किया है जिसमें स्त्री–जीवन की पीड़ाओं और संघर्षों का चित्रण हुआ है। एक स्त्री के द्वारा स्त्री के संसार का खींचा गया शब्दचित्र अधिक प्रामाणिक माना जा सकता है क्योंकि स्त्री–जीवन में आने वाली और व्याप्त कठिनाइयों का अनुभव स्वयं स्त्री लेखिका भी करती है। उसके लेखन का लक्ष्य चमत्कार उत्पन्न करना कदापि नहीं है बल्कि वह अपने लेखन में स्त्री–जीवन के विभिन्न सरोकारों को ही यथार्थ की भट्ठी में पिघला कर तरलता से रूप देती है और एक नया संसार रचती है। स्त्रियाँ साहित्य को अपने सरोकारों का माध्यम क्यों बनाना चाहती हैं, यह मैत्रेयी जी के महत्वपूर्ण कथन में देखा जा सकता है–''मैंने साहित्य की लुकाठी के साथ खड़ा होना चाहा था, क्योंकि इस क्षेत्र में स्त्री–उत्कर्ष की बातें बड़े जोर–शोर से होती हैं। पढ़ाई–लिखाई, अध्ययन–मनन के चलते मनोविश्लेषकों ने स्त्री–पुरुष के मनोभावों और दैहिक सूत्रों के हिसाब से उनका स्वभावगत प्रतिपादन किया है, तो समाज–सुधारकों ने सम्यक व्यवहार और समदृष्टि की बात कह कर गैर–बराबरी को खत्म करना चाहा है। सचमुच ही ये व्याख्याएँ ऐसे शीतल दिलासे हैं कि व्यक्ति अपने जीवनगत तापों का गरल सारी ताकत जुटा कर पी जाए। विषपायिनी नीलकंठी स्त्रियों के समय ने उनसे फिर भी धोखा किया। वे ज्यों–की–त्यों खाली रह गईं। स्वामियों के हाथों में कोड़ा यथावत था। उनकी नंगी पीठें पहले की तरह बेसहारा थीं। फिर कैसे समझ में न आता कि घड़ी का पेंडुलम हिलने से केवल मिनट, घंटा, दिन और रात व्यतीत होते हैं, जानलेवा स्थितियाँ बीतती हैं, न बदलती हैं। उनको बदलने वाला व्यक्ति ही होता है, जो पूरी तरह से अपने समय–कुसमय का अधिष्ठाता है। यहाँ तो स्थिति यह है कि पुरुष संवेदनाओं से आते खुले निमंत्रण पर यदि अपने संवेगों का सामंजस्य बिठाती है तो यह नाजुक क्षण पहले के लिए पौरुष की पताका और दूसरे के लिए समाजघातिनी कुचेष्टा के रूप में आँका जाएगा।''[1] मैत्रेयी पुष्पा जी का प्रस्तुत कथन स्त्री–लेखन की आवश्यकता और सरोकारों को सम्यक तरीके से बयान करता है। जीवन में स्त्री जिन दुःखों की नदी से पार होती, उन्हीं चप्पुओं को कलम बनाकर वह संसार की अन्य स्त्रियों को भी इस वैतरणी से पार लगाना चाहती है। स्त्रियाँ लिखती हैं अपना ही अनकहा दुःख जो दूसरी स्त्री को भी अपना ही दुःख इसलिए प्रतीत होता है क्योंकि उसके जीवन का भी वही रुग्ण और कटु यथार्थ और अनुभव होता है। हिन्दी की भी कथा–लेखिकाओं ने अपने विराट दृष्टि और भोगे हुए सत्य के माध्यम से जो कथा–संसार रचा, उसने हिंदी जगत ही नहीं वैश्विक फलक पर स्त्रियों को प्रभावित किया है। महिला हिंदी कथा–लेखन ने समाज में पाठक–वर्ग के रूप में, आलोचक के रूप में, समाजवैज्ञानिक, शोधकर्ता और सामान्य मानुष के रूप में अनेक हृदयों में बहुत कुछ बदला है और बदलने की सामर्थ्य रखता है। हिन्दी की प्रमुख कथा–लेखिकाओं में अनेक ऐसी कथाकार हैं जिनकी रचनाओं ने पाठकों को गहरे स्तर पर प्रभावित किया और उनमें रूपान्तकारी परिवर्तन किया है। इनमें सर्वप्रमुख हैं–प्रभा खेतान। प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों और कहानियों के चरित्रों और कथावस्तु के माध्यम से समाज में युगान्तकारी बदलाव किए हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री–जीवन के लिए एक मार्गदर्शन दिखाई देता है। उनका एक प्रमुख उपन्यास है–'आओ पेपे घर चलें'। यह उपन्यास विदेशी पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस उपन्यास में उन्होंने प्रभा नामक एक भारतीय स्त्री का चित्रण किया है जो ब्यूटी थेरेपी का कोर्स करने के लिए अमरीका जाती है। प्रभा के चरित्र के माध्यम से प्रभा खेतान ने स्त्रियों को खुद के पैरों पर खड़ा होने के लिए लेखिका ने प्रेरित किया है। कूपमण्डूक और भीरू बने रहने से स्त्रियों के व्यक्तित्व का विकास कभी भी सम्भव नहीं है। जब तक स्त्रियाँ आत्मनिर्भर नहीं होंगी तब तक उन्हें शारीरिक, भौतिक तथा मानसिक आजादी प्राप्त नहीं हो सकती। पुरुष

*** शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वेंकटेश्वर मुक्त विश्वविद्यालय, पापुम पारे, अरूणाचल प्रदेश।**

जाति पर निर्भरता के कारण उन्हें जायज और नाजायज सबकुछ सहना पड़ता है। दुर्भाग्य से आज भी भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है। शिक्षा तथा जागरुकता के अभाव के कारण पितृसत्तात्मक व्यवस्था का अंग होने के कारण उन्हें आत्मनिर्णय से वंचित रहना पड़ा है। मध्यकालीन विचारबोध के कारण स्त्रियों का शोषण और दमन होता रहा है। 'स्त्री को', 'स्त्रियों को' सदैव अपने अतीत से और एक–दूसरे से प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने अतीत के दुःखों की कारा को काटने के लिए तत्पर रहना चाहिए। विकसित या विकासशील प्रायः सभी देशों में स्त्रियों की दशा अत्यंत सोचनीय है। अमरीका प्रवास के दौरान प्रभा ऐसी अनेक अमरीकन स्त्रियों से मिलती है जिनके जीवन में घुटन, तनाव, उबन तथा कुंठा है। उपन्यास में आइलिन, क्लारा ब्राउन, मिसेज डी, मरील और कैथरीन जैसी असंख्य स्त्रियों का दुःख व्याप्त है। आइलिन अपने घर में अपने कुत्ते 'पेपे' के साथ अकेली ही रहती है। वह अपने अतीत के दिनों को याद करके दुःखी होती है। वह अविवाहित प्रभा को रहने के लिए अपने घर में जगह प्रदान करती है। प्रभा विदेश में आर्थिक कठिनाई का सामना भी करती है। वह जब मिसेज चोपड़ा के घर रुकती है तो मिसेज चोपड़ा आर्थिक दृष्टिकोण की बात करती हैं। उनकी बातों से प्रभा स्वयं को अत्यंत असहज अनुभव करती है। उपन्यास में मिसेज डी. का भी वर्णन है जिसका पति क्लारा ब्राउन के प्रेम में पड़कर उसे तलाक देना चाहता है। मिसेज डी. स्वयं को बड़ा दुःखी अनुभव करती हैं। प्रभा को वहाँ खुद को व्यवस्थित करने के लिए दिन–रात मेहनत करनाा पड़ता है। वह मरील के साथ मिलकर काम करती है। मरील का पति उसे छोड़कर जा चुका है। उसके इस कदम से मरील स्वयं को बहुत टूटा हुआ अनुभव करती है। उपन्यास में इन पात्रों का चित्रण कर प्रभा जी ने ऐसी अनेक स्त्रियों का चित्र खींचा है जो भिन्न–भिन्न वर्गों और पृष्ठभूमियों से आती हैं और जिनके अपने निजी सुख–दुःख हैं। प्रायः सभी के दुःखों में एक समानता है। इसे पाठक वर्ग सहज ही प्रेरणा ले सकता है, विशेषकर महिला पाठक वर्ग, कि विरोधाभासी प्रवृत्तियों और परिस्थितियों का सामना कैसे किया जाए। स्त्रियों को सम्बंधों में विचलन, सामाजिक आक्षेपों और अनेक प्रश्नचिह्नों का सामना करना पड़ता है। इस उपन्यास और घटनाओं (उपन्यास में घटित) से प्रेरणा लेकर व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार सजगता, चुनौतियाँ और साहस ला सकता है।

उपन्यास के संदर्भ में प्रख्यात समाजशास्त्री अरविंद जैन लिखते हैं–"विवाह परिवार के विधान और अर्थशास्त्र को समझने व समझाने की दिशा में यह सार्थक और महत्वपूर्ण है।"[2] प्रभा खेतान की रचनाओं से स्त्री जाति भली–भाँति अपने अस्मितामूलक प्रश्नों का सार्थक और संगत समाधान प्राप्त कर सकती है। प्रत्येक स्त्री के जीवन में एक निर्णयात्मक क्षण आता है और उसे सामाजिक रूढ़ियों और आडम्बरों की परवाह किए बिना निर्णय लेना चाहिए। बौद्धिक और शारीरिक दासता दोनों ही भयावह है। स्त्री को दासत्व भाव का परित्याग कर देना चाहिए। शिक्षा तथा संस्कार को अपना अस्त्र बनाकर वह मुक्ति प्राप्त कर सकती है। यदि स्त्री को विद्रोह का मार्ग भी अपनाना पड़े, तो उसे उसके लिए भी तत्पर रहना चाहिए। विधवा विवाह, बाल विवाह, बेमेल विवाह जैसी विसंगतियों को दूर करने के लिए स्त्री को स्वयं भी आगे आना चाहिए, यही प्रभा जी की रचनाओं का मूल कथ्य है। यदि स्त्री आत्मनिर्भर है तो वह अपने जीवन से संबंधित स्वतंत्र निर्णय लेने में समर्थ हो सकती है। उसे अपने शोषण, तिरस्कार और बहिष्कार के विरुद्ध भी संघर्ष करना चाहिए।

कृष्णा सोबती की कथात्मक रचनाओं ने भी स्त्री जीवन पर व्यापक प्रभाव डाला है और जीवन के अँधेरे के विरुद्ध प्रकाश–स्तम्भ का कार्य किया है। न केवल उनके उपन्यास बल्कि उनकी कहानियाँ भी स्त्री की दयनीयता और कमजोरी के विरुद्ध आवाज उठाती हैं। कृष्णा जी ने ऐसे बोल्ड पात्र और कथा–परिवेश सृजित किए हैं कि वह स्त्री को अन्याय और शोषण के विरुद्ध दृढ़ इच्छाशक्ति प्रदान करते हैं। 'यारों के यार', 'सूरजमुखी अँधेरे के' और 'मित्रो मरजानी', 'ए लड़की' तथा 'जिन्दगीनामा' उनके प्रमुख उपन्यास हैं। उन्होंने अपने साहित्य में नारी की विविध समस्याओं का संजीदगी से चित्रण किया है। उन्होंने स्त्री के शारीरिक और आर्थिक व्यक्तित्व को प्रमुखता दी है तथा उसके यौन–अधिकारों का भी समर्थन किया है। "नारी जीवन में यौन प्रश्नों को लेकर कृष्णा सोबती ने आधुनिक भारतीय पितृसत्तात्मक पारिवारिक–सामाजिक संस्था पर करारा प्रहार किया है।... इन्होंने नारी समस्या को यौन–सम्बंधों के दायरे में देखने की कोशिश की है तथा परम्परागत यौन–नैतिकता के मानदण्डों को पुरुष का हिमायती माना है।"[3]

'बादलों के घेरे' कृष्णा सोबती जी की अत्यंत मार्मिक कहानी है। इस कहानी की मुख्य पात्र 'मन्नो' है जो तपेदिक की पीड़ा से जूझ रही है। उसका जीवन निस्संग और एकरस है। वह जीवन के प्रति उदासीन होती जा रही है, परंतु उसमें भी प्रेम का अंकुर फूटता है। वह अपनी दबे पाँव नजदीक आती मृत्यु का अहसास करती है और अपने भावों को अपने हृदय में दबाकर रखती है। उसके प्रेम में त्याग है, पीड़ा है, कसक है। रवि उसका स्मरण करता है–''जिस मीरा को मैंने वर्षों जाना है, वह अब पास सी नहीं लगती, अपनी–सी नहीं लगती। उसे मैंने छू–छूकर छुआ था, चूम–चूम कर चूमा था, पर मन पर जब मोह और प्यार की उलझन आती है तो मीरा नहीं मन्नो की आँखें ही सगी दीखती हैं।''[4] इस कहानी में कृष्णा सोबती ने प्रेम की उत्कटता और असहायता को एक साथ दर्शाने की चेष्टा की है जो परिस्थितियों के कारण मौन में पलता है, परंतु उसमें त्याग और धैय के साथ एक दार्शनिक कारुणिकता भी विद्यमान है।

'कुछ नहीं, कोई नहीं' कहानी में दो पाटों के बीच फँसी स्त्री की मार्मिक अभिव्यक्ति का चित्रण है। शिप्रा ने अपने शारीरिक सुखों और अपने प्रेम के लिए पति का घर छोड़ दिया था, परंतु उसका जीवन वहाँ भी सुखमय नहीं रहता है और वह अपने को छला और ठगा हुआ महसूस करती है। प्रेमी आनंद की मृत्यु के बाद 'घर' छोड़ आई शिप्रा पुनः 'बेघर' हो जाती है। ''पूछने की रूखाई पर ध्यान अटक गया और इतने दिनों बाद पहली बार बोध हुआ कि बच्चों के पास मेरे लिए, मुझे पुकारने के लिए कोई सम्बोधन नहीं है।''[5] कृष्णा सोबती जी के उपन्यासों में भी ऐसे अनेक पात्र और घटनाक्रम हैं जो स्त्री–जीवन पर अपना गहरा असर डालते हैं। 'डार से बिछुड़ी' उपन्यास में कथानायिका पाशो के जीवन–संघर्ष का तरल चित्र खींचा गया है। पाशो कैशोर्य जीवन को पार कर युवावस्था में कदम रखते ही अनेक कठिनाइयों का सामना करती है। उसका सौंदर्य ही उसके लिए अभिशाप बन जाता है। वह ऐसी घायल पंछी है जिसकी कोई डाल ही नहीं। 'डार से बिछुड़ी' अपने डार से मिलती है लेकिन पूर्व रूप में नहीं। उसका मान–सम्मान, सुख–सुहाग सबकुछ लुट चुका था। उसके चेहरे में हर्ष–विषाद की एक अपूर्व अनुभूति दिखाई देती है। वह उस अवस्था में पहुँच जाती है जहाँ न हास है, न रुदन, न ही अपने जीवन की क्रूर परिस्थितियों से शिकायत, वहाँ तो केवल प्रशांति है–दिवा–रात्रि के मिलन की उषःशांति।''[6] इसी प्रकार 'मित्रो मरजानी' भी स्त्री के दुःखद जीवन का जीवंत दस्तावेज है। इस उपन्यास में अपनी यौनिकता में मुखर मित्रो का चित्रण किया गया है जो स्वच्छन्द तथा जीवन्त स्वभाव की है जिसमें प्रेम की असीमित ललक है जिसे वह अपने पति से पाना चाहती है, परन्तु उसका पति जो उसकी प्रेम की पीर को समझने में सक्षम नहीं है, जो उसके यौवन को रस से सिक्त नहीं कर सकता। यदि मित्रो चाहती तो उसके जीवन में उसकी माँ की तरह यारों की फौज खड़ी हो जाती पर वह अपने साईं को ही सुमिरती रहती है और अपनी यौवनेच्छा के द्वार को बंद रखती है। 'मित्रो' अपने आप में एक अप्रतिम कृति है जो हिंदी साहित्य में अप्रतिम है। दूसरी मित्रो फिर कभी नहीं रची गई। कृष्णा जी की ये सभी कथात्मक रचनाएँ स्त्री के लिए प्रेरणा का आगार हैं। स्त्री को कभी अपने यथार्थ के लिए माफी की गवाही नहीं चाहिए। उसके विद्रोह और अस्मिता की पूर्णता में ही उसकी सिद्धि है। नारी को अपनी कामनाओं और अपनी स्वतंत्र चाहना के द्वार को कभी नहीं बंद करना चाहिए। छद्म रूढ़ियों और संस्कारों के लबादे के कारण उसे अपने स्वत्व का तिरोहण नहीं करना चाहिए। स्त्री का यथार्थ पुरुष रचता है पर अपना आदर्श स्त्री स्वयं रच सकती है, यही कृष्णा जी के कथा–साहित्य का मुख्य प्रतिपाद्य है।

संदर्भ सूची :–

1. एक स्त्री का घोषणा पत्र, मैत्रेयी पुष्पा, स्त्री : परम्परा और आधुनिकता, सं. राजकिशोर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004।
2. औरत अस्तित्व और अस्मिता, अरविंद जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001, पृ. 65।
3. समकालीन महिला लेखन, ओमप्रकाश शर्मा, पृ. 148।
4. बादलों के घेरे, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 43।
5. वही, पृ. 83 (कहीं नहीं, कोई नहीं)।
6. डार से बिछुड़ी, फ्लैप, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

☙★❧

Peace Education in Global Context

Dr. G. Sowbhagya*

Abstract :- Peace education is necessary for human beings, but cohesive environment is necessary to be followed. Peace education aims at enhancing the human values that are needed to deal with conflict situations at an individual and societal level. The sources can be found in the cultures where peace traditions are strong. Also the religious sources play a crucial role in changing the mindset towards achieving positive peace and thereby contribute to world peace. As India is a country where it is very clear to see unity in diversity because people of many religion, race, culture and tradition live together without affecting each other's feelings and believes to their religion. Unity in diversity focuses on the existence of unity even after lots of differences of cultural, social, physical, linguistic, religious, political, ideological, psychological, etc... The teaching of religious knowledge is intended to lead the students to develop a critical mind and to imbibe the basic religious tenets in order to transmit acceptable moral standards and to inculcate spiritual values in interpersonal and human relations in the society. In order to sustain sound human society, the survival of value education becomes imperative because of the nostalgia of the past, disappointment of the present and hope for the future generation. Many peace educators and researchers have made immense contribution to this field. This paper therefore discussed extensively the role of peace in inculcating values, challenges of bringing peace in global context and suggested ways forwards for a better society

Keywords :- ***Peace, Education, Global context, Education for Peace.***

Introduction :- "Peace education is grounded in active citizenship, preparing learners for assiduous participation in a democracy, through problem – posing and problem – solving education, and a commitment to transformative action in our society." By John Dewey Peace is "the fruit of careful nurture of values, attitudes, and behaviours that give life to the principles of co-operation, non-violence, respect for human rights and cultural diversity, democracy, and tolerance." Peace is dynamic, not a static process. Peace is hard to build and easy to destroy. It may take years to build up a stable peace, one act can destroy it. Peace is dynamic, not a static process. Peace is hard to build and easy to destroy. It may take years to build up a stable peace, one act can destroy it.

Concept of Peace Education: - Peace education is the process of acquiring the values, the knowledge and developing the attitudes, skills and behaviours to live in harmony with oneself, with others and with the natural environment. The education which promotes the knowledge, skills, attitudes and values needed to bring about behaviour changes that will enable children, youths and adults to prevent conflict and violence is called Peace Education. The main aim of peace education is not the abolition of war but is to cultivate a culture of respect and peaceful co-existence.***James Page*** suggests peace education be thought of as "encouraging a commitment to peace as a settled disposition and enhancing the confidence of the individual as an individual agent of peace; as informing the student on the consequences of war and social injustice; as informing the student on the value of

*** Assistant Professor, Department of Education Karnataka State Akkamahadevi Women's University, Vijayapur, India**

peaceful and just social structures and working to uphold or develop such social structures; as encouraging the student to love the world and to imagine a peaceful future; and as caring for the student and encouraging the student to care for others". From the above definition it can be agreed that in the absence of elements such as tolerance, understanding, empathy, cooperation and respect for the difference in others, there cannot be peace. Any strategy or educational system helps to enhance the above said entities among the individuals could be known as peace education.

According to **Albert Einstein** "Peace is not merely the absence of war but the presence of justice, of law, of order – in short, of government. According to **Freire** (2006) "Peace education is a mechanism for the transformation from a culture of violence to a culture of peace through a process of "conscientization" **Betty Reardon** defines "Peace Education is the attempt to promote the development of an authentic planetary consciousness that will enable us to function as global citizens and to transforms the present human condition by changing the social structures and patterns of thought that have created it". "Peace Education is an attempt to respond to problems of conflict and violence of scale ranging from the global and national to the local and personal. It is about exploring ways of creating more just and sustainable futures said by **Laing.R.D**.(1978)

According to R.D. Laing (1978), Peace education is an attempt to respond to problems of conflict and violence of scale ranging from the global and national to the local and personal. It is about exploring ways of creating more just and sustainable futures. Harris (2004) divides Peace Education into five categories:- International education, developmental education, environmental education, human rights education and conflict resolution education. **Webster** defines Peace "as a state of quiet or tranquility, freedom from disturbance or agitation, calm repose." Peace can only be found in the small corners of my own self, I can look around me and think someone else will give it to me but that's not how it works **— Jonathan Armando**

From the above definitions it is understood that the peace education inculcates the higher order human values among the individuals. Peace Education aims to enhance eternal values and overall development of the individuals.

Role of Education in establishment of Peace:- Education imparts knowledge, skills, values and attitudes that are important for the social, economic and political development for any country. Education is central to peace building. Without education, it is impossible to establish peace in the world. Education is a significant dimension of the long-term process of building up peace – tolerance, justice, intercultural understanding and civic.

Education embodies the joy of living and personality development with the qualities of love, hope and courage.

Education for peace building

1. **Knowledge**
2. **Attitude**
3. **Values**
4. **Skills**

1. **Knowledge:** knowledge of different aspects enhance for Peace building in Students through proper education.
   - **Conflict & War**
   - **Peace**
   - **Nuclear issues**
   - **Justice**
   - **Gender**
   - **Environment**

2. **Attitude:** Education helps to encourage attitudes that lead to a preference for constructive and nonviolent resolution of conflict. Provision of quality education for all children builds good attitudes which help to establish a peaceful world.
    - **Self Respect**.
    - **Respect for others**
    - **Vision**
    - **Commitment to justice**
    - **Ecological Concern**
    - **Empathy**
    - **Vision**
    - **Commitment to justice**
    - **Ecological Concern**
3. **Values:** Education in the true sense should empower individuals to clarify their values. Values are developed among the children through different educational and cultural activities of like observing different important dates having national value (Independence day, Republic day etc.) observing birthdays and other important days of eminent personalities of our country, stage drama, quiz, debate, recitation and many other cultural activities.
    - **Human rights and democracy**
    - **Preservation of Cultures**
    - **Protection of Environment**
    - **Co-operation and unity:**
    - **Self and Others**
    - **Internationalism**
4. **Skills:** Education attempts to develop a set of behavioral skills necessary for peaceful living and peace-building from which the whole humanity will be benefited. Education assists students in developing the personal and social skills necessary to live in harmony with others and to behave in positive and caring ways that respect the basic human rights.
    - **Information handling**
    - **Reflection**
    - **Creative thinking**
    - **Conflict resolution**

Dimensions of Peace Education:- If we agree that the peace education is a training process for developing our positive attitude, and behaviours among other, then this education has several dimensions which can be enumerated as below:

1. Education for war control.
2. Education for develop tolerance in human beings.
3. Education to establish positive willingness and unity for international society.
4. Education for promotion of human right for salving to the problem of social discrimination.
5. Education for conflict resolution.
6. Education for democracy.
7. Education for international understanding.
8. Education for environmental responsibility.
9. Education for coexistence and general equality.
10. Some have also addressed a dimension that is spiritual dimensions

Curriculum :- Effective curriculum is needed to establish peace through education. Peace can be introduced through various curricular aspects.

- **Language:** Language as a subject content provides motivation for inter-cultural communication, a dimension of social consciousness etc.

- **Mathematics:** Mathematics can be very powerful way to approach of equity, global distribution of wealth, economic development etc.
- **Science:** Science helps to promote environmental awareness and ecological thinking.
- **Social Science:** Social Science like the History, Geography etc provides scope to enable student to explore world peace.

Co-curriculum :-

- Co-curricular activities are program or out class activity which helps to build character formation, develop values and good attitudes and provide opportunity to work together or in teams.
- **Assembly:** This activity enhances the ability of social interaction, leadership, healthy self discipline etc.
- **Cultural Activities:** Through different cultural activities like important dates having national value example of Independence day, Republic day etc, birthdays and other important days of renowned personalities of our country, quiz ,drama, debate, recitation and many other cultural activities can develop various values about peace cultural activities can develop various values about peace.
- **Sports and games:** Sports and games develop various values like discipline, value of time, character, patience, co-operation, effort of goal achievement, acceptance of defeated etc.
- **Group Discussion:** Group discussions on contemporary news, National and International issues, Government policies having National, International etc imparts the values about peace.
- **Educational Tour:** Through educational tour children can be familiar with different cultures, habits and lifestyles of people of different states, communities of their country and national values can be developed.
- **Community Services:** Programs of various service works for society develop feeling, sensitivity and service mindedness for human welfare among the children.

Teaching Methods of Peace Education :-

Teaching in the broadest sense is any act or experience that has a formative effect on the mind, character and physical ability of an individual. In the process of integrating peace education, how to teach is more important than what to teach. The teaching methods already practiced by the teachers for the existing subjects can be used for teaching peace education also. But some of the specific teaching methods discussed below could be more useful.

a. Cooperative Learning
b. Story telling
c. Group Discussion
d. Service learning
e. Peer Teaching
f. Experimental Teaching
g. Brainstorming
h. Inquiry based learning and teaching
i. Role play
j. Dialogues

Role of teacher:- Teacher is a key agent in education system and effective element of establishing peaceful world. The teacher has the greatest responsibility of building a nation .The way teacher teach is as important as what they teach in facilitating the knowledge, skills and attitudes that facilitate peaceful futures. Teacher should make deliberate attempts to inculcate and reinforce the importance of peace related values. The major responsibility of

teachers is to help students for becoming good human beings, an honest, responsible civic of the society.

- Education should be used as a means to transform institutions and societies. Scholars need to initiate peace through academic discourse within and outside campuses and institutions. They need to teach peace, order, and conciliatory attitudes as value-laden life processes in civic education. They need to change the mindset inherited from past generations by re-implanting a culture of tolerance and conciliatory notions both at early-learning and mature levels of education.
- Academics can play a major role in peacemaking and peace building activities, and the academy can play a leading role in making society more peaceful. Through their work in their respective institutions, through their writings, and through appearances in the media, academics can play a vital role.
- The role of peace educators is rooted in the ability to provide hope and confidence. Despite skepticism regarding the role of scholars, people still have faith in them; their works and words carry respect and regard among common people. Their involvement in peacemaking and peace building will generate confidence. Their impartial, supposedly unbiased, and forthright views will first of all enhance hope among the needy, those who are most in need of peace. And their involvement will be welcomed without suspicion. The academics' role is one of hope.

Conclusion :- For building peace, more and more peace concepts, attitudes, values and behavioral skills are being integrated through education nowadays. It embodies the joy of living and personality development with the qualities of love, hope and courage. Education encompasses respect for human rights, justice, tolerance, cooperation, social responsibility, and respect for cultural diversity. Thus Peace Education is very much needed for establishing a peaceful world.

Reference :-

1. **Barash, P. David (2000).** *Approaches to Peace*, oxford university press, New York.
2. **Brock-Utne, Birgit (1985)** *Educating for Peace: A Feminist Perspective*, New York:Pergamon Press.
3. **Burns, Robin Joan and Robert Aspeslagh, (1996),** *Three Decades of Peace Education Around the Worlds*, New Jersey: Garland Publishing, Inc.,
4. **Ferguson, John, (1986)** *Religion and Peace*, Linus Pavling, World Encyclopedia of Peace, Volume:2, Oxford:Pergamon Press.
5. **Galtung, I (1996).** Peace *by peaceful means: Peace and conflict, Development and civilization*, PRIO – International peace research institute of Oslo and sage publications
6. **Government of India (1986).** *Report of National Policy on Education* New Delhi MHRD Govt. of India.
7. **Government of India (2005).** *Education for Values in Schools – A Framework*. New Delhi: NCERT
8. **Harris Ian, M. (1988),** *Peace Education*, London: Mc Farland and Company, Inc. Publication.
9. **J. Krishnamorti** *Freedom from violence is true liberation, except from total freedom*. The Times of India 2009, Jan 25.
10. **Kiruba Charles and Arul Selvi (2012)** *Peace and Value Education* Neelkamal Publications Pvt. Ltd New Delhi.
11. **NCERT (2006).** *National Curriculum Framework 2005*, Position Report Focus Group of Education for Peace, New Delhi N. C. E. R. T.
12. **Peace Education in UNICEF (1999).** New York: UNICEF
13. **Timpson, William M. (2002)** *Teaching and Learning peace*. Madision, Wisconsin: Atwood Publishing.

A Study on the Factors Responsible for Wine Tourism with Reference to Sula and Soma Wineries, Nashik

Satish Singh*
Snehal Deshmukh**
Chaitanya Gaikwad***

Abstract:- Wine tourism is a synthesis of elements from the wine and tourism industries that come together to form the wine tourism experience. The concept of wine tourism became common after Maharashtra Tourism Policy 2006, which have set a bench mark for native grape growing farmers. After fulfilling the domestic market, the growers are establishing deals to attract the travellers and boosting wine tourism not only in Nashik but also in Maharashtra. The purpose of this paper is to explore wine tourism as an important economic activity and to determine the demographic and anthropogenic characteristics of the wine consumers. Several elements form a part of a much larger wine tourism system and contribute directly and/or indirectly in creating and developing a wine tourism destination. Nashik, Maharashtra in India has come to be popularly known as the 'Wine Capital' of India, producing some of the award-winning and internationally acclaimed wines. This research specifically focuses on two wineries-Sula & Soma. This analysis aims to study the factors that affect Wine Tourism at Sula & Soma wineries at Nashik, Maharashtra and aims to investigate driving factors for wine tourists to revisit Indian vineyards. It explores the motivation for Indians engaged in wine tourism and specific behaviours related there to. It studies the perception of tourists towards the wineries. Guest experience, facilities, value proposition, and other considerations vary from winery to winery. For the study, 74 respondents were chosen from students, tourists. Primary data was obtained using a questionnaire provided to tourists between the different age and income groups. The findings show that other factors and aspects affect service quality. The purpose of this paper is to explore wine tourism as an important economic activity and to determine the demographic and anthropogenic characteristics of the wine consumers.

Keywords :- Perception, Factors, Tourists, Nashik, Tourism, Sula, Soma.

Introduction :-

Wine tourism- Wine tourism has been defined as visitation to vineyards wineries wine festivals and wine shows for which grape wine tasting and or experiencing the attributes of grape wine region are the prime motivating factor for visiting.

Wine tourism has been defined as `visitation to vineyards, wineries, wine festivals and wine shows for which grape wine tasting and/or experiencing the attributes of a grape wine region are the prime motivating factors for visitors. This market-based definition has informed

---

*** Lecturer, IHM Ahmedabad.**

**** B.Sc Student, IHM, Gandhinagar.**

***** B.Sc Student, IHM, Gandhinagar.**

a proliferation of consumer studies of wine tourists and wine festival. Many wine regions and tourism destinations have realized that the benefits of wine tourism extend well beyond the cellar door to virtually all areas of the regional economy and into the urban areas that generate the majority of wine tourists. Wine, food, tourism and the arts collectively comprise the core elements of the wine tourism product and provide the lifestyle package that wine tourists aspire to and seek to experience.

Wine tourism is an evolving phenomenon in today's tourism market, a market that is constantly changing and adapting to new demands from society. With new technological advances to take into consideration, such as social media, businesses can struggle to keep up with the new platforms in which information is being distributed. With the growth of online presence and the rise in numbers of influencers, being part of the trend can seem important to a younger audience. Tourism is one of the fastest-growing industries and it is, therefore, no wonder that new forms of tourism are constantly evolving. Within the last few years, the tourism sector has had important changes, changes that have brought forward new tourism products, notably those connected to the rural field. Today, there are many different kinds of phenomena and different kinds of tourism that are emerging, one of which is wine tourism. This new phenomenon opens up a new market for the wine industry, which can now take advantage of the increased demand. Wine tourism is a form of tourism that has become increasingly sought after in recent years, the integration of wine into tourism can be seen in many places in today's society. There are wine festivals, tasting of wine, vineyards with restaurant and overnight stays, even wineries of which premises can be booked for a variety of events Wine tourism is relatively new in that.

Wine and tourism industry is akin in terms of their regional identity. While tourism attractions are recognized by their area of location or country, wines are recognized by their area of origin. Wine trails or wine routes are a concept that defines the wineries and vineyards located in certain area under one route or trail. Creation of wine trails or wine routes enables promotion of wine tourism circuits thereby giving a geographical definition to the tourism infrastructure development that is undertaken to facilitate tourism in wine regions.

Wine Tourism in Nashik :- Nashik district has been called "Wine capital "of India. In Maharashtra 92 wineries are established out of these 74 wineries located in Nashik district. due to most of people visit these vineyards and industries at Every day for enjoying with wine and vineyards tour, cultivation of grapes and celebrating their happy moments. Thus, Nashik district have been growing and fastest place for the wine tourism. Significance of the study-Nashik is known the best place for tourism by various tourism dimensions. Such as Historical, Natural, Religious, however wine tourism is new form of tourism is developed in Nashik district. And most of foreign and local tourist visited to this tourism activities.

Significance of Nashik :- Since ancient times Nashik is well known for grape production and called as 'Grape city' 'India's wine valley'. Around 60% to 70% of the seedless grapes are produced in Nasik district alone. The Sangli, Sholapur area is a dry belt where grapes are mostly converted to raisins. The availability of water, well drained rich soils, pollution free atmosphere, the cool climate, availability of labour and the entrepreneurship quality of the farmers are main factors responsible for the growth of Nashik grape cluster. Although Nasik district comprises of 13 talukas, only 7 talukas have the major share and amongst those the three talukas viz. Nasik, Niphad and Dindori are the leading growers. Therefore, this cluster

shown in the map of district encompasses 90% of the grape cultivation. For last 20 years, grape has acquired dominance in the agricultural economy of the district.

Nashik is situated 180 km northeast of Mumbai. Nashik is India's largest grape growing region. Nasik climate was not only perfect of wine grapes but also on with wine growing regions. Nasik at 565.5 meters above sea levels. makes it India northern most region where wine grapes can be grown easily the big diurnal variation or the difference between day and night temperatures is suited to get a great balance of sugar, acid, and flavours" in wines pulse. Table grape cultivation had started in 1925 in Ojhar, a small town near Nashik by a citizen called Raosaheb Jairam Krishna.

The Maharashtra government has rolled out a conductive wine policy to simplicity wine regulations and make it easy for wine producers to focus on quality winemaking. Therefore, Nashik has emerged as the wine capital of India there are 92 wineries in India out of them 74 wineries are existed only in Nasik district, some of which are usually closed to visitors for tasting and put them on our dream. Enjoy the quiet and cool evening in Nasik walking the rows of wines see how the most unadulterated and oldest beverage is made test the various wines made from these vineyards one does not need to be into wine to enjoy this different experience involves enjoying as much as testing the wines besides this Nasik wine tour one can also extend the stay and visit other attraction around Nashik as well as visiting wineries is great way of learning abet about wine enjoying wine in context and getting a sense of the whole culture that surrounds the many traditions that are associated with this product of the grape. In Nashik tehsil region vineyards are most populated for the wine tourism viz-

1] Sula vineyards. 2] York vineyards 3] Soma vineyards; these vineyards were established in the year 2000, 2008, and 2010. (In 2021, Sula acquired York Winery).

It is situated in a very natural atmosphere. Every day so many people of our country as well as foreign country is visited to this wine industry. there are so many objectives behind these visits they want to know about grape harvesting wine producing, procedure, various taste of wine as well as lovely & cheerful environment of this wine industry. The most important intention or motive of these tourist is the take the test of wine with unique rhythm of music. They dance with the test of wine in beautiful and natural surroundings. In this industry to visit a 2000 to 3000 tourist per day. As well as this industry organized "SULAFEST" and "YORKLIFE" wine festivals in every year in the first week of February .in this festival participate 300000 tourist surrounding as well as other foreign country

Tourism is an important activity for the development of the economy of society. Wine Tourism is one of the new forms of tourism. Wine tourism which can be developed with the help of vineyards and wine industries activity. This activity can be carried out without destroying the environment and leads to sustainable development. Potential of wine making & wine industry converted to wine tourism destination and also its development. In Nashik the vineyards are converted into not only a place for wine making but also a potential place for enjoying food with wine and vineyard tour. A place to stay in the midst of the vineyards actively participating in the harvesting of grapes stomping, crushing, wine tasting, wine festivals etc.

Literature review: Wine Tourism in Maharashtra - A matured wine industry is but imperative to the growth and development of wine tourism. Any study on wine tourism in Maharashtra

cannot be undertaken in isolation, without understanding wine industry in the state. Brown and Getz (2005, p. 267) claimed that there is a "growing body of research-based literature on the attractiveness of wine-producing regions plus considerable opinion on how to develop these destinations." However, there is a paucity of literature that delves into exploring the relationship between wine preferences and wine related travel. The success of vineyard tourism lies in satisfaction leading to positive behaviour and revisit intentions (Ramos et al., 2020). Scholarly studies of wine tourism faced substantial growth in the past decade (Hall and Prayag, 2017; Montella, 2017) co-occurringwith an increase of wine lovers participating in various types of wine tourism-related activities (Dressler, 2017; Grimstad, 2011; Lopez-Guzm_an et al., 2011; Loureiro and Cunha,2017). Furthermore, the wine tourism business has increased in India (Jaykumar and Fukey, 2014; Kansara, 2019) and represents a key element to be leveraged for improving wineries' performances and building preferences by means of online communication, increasing quality assessment of the wineries and provoking word of mouth promotion in social media and beyond (Scorrano et al., 2019).

Significance of study: There's a need to look at this, because winning tourist attention pays off and ensures their longevity in the market, customer satisfaction has become a top priority for any business. Sula & Soma being the sort after wineries by tourists for the newly developed wine tourism in India among many wine industry key players. These two wineries are pioneering Niche or Special interest tourism popular among not only Indians but also international wine connoisseurs. According to Miller (2007, cited in Nancy & Christina, 2011, p.21), 60 percent of new restaurants will close within three years due to poor customer relations. Customers can be vulnerable in this situation if they are not appropriately handled. As a result, every business should focus on strategies that will lead to happy customers.

Furthermore, to satisfy consumers, research must be done to determine their attitudes, which can help companies in several ways. Business analysis, according to Ritesh Patil (2019), will assist businesses in better communicating with current and prospective customers, identifying opportunities and challenges in the marketplace, minimizing risk, effectively planning investment and financial results, improving market position, and keeping up with current developments and innovations in the market. Furthermore, as the restaurant industry has grown and become more dynamic over time, its customers have become more sophisticated, price-conscious, and demanding, allowing them to quickly turn to other choices in the event of a single negative experience (Alam et al., 2015, p.187).

This paper will make an awareness about the wineries and the wine tourism hence can be a tool for wine curating.

Objectives of the study:

1. To study the perception of tourists towards wine tourism.
2. To study the factors influencing the tourists for decision making towards wine tourism.
3. To suggest different ways to promote wine tourism.

Methodology :- This research heavily on primary data. The information was gathered from tourists and locals of Nashik, Maharashtra. Data is collected through Online Survey; sending questionnaire to the prospective respondents over an email, social media platforms. The questionnaire is prepared on online survey platform. The data is analysed though pie chart method tabular method. This choice of methodology is classic in attainment of the desired

outcome. The questions formed are closed ended and are appealing the respondents to answer as per their experience. Secondary references such as reports, thesis, and books were also used to comments on previous studies on Wine tourism in Nashik.

Sample size:- To meet the stated objective, data was collected from 74 respondent which had 26 females and 48 males and major portion of respondent were between 18-30, where 7 were between 41-50 and rest 67 were between 18-30. Students and self-employed class were the major participant in the survey.

Survey Analysis:- This research paper has doubtlessly brought some worthwhile findings to highlight the perception towards wine tourism at Sula & Soma. Some 74 respondents (local, students, frequent visitors) have given their valuable opinions. The findings are furnished below:

1.Have you heard the concept of wine tourism?

In response to awareness about Wine Tourism, 75.7% have of Wine Tourism while13.5% haven't heard and 10.8% are not sure about the concept of Wine Tourism.

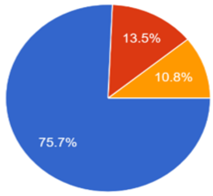

(Figure 1)

2. Have you travelled for wine tourism?

In response to awareness about Wine Tourism, 75.7% have heard of Wine Tourism while13.5% haven't heard and 10.8% are not sure about the concept of Wine Tourism.

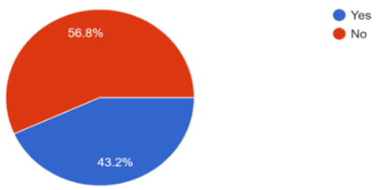

(Figure 2)

3. Which one would you prefer between Sula & Soma?

In response to 'preference of Winery', 53.4% prefer Sula vineyard, 31.5% prefer both Sula & Soma while 12.3% participants Soma.

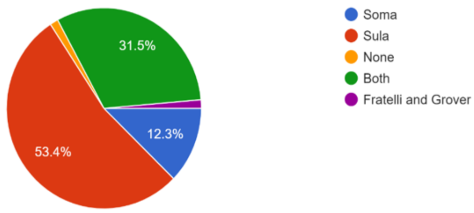

(Figure 3)

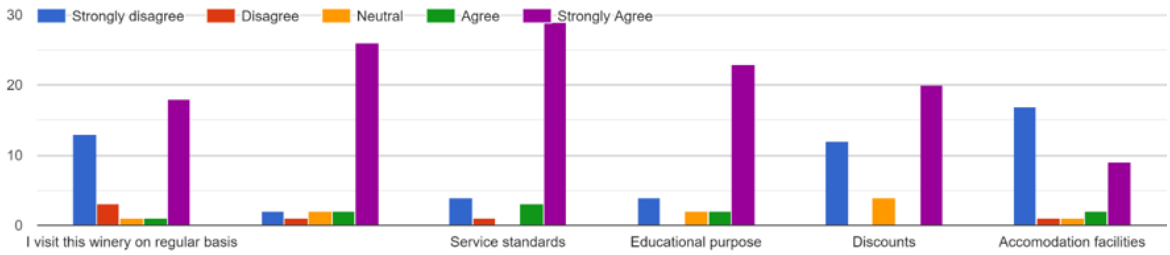

4. What is the reason to choose a winery to visit?

(Figure 4)

In response of ‘reason to select a visit to winery’, Strongly agree reasons were Visiting winery on regular basis, Service standards, educational purposes, Discounts and Accommodation facilities says strongly disagree.

5. What are the factors influencing for decision making towards wine tourism?

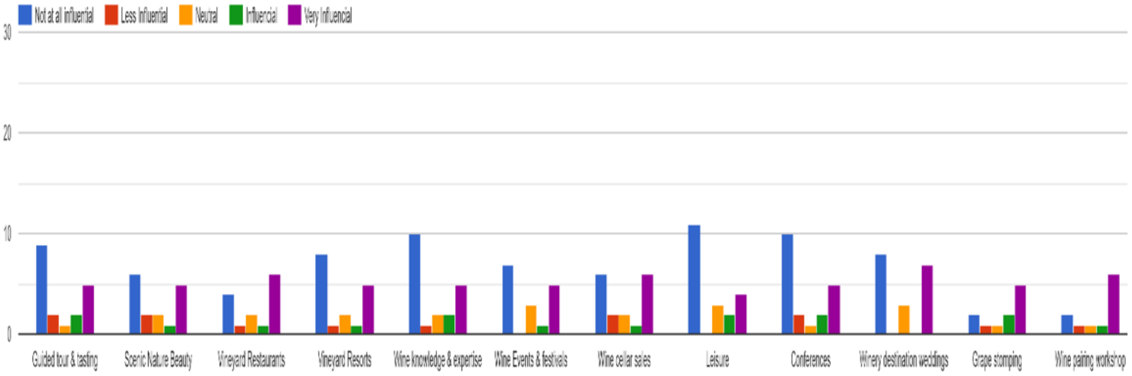

(Figure 5)

In response of “factors influencing decision making towards choosing Wine Tourism” the very influential are vineyard restaurants, wine pairing workshops, wine cellar sales whereas not influential are Guided tour & tastings, wine knowledge and expertise and leisure.

6. Kindly rate your opinion on following facilities of wineries in order to Influence your winery selection?

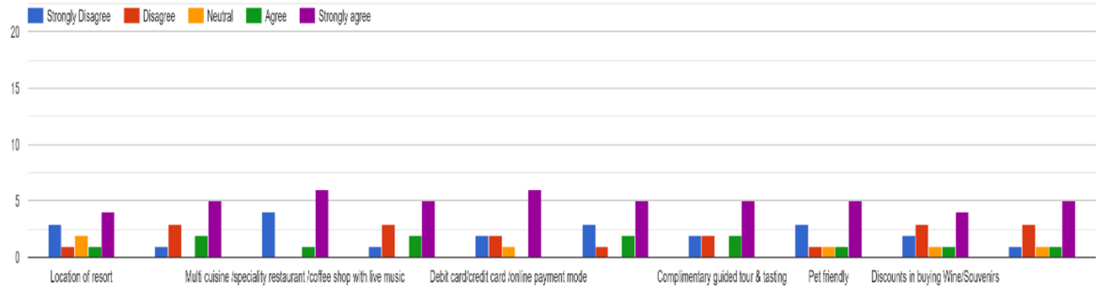

(Figure 6)

In response to “factors influencing to visit a winery again” Location of resort, Multicuisine restaurant, Debit card and online payments, complimentary tour and tasting Pet friendly and Discounts in buying wines and souvenirs are factors which participants Strongly agree

7. Kindly rate your opinion on marketing strategies by wineries that help in winery selection on the scale of 1 to 5.

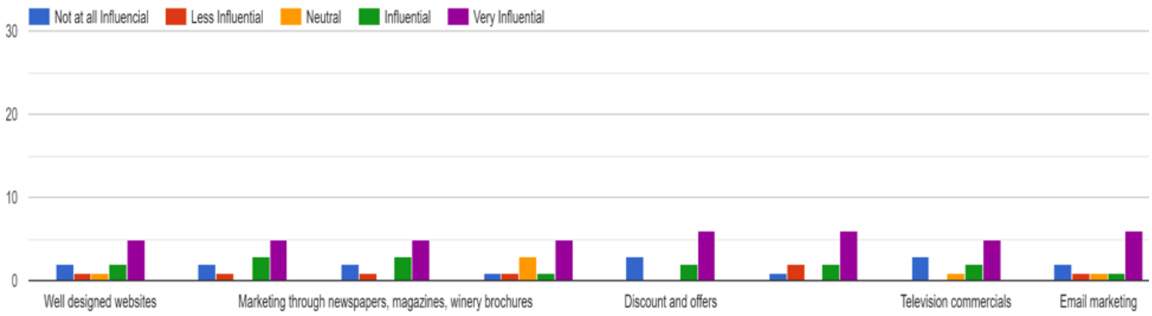

(Figure 7)

To get the information about "marketing strategies adopted by wineries which are influential" the Very Influential factors are well designed websites, through magazines, winery brochures, Discount and offers i.e., emails

8.Any other activity offered by wineries?

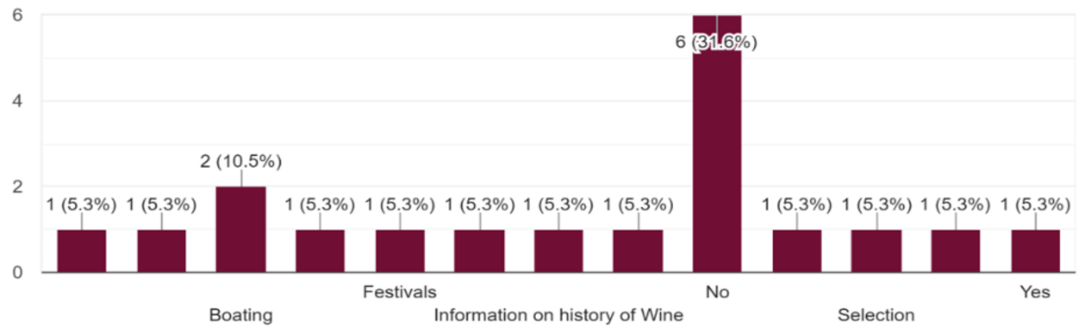

(Figure 8)

To know "other activities provided by winery" Participants responded Boating, wine Festivals and Information on history of wine.

Findings :- Consequently, if the findings are observed and analysed;

- *75.7%* of participant percentage of tourists know about Wine Tourism.
- The percentage of tourists travelling specifically for Wine Tourism are *56.8%.*
- Almost *78%* participants are willing to travel for Wine Tourism in future.
- While choosing factors responsible for visiting a winery which are Influential are Winery weddings, Grape Stomping, Vineyard Restaurants, Vineyard resorts, Wine cellar Sales and Wine and food pairing workshops are most Influential.
- Also, factors which seems Not at all Influential are Conferences, Guided Tour & Tasting, Wine knowledge & expertise and Leisure
- With the maximum percentage of *53.4%* Sula is favoured than Soma winery for Wine Tourism.
- Taking in account the option 'Both' we can say almost *(53.4+31.5) 84.9%* participants preferred Sula and a total of *(12.3+31.5) 33.8%* participants preferred Soma winery.
- 75 participants *(64.7%)* got to know about the company and its facilities by social media. Hence 'Social Media' is the most effective marketing strategy for both companies during COVID-19.

Suggestions:-

- Merchandising or promotions is still missing for wine tourism on a pan India and global level. It is suggested that more merchandising and awareness should be made for the wine tourism by different social media applications etc.
- In Hotels and bars special promotions and discounts should be made for the wine sales.
- Fair and festivals should be organised in the hotels too in order to popularise the wine consumption hence tourism.
- Hotel management students of different institutes should be taken on various trips to wineries for better acquaintance.
- Destination weddings may be planned in the wineries which have accommodation and banquet facilities, this too may bring some promotions of the wineries.

- Wineries should have more corporate tie-ups with various companies for special tour and wine tourism activities.

Conclusion: All the above points of observation and analysis figure out that awareness would be the righteous strategical move for the scope of wine tourism at Sula and Soma winery. Sula has emerged as more favourable choice due to various factors and facilities provided which are and preferred by the tourists. The review and analysis of various wine tourism factors bring out many dimensions of this multi-faceted special interest tourism. Wine tourism, much a part of cultural tourism, presents scope for amalgamation with other forms of cultural tourism, hospitality services, entertainment activities making it an ever evolving educational and leisure activity.

Reference :-

1. Brown, G. and Getz, D. (2005), “Linking wine preferences to the choice of wine tourism destinations”, Journal of Travel Research, Vol. 43 No. 3, pp. 266-276
2. Bruwer, J. (2003), “South African wine routes: some perspectives on the wine tourism industry’s structural dimensions and wine tourism product”, Tourism Management, Vol. 24 No. 4, pp. 423-435
3. Bruwer, J. and Alant, K. (2009), “The hedonic nature of wine tourism consumption: an experiential view”, International Journal of Wine Business Research, Vol. 21 No. 3, pp. 235-257.
4. Bruwer, J., Lesschaeve, I., Gray, D. and Sottini, V.A. (2013), “Regional brand perception by wine tourists within a winescape framework”, in AWBR (Ed.), 7th International Conference St. Catherine’s
5. Fernandes, A. (2012, February 11). A wine weekend with Sula. iDIVA. Retrieved 10October 2017, from http:// luxpresso.com/news-time-n-style/a-wine-weekend-with-sula/10895.
6. Gomez, M., Pratt, M.A. and Molina, A. (2019), “Wine tourism research: a systematic review of 20 vintages from 1995 to 2014”, Current Issues in Tourism, Vol. 22 No. 18, pp. 2211-2249.
7. http://articles.economictimes.indiatimes.com/2013-07-16/news/40613605_1_wine-market-sikkim-gangtok
8. https://www.indianwineacademy.com/item_4_841.aspx
9. https://www.somavinevillage.com/
10. https://sulavineyards.com/
11. Kaddi, A. S. (2013). Understanding the motivations of wine festival visitors in Maharashtra. *ATNA Journal of Tourism Studies*, *8*(2). doi:10.12727/ajts.10.1
12. Michael Hall, C. L. S. (2009). Wine Tourism Around the World. Routledge.
13. Sommelier India 2021 April. The Growth Trajectory of Indian wineries April 2020, 13-24..

※★※

A Case Study on the technological development in Food and beverage Service and Front Office operations during Covid-19 inTaj Skyline, Ahmedabad

Mr. Shashank Rajauria*
Mr. Satish Singh**
Ms. Neha Mehra***

ABSTRACT: Covid-19 is a new strain disease by a new strain of coronavirus started in Wuhan City on 31st December, 2019 which have affected the hospitality Industry in world in economic, unemployment and also lead customers to stay in their house, which was down-fall for market in the field of hospitality. In India the Hotel Industry was worstly affected by Covid-19 strain in the starting year of 2020, in which the occupancy rate was decreased to 40 percent which lead unemployment of about 38 million job losses in hospitality industry which leads to economics losses in hospitality industry. People stop stepping out of restaurants and hotels because of rising number of cases in covid-19, therefore, there was need for technology development to overcome the challenges of covid-19 to motivate guest for coming in hotel with safe check-in and check-out and to maintain social-distancing among the guest for the safety of guest and employees. The hotel followed covid-19 guidelines with technology advancement. The Taj Skyline is central hub to work not only for workers but also for guest with modern amenities and luxurious facilities provided in Front Office and Food & Beverage, to study the change the in technological advancement. It provided Covid-19 facilities like cash less payments and contact-less check-in and check-out to ensure the safety of guest with full sanitation and hygiene.

Key Words: Technology, Food and Beverage service, Front office, Ahmedabad, Covid-19.

1- INTRODUCTION :- Covid-19 is a new strain disease by a new strain of coronavirus started in Wuhan City on 31st December, 2019 which have affected the hospitality Industry in world in economic, unemployment and also lead customers to stay in their house, which was down-fall for market in the field of hospitality. In India the Hotel Industry was worstly affected by Covid-19 strain in the starting year of 2020, in which the occupancy rate was decreased to 40 percent which lead unemployment of about 38 million job losses in hospitality industry which leads to economics losses in hospitality industry.

People stop stepping out of restaurants and hotels because of rising number of cases in covid- 19, therefore, there was need for technology development to overcome the challenges of covid- 19 to motivate guest for coming in hotel with safe check-in and check-out and to maintain social-distancing among the guest for the safety of guest and employees. The hotel

*** Assistant Lecturer, Institute of Hotel Management, Ahmedabad.**
**** Lecturer, Institute of Hotel Management, Ahmedabad.**
*****Assistant Lecturer, DIMS Institute of Hotel Management, Ahmedabad.**

followed covid-19 guidelines with technology advancement.

Customer service and experience is the most important essence of hotel industry as it finds the balance between customer expectation and hotel effort. The hotel has implemented many technologies for safety of staff member and customers like contactless communication, online booking facilities, location based service in events, provided Wi-Fi to staff members and customers.

The Taj Skyline is central hub to work not only for workers but also for guest with modern amenities and luxurious facilities provided in Front Office and Food & Beverage, to study the change the in technological advancement. It provided Covid-19 facilities like cash less payments and contact-less check-in and check-out to ensure the safety of guest with full sanitation and hygiene.

2- LITERATURE REVIEW:- Sasha Merkac (2020) stated that hospitality and hotel industry that has been shut down by the covid pandemic situation in the hotel industry and customer experience should be redefined. With more data privacy and health regulations being effected, the concerned businesses can only turn to technology to keep up. This is why it is important that the sector develops and implements innovative trends to meet consumer expectations and better staff satisfaction. In turn, the involved hotel businesses can improve customer experience.

Professor Sheeba Hamid and Mohammad Azhar of Aligarh Muslim University implemented that Hospitality and Hotel Industry is turning into high-tech technology advancement with the adoption of robots. It will lead to advancement in technologies with more challenges in hotel.

1. **TECHNOLOGY USED IN TAJ SKYLINE, AHMEDABAD HOTEL :-**

The Taj Skyline, Ahmedabad is India's first UNESCO Urban Heritage Site. The hotel has well modern architecture with perfect balance of interior design and running culture through interiors. Rooms are modified with signature peacock motif, are large and luxurious and well established. The luxury hotel has a social lobby, all day Dining outlets; specialities restaurants pan Asian Restaurant with Chinese, Swiss, and Thai menu. Proper sanitation and social distance are being followed for safety of guest and staff members. A busy tea-lounge known for its take on local classics and luxurious banqueting & conferencing spaces that make this the fellowship-capital for the city. Weddings, conferences and conventions are well served with independent access and breakaway rooms. For those seeking a world of wellness, the hotel lives it up with its signature Jiva Spa experience and a temperature controlled indoor swimming pool.

- **PROPER AMENITIES PROVIDED IN TAJ SKYLINE :-**
  - Air Conditioning
  - Free Wi-Fi
  - Spa
  - Parking
  - Pool
  - Touch less check-in
- **CLEANING AND SAFETY PRACTICES :-**
  - Cleaned with disinfectant
  - Personal protective equipment
  - Hand sanitizer provider
  - Social distance implemented

2. TOP 10 HOTEL TECHNOLOGY TRENDS FOR 2021 :-

Once long ago, hotels occupied a fairly simple space in people's lives—they were a place for guests to lay their heads away from home. But anyone who's spent time in the hospitality industry in the last several years knows that the role of technology in hospitality businesses hasdrastically expanded.

In many cases, they're becoming hubs of activity unto themselves. Most of this activity relies directly or indirectly on technology, making IT more important to hotel operations and the guest experience than ever before especially in restaurants and front office.

Trends which are covered in hotels industry:

a. **Service through AI** :- Automation continues to be a trend that is changing the way guests are served. With the advancements in Artificial Intelligence (AI), hotels are looking at new ways to interact with guest.

b. **Going Touch-less :-** As important as automation and self-service has become, the pandemic has illuminated the need to reconsider how guests can interact with amenities. From motion sensors that turn on lights, to voice-activated control of appliances, advancements in IoT devices and natural language processing (NLP) has given hotels and the developers who serve them, the toolkit to tie these emerging technologies with their integrated guest applications providing futuristic experiences.

c. **Wire-less Mobile Device for staff :-** Already popular in the hotel industry. Many mobile device setups bring the kind of features usually found on a fixed network to mobile workers all over your hotel or campus without tethering them down to specific locations. Since hotel service staff, like housekeeping, valet, concierge, and event staff are often on the go, mobile devicea natural fit for hoteliers.

d. **Social listening :-** Guests have a lot to say about their experiences at hotels, but they don't always say it directly to you. And in a hotel world where word of mouth and online reviews have more influence every day, it's one of the reasons that more and more hotels have started investing in social listening tools. These tools allow hotels to find out about guests' wants, needs, desires, complaints and more—and jump into the conversation if it makes sense. Some even let you keep an eye on the competition. The Internet is treasure trove of business intelligence if you know how to look.

e. **Predictive Analysis :-** As more technology is added to improve the guest experience, the software and devices will produce more and more data about how guests interact with staff and the amenities throughout the campus. Based on when lights or the TV turn on, staff can know the average time a guest wakes up. With the mobile app on the devices, and IoT sensors throughout the hotel, staff can know how long it takes to get from any room to the lobby. These profiles can be saved and follow guests as they go from property to property, adapting their experience to be more consistent regardless of where they stay.The era of big data started years ago, but as more industries learn the insights that can be gathered by collecting and analysing data, the small tweaks information can provided

3. **Research Objective:-** We will acknowledge how technological development will help in motivating the customer to come in the restaurant. It has been concluded that growth of Taj Skyline, Ahmedabad in internet should be transform of simple communication to

online basis. The study expounds on the handy difficulties that can be faced by hotels and the customers while interacting with technologies during Covid-19 in hotel and give some advice to organization to make friendly use of technology. It has also been disclosed that customer relation in technological development of hotel should be properly rated for balance environment.

4. **Methodology:-** This paper is qualitative research paper. Most of the data are from secondary source however the primary data has been collected through interview method in Taj Skyline, in Ahmedabad. The research will includes data from interviews, questionnaires, internet, articles, different journals etc.

5. **Result and Discussion:-** Results were taken through telephonic conversations in hotel and questionnaires were filled by customers.

- **Telephonic Conversations In Taj Skyline, Ahmedabad:**

O **Food And Beverage Operation:-** In just one year, the COVID-19 pandemic introduced wide-ranging changes to the Food and Beverage (F&B) industry that would typically take years. With limited capacity due to social distancing guidelines, restaurants had to turn to technology to help them succeed through Challenging times. Restaurants implemented innovative ideas and technology like online ordering, contactless pick-up and delivery, QR code menus, waitlist applications, and social media advertisement to stay competitive in the marketplace. So how does it work? First, you create an app for your hotel with a level of security. Guests receive the room key through the app and the room appears only when they request for it. You can control the IMEI and help out guests in case guest's phone battery dies or losses the phone. Additionally, guests can share the room key with their fellow travellers.

Plastic Free - Worldwide in many countries, usage of single-use plastics such as cutlery, stirrers, straws, and plates have already been banned. Many big organizations have also signed an agreement to reduce plastic generation and disposal extensively. Accordingly, many food and beverage manufacturers are coming up with alternative biodegradable and plastic-free solutions along with an innovative packaging system. Moreover, consumers are becoming aware of the hazards of using a plastic bag and other such items have also given the companies more reasons not to use plastic materials.

o **Front Office :-**

1. Automated check-ins and check-outs :- Hotels have brought about a different outlook to check-ins and check-outs. Long queues at the front desk during peak seasons are quite distressing for guests. Would you like to wait for a room key when you're all jet lagged? That's when innovation can really do wonders. Digital check-ins and check outs along with initiating special requests in yourhotel are now possible for guests on their mobile, tablets or computers.

2. Digitized Room Keys :- How many times have you had to issue a duplicate room key to guests who have misplaced it? Ever thought how annoying it could get for guests to prove their identity every time? Well, digitized room keys are a saviour here. Swipe cards have been replaced with smartphones and apps to ease check-ins and reduce loss of key.

3. Chatbots :- Introducing this feature in your hotel will help your guests in interacting with your hotel than calling the operator or dialing a number of extensions. Furthermore, chatbots enable remote check-ins and check-outs and creates WOW moments for

guests. Request from Room №401 for an extra towel? Car booking request from room no. 305? Wake up call reminder from room no. 519? The bot can take all of these requests for you.

4. Infrared Sensors :- Ever heard your guests complaining about disturbances from the housekeeping staff? The traditional method of knocking and announcing the arrival of the staff or waiting for 10 seconds before the second knock, has become out of date. Infrared sensors allow you to know about the surroundings by detecting and emitting infrared radiation. The LED light notifies you whenever an object is near the sensor by automatically bouncing back into the light sensor. If you're looking to install infrared sensors in your hotel, think no further. These can also detect body heat and thereby alert you whether or not a room is occupied. Instead of having 'Do Not Disturb' door cards or disturbing jet lagged guests, these help your staff know if they need to come back later to clean the room.

5. Future :- Technology is rapidly evolving, and for many establishments, the future will be a faceless front desk. Automatic check-in technology is already being implemented in several hotel chains. Features like smartphone room entry can eliminate the formality of arriving at the front desk. Guests that use this technology reserve their room online. On the day of check-in, they receive a text message with their room number linked to the guest's preferred member card. They may go straight to their hotel room and enter their room by placing their smartphone near the door lock or by punching in a code. Some hotels will implement facial recognition technology: the guest checks in at the front desk, his image is captured, and then assigned to a room number. The guest needsno key to enter his room.

ANALYSIS FROM CUSTOMERS:

Result from questionnaires:

1. Age group :

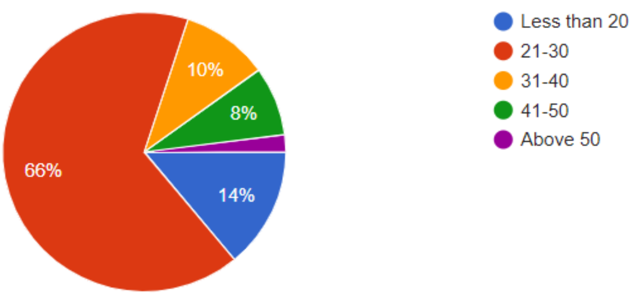

Maximum number of are groups are from 21-30 (66%), following with other age groups asshown in the figure (a)

2. Occupation :

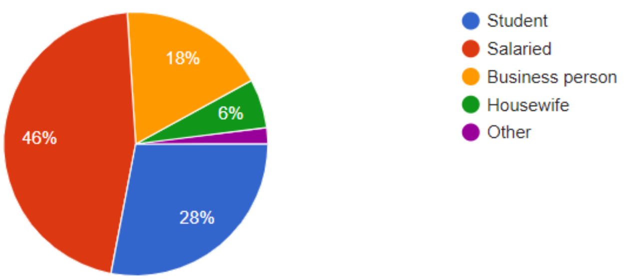

Maximum number of figures are from Salaried occupation (46%), followed by students (28%),business person (18%), Housewife (6%) as shown in figure (b)

3. Highest Level of Education :

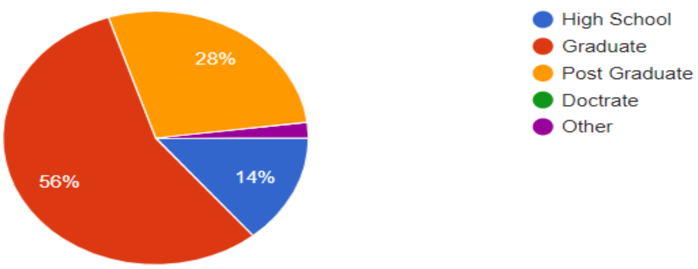

Graduates are with maximum number (56%), and then post graduates (28%).

4. Annual Income :

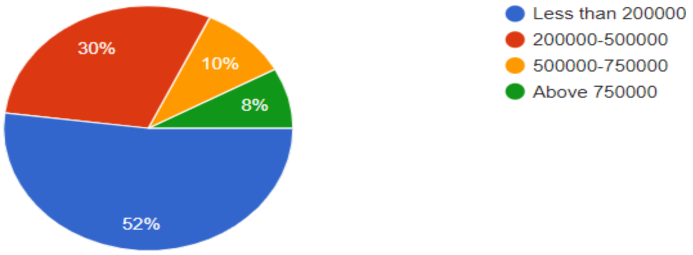

Maximum number of from the categories of "less than 200000" (52%), "200000-500000"(30%), 500000-7500000 (10%), and at last "Above 750000" (8%)

5. How often do you stay at hotel before Covid-19 pandemic?

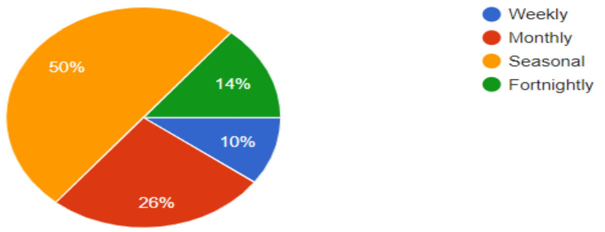

The maximum number of customer prefer seasonally visit hotel (50%), followed by monthly(26%), fortnightly (14%), and then at at-last weekly stay (10%)

6. Purpose of staying Hotel

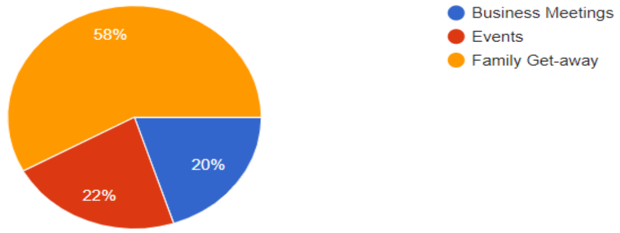

Customer prefer to stay with purpose of Family Get-away (58%), events (22%) and businessmeetings (20%)

7. Do you wish to go hotels with proper guidelines of Covid safety and hygiene?

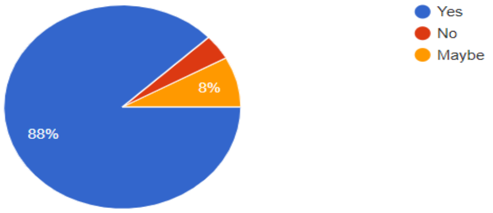

Maximum number of customers agrees to go hotel with proper guidelines of safety andHygiene.

8. Is proper implementation of technology done in Food & Beverage and Front office operation in Hotel?

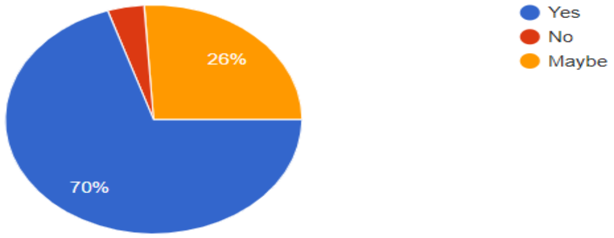

Maximum number of customers agrees with that proper implementation is being followed.

9. Which Technology development do you prefer the most as a customer in hotel?

Mostly customers prefer online bookings, followed by Touch-less appliances.

10. Do you prefer to stay at hotel in present day?

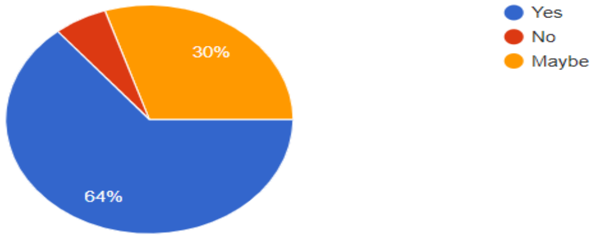

Maximum number of customer prefer to stay in hotel in present day (64%), followed by somecustomer are still thinking (30%).

8. Conclusions :- This study will help the researchers, manager, customers to grab knowledge of technologies applied in Taj skyline Ahmedabad to understand the latest development took place during covid-19 situation and the trends followed in technologies in front office and food & beverage services to understand the psychology of customer and the effect on hotel and staff related to technologies involvement. It will also help the readers how to improve supervision and overcome challenges faced by the hotels for the future betterment in operation of the department in food & beverage service and Front Office spread awareness amongst customers and employee in hotels in Ahmedabad.

References :-

1. Hal Werner (2021) "Top Hotel technology trends for 2021.
2. http://bwhotelier.businessworld.in/article/IHCL-opens-Taj-Skyline-in-Ahmedabad- Gujarat/01-12-2020-348604.
3. https://hospitalityinsights.ehl.edu/covid-affected-customer-experience.
4. https://link.springer.com/article/10.1007/s40558-020-00193-z.
5. https://www.hotelmanagement.net/tech/how-covid-19-has-accelerated-tech-adoption-hotel-industry.
6. https://nrai.org/
7. https://www.tajhotels.com/en-in/taj/taj-skyline-ahmedabad/
8. Sheeba Hamid and Mohammad Azhar (2021) "High Tech Hotel industry in post Covid -19.
9. Sasha Merkac (2020) "How technology is improving COVID-affected customer experience".

ॐ★ॐ

A Study on The Factors Responsible for The Revenge Tourism by the Travellers of Vadodara During Covid- 19

Mr. Charu Dutt Sharma*

Mr. Satish Singh**

Mr. Shashank Rajauria***

Abstract :- Covid-19, a new strain of coronavirus started in Wuhan City on 31st December, 2019 which has affected the hospitality Industry in the world in context to economy, unemployment and also forced people to stay at their house, which lead to the down-fall for market in the field of hospitality. In India the Hotel Industry was worst affected by Covid-19 strain in the starting year of 2020, in which the occupancy rate was decreased to 20 percent which lead unemployment of about 38 million job losses in hospitality industry and finally resulted in economy loss for hospitality industry. Due to this Covid -19, people were not able to go out for Tourism. Revenge tourism is a phenomenon where in people wishes to break free from the mundane routine that has caused the "new normal" to develop in the wake of the corona virus crisis. It also stems from a circumstance that has been described as "lockdown fatigue" or exhaustion that escalates on account of monotony. This paper aims at the various phases of revenge tourism during Covid-19, identifying various popular destination for revenge tourism by the travellers of Vadodara, factors responsible for revenge tourism and the different factors influencing in the selection of tourist destination by the travellers of Vadodara during and after Covid-19.

Key Words :- Travellers, Revenge Tourism, Vadodara, Hospitality Industry, Covid-19.

Introduction :- Since travel is requisite for tourism activity, any factor that hinders traveling may have a profound impact on tourism industry. An international issue, such as the COVID-19 (Coronavirus) pandemic, is particularly a typical example. The devastation of such event re-emphasizes the fragility of tourism industry (Jiang & Ritchie, 2017). Other noticeable traveling obstacles that could impact tourism industry include Tsunami (Ghaderi & Henderson, 2013), earthquake (Huan et al., 2004), terrorist activity (Bowen et al., 2014; Samitas et al., 2018), extreme climate (Becken, 2005), health and safety concerns (Fotiadis & Huan, 2014), and so on. There has even been a study (Zenker et al., 2019) that examined the impact of refugees on tourist decisions. In Taiwan, some of the well-known resorts are not easily accessible, such as Alishan, Sun Moon Lake, and Taroko gorge. These places are in high-risk disaster regions and are subject to the weather-induced natural disasters (Tsai et al., 2016), which means that slight chance of severe weather could stop tourists from reaching their destinations. For a small island that relied heavily on tourism activity to sustain its economy, such as Kinmen (or Quemoy), something as innocuous as the foggy season can ground flights to a halt (personal observation, 1st April 2017).

For an event as significant as a pandemic, like SARS (Severe Acute Respiratory Syndrome) and COVID-19, the tourism industry suffers extensively and worldwide. Some past studies (McKercher & Chon, 2004) suggest that the over-reaction to pandemics is the reason for the

---

*** Assistent Lecturer, Institute of Hotel Management, Ahmedabad.**

**** Lecturer, Institute of Hotel Management, Ahmedabad.**

***** Assistent. Lecturer, Institute of Hotel Management, Ahmedabad.**

collapse of Asian tourism (McKercher & Chon, 2004) and can significantly affect tourist demand (Kuo et al., 2008). However, little has been explored by studies to understand the way to minimize the impact. Although many countries relatively successful in containing the pandemic outbreak (Griffiths, 2020), it is not free from the accompanying economic downturn. Tourism industry is worst affected by this impact and requires a carefully planned strategy to mitigate it. As a tourism professor noted: 'it is important to help the tourism industry to successfully hibernate through this troublesome time and have enough energy to wake up, No Travelling figuratively, at the end of this period of turmoil (personal communication, 17th March 2020)'.

Review Of Literature :- Global tourism is affected by many types of disruptive events, such as terrorist attacks like 9/11, epidemic outbreaks like SARS-CoV-2, MERS-CoV, Ebola, Swine flu, etc. in the past (Wen et al., 2020). However, the recent epidemic outbreak (COVID-19) originated from Wuhan, China has severely impacted almost every industry, including Tourism worldwide (Yeh, 2020). The virus spread to all continents through air transport and still propagates infection exponentially (Nicolaides et al., 2020). To contain the spread, many countries completely/partially close their boarder and cancelled all flights, and events including sports, entertainment, pilgrimages, conferences etc. UNWTO (2020) estimated that international tourists would decline by 1%–3% compared to 2019 rather than the forecasted 3%–4% growth. As a result, global tourism has slowed down significantly. The number of international flights dropping by more than half following the tourism industry temporarily laid off half of their workforce (Goslings et al., 2020). The World Travel & Tourism Council reported a tourism-related loss of up to US$ 2.1 trillion in 2020 and up to 75 million jobs loss (WTTC, 2020).

The travel industry, which includes airlines, hotels and restaurants, has shrink by 50% in 2020, which meant a significant loss of jobs and revenue. According to the International Air Transport Association (IATA), Airlines worldwide are expected to lose a record of $84 billion in 2020, more than three times the loss made during the Global Financial Crisis (The World Economic Forum, 2020). Most of the airlines are undergrounded. Hotels are being closed due to fewer tourists and many five-star hotels turning into quarantine facilities. Most restaurateurs see operating costs rising further because of social distancing, hygiene, and sanitation-related costs. Therefore, sustaining during this crisis is a challenging task for the tourism industry.

The concept of over-tourism gives rise to "Revenge Tourism," which is considered hazardous in the present pandemic scenario. Revenge travel started unfolding from June onwards as Indians comes out of their homes after months of lockdown, and it is dangerous with the fight against COVID-19 still underway. So when states started opening up after the slight decline of the second wave of COVID-19, people headed out in droves to beachside, hill homestays, or even just a resort close by. Months of rigorous lockdown accompanied by working from home, doing or conducting classes online, and being unable to meet close relatives created boredom. So they masked up, got their jabs, and headed outdoors to relax. Pieces of evidence of people thronging destinations like Shimla, Manali, Nainital, Ooty, Nandi Hills, Goa and Gujarat are surfacing on various channels daily. The concept of 'revenge' brings a positive and sweet vibe to the bleeding hospitality industry.

Objectives of The Study

- To assess the difference in the frequency of travelling by the travellers of Vadodara during covid-19.
- To assess the preferred destination for revenge tourism by the travellers of Vadodara during covid-19.

- To identify the factors responsible for revenge tourism destination by the travellers of Vadodara during covid-19.
- To study the factors which influences travellers of Vadodara for revenge tourism during and after covid -19.

Hypothesis of The Study

- There is no significant differences in the frequency of travelling by the travellers of Vadodara before and during different phases of Covid-19.
- There is no significant difference in the preferred destination by the travellers of Vadodara during Covid 19.
- Predictable factors are not responsible for revenge tourism by the travellers of Vadodara during Covid-19
- Predictable factors do not influence travellers of Vadodara for revenge tourism during and after Covid-19.

Research Methodology :- The present research will investigate "The Factors Responsible For The Revenge Tourism By The Travellers Of Vadodara During Covid- 19." This study attempts to assess the significant difference in the frequency of travelling, difference in the preferred destination, factors responsible for revenge tourism and factors which influenced the travellers of Vadodara for revenge tourism in Vadodara during Covid-19. For the assessment of the stated objectives repeated measures analysis of variance technique has been executed to see the before and after effect of pandemic on preferred destination, frequency of travelling , factors responsible for revenge tourism and factors influential for revenge tourism .

Sample Size :- Total 76 travellers of Vadodara were interviewed and selected randomly from different societies/ localities of Vadodara. Non Probability samplings method has been used. Closed ended structured questionnaire was designed for the sample collection purpose. Non Comparative scaling technique was used with the Likert scale.

Findings

Demographic Profile

Gender	Counts	% of Total	Cumulative %
Male	55	72.3%	72.3%
Female	21	27.6%	100%

Age	Counts	% of Total	Cumulative%
18-30	40	52.7%	52.7%
31-50	24	31.5%	84.1%
51-60	12	15.7%	100%

Occupation	Counts	% of Total	Cumulative %
Salaried	10	13%	13%
Homemaker	2	2.6%	15.6%
Self Employed	42	55.2%	70.8%
Students	4	5.2%	76%
Others	18	23.68%	100%

Annual Income	Counts	% of Total	Cumulative%
Not Earning	46	60.52%	60.52%
2-4 lakh	5	6.57%	67.09%
4-8 lakh	6	7.89%	74.98%
8-12 lakh	7	9.21	84.19%
12 lakh & Above	12	15.78%	100%

Travelling Preference before Pandemic

Table: 1 Frequencies of travelling preference before pandemic

Levels	Counts	% of Total	Cumulative %age
Once a month	6	7.89%	7.89%
Twice a month	1	1.31%	9.2%
Quarterly	48	63.17%	72.37%
Half yearly	21	27.63	100%

Table 2: Frequencies of travelling preference during unlock phase 1 (June- August, 20) of Covid-19

Levels	Counts	% of Total	Cumulative %age
Once	22	28.94%	38.07%
Twice	13	17.10%	55.17%
Thrice	01	1.31%	56.48%
No Travelling	40	52.63%	100%

Table 3: Frequencies of travelling preference during unlock phase 2 (September- November, 20) of Covid-19

Levels	Counts	% of Total	Cumulative %age
Once	48	63.15%	63.15%
Twice	15	19.73%	82.88%
Thrice	01	1.31%	84.19
No Travelling	12	15.78%	100%

Table 4: Frequencies of travelling preference during unlock phase 3 (December- February, 21) of Covid-19

Levels	Counts	% of Total	Cumulative %age
Once	10	13.15%	13.51%
Twice	02	2.63%	15.78%
Thrice	00	00	15.78%
No Travelling	64	84.21	100%

If table 1 is observed, it shows 63.17% of the travellers used to travel quarterly, which states there was no fear of pandemic at all and 7.89% of travellers used to travel at least one a month. Table 2 shows 52.63% of the people didn't travel during the first phase of unlock period of Pandemic, which reflects the fear of the virus amongst them even when the cases of this disease has reduced. Table 3 indicates that during the unlock phase 2 people started travelling again i,e, 63.15% of the people travelled at least once during this phase where the number of cases again reduced than previous phase. Table 4 shows that again people stopped travelling during unlock phase 3 with 84.21% of respondents didn't travel a single time because after Diwali, 2020 the number of cases started increasing again.

Preferred destinations for travelling before and During Pandemic

Table 5: Most Preferred destination for tourism by the travellers of Vadodara before Pandemic.

Destinations	Counts	% of Total	Cumulative% age
Daman	03	**3.94%**	**3.94%**
Diu	48	**63.15%**	**67.09%**
Mount Abu	12	**15.78%**	**82.87%**
Udaipur	13	**17.10%**	**100%**

Table 6: Most Preferred destination for tourism by the travellers of Vadodara during unlock phase 1 (June- August, 20) of Covid-19

Destinations	Counts	% of Total	Cumulative% age
Daman	53	69.73%	69.73%
Diu	07	09.21%	78.94%
Mount Abu	6	07.89%	86.85%
Udaipur	10	13.15%	100%

Table 7: Most Preferred destination for tourism by the travellers of Vadodara during unlock phase 2 (September- November, 20) of Covid-19

Destinations	Counts	% of Total	Cumulative% age
Daman	45	59.21%	59.21%
Diu	02	2.63%	61.84%
Mount Abu	15	19.73%	81.57%
Udaipur	15	19.43%	100%

Table 8: Most Preferred destination for tourism by the travellers of Vadodara during unlock phase 1 (December- February, 21) of Covid-19

Destinations	Counts	% of Total	Cumulative% age
Daman	20	26.31%	26.31%
Diu	30	39.47%	65.78%
Mount Abu	10	13.15%	78.93%
Udaipur	16	21.05%	100%

If table 5 is observed it shows that the most preferred destination before pandemic for the travellers of Vadodara was Diu with 63.15% of responses which is the farthest destination out of the four mentioned destinations. Table 6 shows that there is a change in the preferred destination from Diu to Daman during the first phase of Unlock period with 69.73% of responses .Daman is the nearest destination to Vadodara out of the four mentioned destinations. Table 7 shows Daman is the most preferred destination 59.21% during second unlock phase followed by equal preference 19.73% and 19.43% for Udaipur and Mount Abu. Table 8 indicates that there is an equal preference for the all stated destinations during the third unlock phase as the fear of Covid-19 has reduced by this time. Overall conclusion is that people before pandemic didn't have the concern of travelling to nearest and farthest place from their hometown but during the unlock phase specially during phase 1 and 2 the proximity from the hometown is a major factor in the context of preference for travelling destination.. Apart from this there may be other responsible factors too.

Result & Analysis

Hypothesis 1

- There is no significant differences in the frequency of travelling by the travellers of Vadodara before and during different phases of Covid-19.`

Within Subject Effects

	Sum of Squares	df	Mean Square	F	P
RM Factor 1	32.8	3	10.993	35.7	<0.001
Residual	69	225	0.306		

Interpretation

- Here repeated measure of analysis of variance was executed to assess significant difference in the frequency of travelling by the travellers of Vadodara before and during different

phases of Covid-19 and p value <.001 indicated that null hypothesis can be rejected and can conclude that there is a significant differences in the frequency of travelling by the travellers of Vadodara before and during different phases of Covid-19.

Hypothesis 2

- There is no significant difference in the preferred destination by the travellers of Vadodara during Covid 19.

Within Subject Effects

	Sum of Squares	df	Mean Square	F	p
RM Factor 1	32.8	3	10.993	35.7	<.001
Residual	69	225	0.306		

Interpretation

- Here repeated measure of analysis of variance was executed to assess significant difference in the preferred destination by the travellers of Vadodara before and during different phases of Covid-19 and p value <.001 indicated that null hypothesis can be rejected and can conclude that there is a significant differences in the preferred destination of travelling by the travellers of Vadodara before and during different phases of Covid-19.

Hypothesis 3

- Predictable factors are not responsible for revenge tourism by the travellers of Vadodara during Covid-19

Model	R	R2	F	Dd1	Df2	p
1	0.921	0.849	41.3	9	66	<.001

Above table indicated positive association between predictable and dependent variables and same are confirmed with 0.932 value of Which is basically value of correlation and dependent variable is explain by 84% by predictable variables and value of 0.001 confirm the model fit.

	Sum Squares	df	Mean Square	f	p
Pandemic	0.0175	1	0.0175	0.09679	0.757
Boredom Fatigue	34.9643	1	34.9643	193.69150	<0.001
Domestic Violence	0.3753	1	0.3753	2.07902	0.0154
Leisure travelling	0.6280	1	0.6280	3.47880	0.067
Psychological Stress	0.1601	1	0.1601	0.88712	0.350

Note: Type 3 sum of square

Model Coefficient – Revenge Tourism

Predictor	Estimate	SE	t	p	Stand. Estimate
Intercept	0.18505	0.2421	0.7643	0.447	
Pandemic	0.01929	0.0620	0.3111	0.757	0.01805
Boredom Fatigue	0.93044	0.0669	13.9173	<.001	0.88236
Domestic Violence	0.12523	0.0869	1.4419	0.154	0.10911
Leisure travelling	0.09301	0.0499	-1.8652	0.067	-0.10594
Psychologica l Stress	0.85367	0.0570	10.9419	<0.001	0.55293

Boredom fatigue is the main reason for revenge tourism. Domestic violence and psychological stress were responsible for revenge tourism.

Hypothesis 4

- Predictable factors are not Influential for revenge tourism by the travellers of Vadodara during Covid-19

Model	R	R2	F	Dd1	Df2	p
1	0.0935	0.897	42.3	10	68	<0.001

Above table indicated positive association between predictable and dependent variables and same are confirmed with 0.935value of which is basically value of correlation and dependent variable is explain by 89% by predictable variables and value of 0.001 is confirm the model fit.

	Sum Squares	df	Mean Squre	f	p
Nearest destination to residence	34.9643	1	34.9643	193.69150	<0.001
Availability of Medical facility	0.0152	1	0.0152	0.08444	0.772
Less crowded destination	0.6280	1	0.6280	3.37880	0.067
Air connectivity	0.0175	1	0.0175	0,09679	0.757
Relaxation by Government for mobilization.	10.976	1	10.976	0.00765	0.958
Hotels ensuring latest safety and hygiene standards	9.5634	1	9.5634	0.00529	0.942
Branded Covid 19 safe destination,	0.1757	1	0.1757	0.97327	0.327
Social networking sites displaying best Covid practices	0.3753	1	0.3753	2.07902	0.154

Note: Type 3 sum of square

Model Coefficient – Revenge Tourism

Predictor	Estimate	SE	t	P	Standard. Estimate
Intercept	0.18506	0.2421	0.7643	0.449	
Nearest destination to residence	0.93044	0.0669	13.9173	<.001	0.88236
Availability of Medical facility	0.01976	0.0680	0.2906	0.772	0.01603
Less crowded destination	0.09301	0.0499	1.8652	<0.003	0.77235
Air connectivity	0.07284	0.0738	0.9865	0.327	0.05932
Relaxation by Government for mobilization.	0.09505	0.0466	1.6545	0.0567	0.10654
Hotels ensuring latest safety and hygiene standards	0,00498	0.0685	0.0728	0.942	0.00480
Branded Covid 19 safe destination,	0.05367	0.0570	0.9419	0.350	0.05293
Social networking sites displaying best Covid practices	0.1253	0.0869	1.4419	0.154	0.10911

Factors influential for revenge tourism are nearest destination to residence, Social networking sites displaying best Covid practices, less crowded destination, hotels ensuring latest safety and hygiene standards.

Suggestions :- People after Covid have become more concerned over the safety and hygiene standards. They prefer tourist destination close to their hometown. It is suggested that hotels should

practise the best of the safety and hygiene standards Trust building is the main concern now. Government should have full medical facilities at various tourist destinations to meet any emergencies. People in future will consider these factors before travelling and this is going to be on a long way.

Conclusion :- This paper reveals that the frequency of travel before covid-19 was quite high as compared to post Covid 19.During the 1st unlock phases of covid-19 June 2021-August 2021 of Covid -19 most of the travellers of Vadodara preferred travelling "once a month" due to the different factors which clearly state towards revenge tourism. During the 2nd unlock phase of Covid-19 the travellers of Vadodara preferred travelling "twice a month " as some of them were unable or afraid during first unlock phase of covid-19. During 3rd unlock phase December 2021 – Feb 2022 of Covid-19 the travellers of Vadodara preferred travelling "once a month". This shows somewhat decline in revenge tourism as most of the people started to begin their normal lives. Some of the most preferred tourist destinations before covid-19 ranked by travellers of Vadodara were Diu, Udaipur, Mount Abu and Daman. It should be noted that Diu is the farthest place and Daman nearest to Vadodara. As per the survey for the mostly preferred revenge tourism destination during different unlock phases of Covid -19 by the travellers of Vadodara, Daman which is the closest destination to Vadodara was the most preferred destination stating people wanted to travel to the nearest destinations during Covid-19.

Some of the factors that were responsible for revenge tourism during covid-19 from the perception of travellers of Vadodara were Pandemic, Boredom fatigue, break from work and Psychological Stress. Some of the factors that influenced the selection of tourist destination for revenge tourism during covid-19 as per the travellers of Vadodara are nearest destination to residence, availability of proper medical facilities, Less crowded destination and relaxation by government for mobilization, hotels ensuring latest safety and hygiene standard, branded safe covid-19 destination, Social Networking sites displaying safe destination.

References :-

1. Becken, S. (2005). Harmonising climate change adaptation and mitigation: The case of tourist resorts in Fiji. *Global Environmental Change*, *15*(4), 381–393
2. Fotiadis, A. K., & Huan, T.-C. (2014). Disaster, tourism. In J. Jafari & H. Xiao (Eds.), *Encyclopedia of tourism* (pp. 1–2). Springer International Publishing
3. Ghaderi, Z., & Henderson, J. C. (2013). Japanese tsunami debris and the threat to sustainable tourism in the Hawaiian Islands. *Tourism Management Perspectives*, *8*, 98–105
4. Gössling, S., Scott, D., & Hall, C. M. (2020). Pandemics, tourism and global change: A rapid assessment of COVID-19. *Journal of Sustainable Tourism*, *29*(1), 1–20
5. Griffiths, J. (2020, 5 April). Taiwan's coronavirus response is among the best globally
6. Huan, T.-C., Beaman, J.,& Shelby, L. (2004). No-escape natural disaster. *Annals of Tourism Research*, *31*(2), 255–273
7. iang, Y., Ritchie, B. W., & Benckendorff, P. (2019). Bibliometric visualisation: An application in tourism crisis and disaster management research. *Current Issues in Tourism*, *22*(16), 1925–1957
8. Kuo, H.-I., Chen, C.-C., Tseng, W.-C., Ju, L.-F., & Huang, B.-W. (2008). Assessing impacts of SARS and Avian Flu on international tourism demand to Asia. *Tourism Management*, *29*(5), 917–928.
9. McKercher, B., & Chon, K. (2004). The over-reaction to SARS and the collapse of Asian tourism. *Annals of Tourism Research*, *31*(3), 716–719.
10. Nicolaides, C., Avraam, D., Cueto-Felgueroso, L., González, M. C., & Juanes, R. (2020). Hand-hygiene mitigation strategies against global disease spreading through the air transportation network. *Risk Analysis*, *40*(4), 723–740
11. Samitas, A., Asteriou, D., Polyzos, S., & Kenourgios, D. (2018). Terrorist incidents and tourism demand: Evidence from Greece. *Tourism Management Perspectives*, *25*, 23–28
12. Tsai, C.-H., Wu, T.-C., Wall, G., & Linliu, S.-C. (2016). Perceptions of tourism impacts and community resilience to natural disasters. *Tourism Geographies*, *18*(2), 152–173.
13. Wen, J., Wang, W., Kozak, M., Liu, X., & Hou, H. (2020). Many brains are better than one: The importance of interdisciplinary studies on COVID-19 in and beyond tourism. *Tourism Recreation Research*, 1–4. https://doi.org/10.1080/02508281.2020.1761120
14. Yeh, S. S. (2020). Tourism recovery strategy against COVID-19 pandemic. *Tourism Recreation Research*, 1–7. https://doi.org/10.1080/02508281.2020.1805933 .
15. Zenker, S., von Wallpach, S., Braun, E., & Vallaster, C. (2019). How the refugee crisis impacts the decision structure of tourists: A cross-country scenario study. *Tourism Management*, *71*, 197–212.

ഀ★ര

पटेल कल्चरल फाउण्डेशन द्वारा प्रस्तुत
गिरिनार महोत्सव : 2021-2022
(5-9 जनवरी 2022) : एक अवलोकन

डॉ. सुनील कुमार मानस*

पटेल कल्वरल फाउंडेशन, मुंबई द्वारा पांच दिवसीय **आठवां शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य** कार्यक्रम का मंचन 5 जनवरी से 9 जनवरी 2022 तक जुनागढ़–गुजरात में आयोजित हुआ। इस आयोजन में मुख्य भूमिका आदरणीय **मनसुख कांजी भाई पटेल** जी की रही, जिनके सद्–प्रयासों से यह कार्यक्रम पिछले 8 वर्षों से लगातार जूनागढ़–गुजरात में आयोजित हो रहा है। इस कार्यक्रम में देश भर के तमाम शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य से जुड़े कलाकार रुचि एवं उत्साह के साथ जूनागढ़ पधार कर सहभागिता करते हैं। पटेल जी के इस अभियान के पीछे 'गुजरात पर्यटन' का विशिष्ट उद्देश्य भी है, जिस कारण देश भर के बहुत से कलाकार एवं कलाविद् सोमनाथ, द्वारका, सासन–गीर, पोरबंदर आदि का पर्यटन करके अभिभूत होते हैं। सांस्कृतिक सद्भाव को समझते हुए शासन प्रशासन को आगे आना चाहिए और अपने सहयोग से ऐसे कार्यक्रमों को सफल बनाने में मदद भी करनी चाहिए।

सहृदय एवं समर्पित कलाप्रेमी डॉ. आनंद सिंह अपने संयोजन एवं संचालक से कार्यक्रम में चार–चाँद लगा दिये, जो वे संचालन करते हुए किसी नृत्य एवं वादन का परिचय देते थे, कलाकार उसे ही अपने नृत्य और वादन के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। नृत्य और वादन का ऐसा आत्मिक वर्णन जल्दी सुनने को नहीं मिलता। आपके संचालन से ही सभी दर्शक भाव–विभोर हो जाते थे, और इस शास्त्रीय कार्यक्रम में मंत्रमुग्ध होकर, डूब जाते थे। आप सच्चे अर्थों में कला–पारखी एवं कलाविद् हैं।

जूनागढ़ सौराष्ट्र की भूमि का हृदय भी है और मस्तिष्क भी; जिसकी एक समृद्ध पौराणिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक विरासत की समृद्वि भी है और लोक–पावन–भावभूमि की प्रवणता भी। इस भाव–भूमि में लोकरंजन का भाव अधिक प्राकृत एवं जीवन्त है और शास्त्रीय–चिंतन गौण। यहाँ के लोग विशेष तौर पर **गरबा** और **डांडिया** को ही महत्वपूर्ण मानते हैं जो लोक प्रचलित, लोक रचित एवं लोक प्रिय है। इसकी तुलना में संगीत एवं नृत्य के शास्त्रीय पक्ष का अभाव दिखलाई देता है, खास तौर से भारतीय संदर्भ के। जूनागढ़ में न तो शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य की महत्ता है; न तो ऐसे कहीं आयोजन ही देखने को मिलते हैं और न ही किसी का ऐसे कार्यक्रम में कोई रुचि विशेष दिखलाई देती है। आदरणीय पटेल जी ने अपने सद्प्रयत्नों से जूनागढ़ की पावन भूमि में शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य के आयोजनों से भारतीय स्तर पर महत्वपूर्ण एक महनीय काम किया है, जो हमें भारतीय कला की विशिष्टता से परिचित कराती है।

हमारे यहाँ यह शास्त्रीय कला साधन न रहकर साधना का विषय रही है, जिसके सीखने और जानने की तमाम प्रयत्न एवं पद्धतियाँ है, जो लोक से शिष्ट एवं विशिष्ट बनकर लोक को परिमार्जित करते हुए उसका लगातार परिष्कार करती चलती है। इसकी गति निरंतरता में है। इसकी यह सीखने–जानने की निरंतरता– हमें तन्मय करती रहती है। जितना कलाकार इसे सीखने की प्रक्रिया में तन्मय होता है, उतना ही उसकी प्रस्तुति को देखने वाला हर एक दर्शक भी। इसको देखने वाला हर एक दर्शक ऐसा भाव विभोर भी होता है कि उसका रोम–रोम पुलकित हो जाता है। उसे कुछ समय के लिए समय, स्थान एवं कार्य का कुछ पता नहीं रहता। यहाँ पर पहुँचा हर एक मनुष्य संकुचित स्वार्थ मंडल के ऊपर उठ जाता है, जो आनंद की श्रेष्ठतम अवस्था है, जहाँ किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं रहता। सचराचर प्रकृति एक रस और रंग में डूबी जान पड़ती है। यह अवस्था, शिव की साधना अवस्था ही है।

*** प्रधान–संपादक–आलोचन दृष्टि, एवं प्राध्यापक– हिन्दी, बहाउद्दीन आर्ट्स कालेज, जूनागढ़ (गुजरात)**

आदरणीय मनसुख कांजीभाई जी पटेल जैतपुर–गुजरात से शिक्षित–दीक्षित होकर अपने पारंपरिक व्यवसाय से अपने जीवन की शुरुआत करते हैं, किंतु भौगोलिक कारणों की ऐसी परिस्थिति बनती है कि उनका व्यवसाय मंद पड़ता चला गया, जिस कारण वे मुंबई की ओर गमन कर गए। वहाँ उन्होंने व्यवसाय के साथ–साथ शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य में अपनी अभिरुचि के अनुरूप जुड़ाव बनाये रखा और धीरे–धीरे इस क्षेत्र में भी वह निरंतर प्रगति करते चले गए। इसी प्रगति का परिणाम है कि जैतपुर से मुंबई तक की यात्रा करने वाले आदरणीय पटेल जी जूनागढ़ की सांस्कृतिक विरासत में एक नया अध्याय 'भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य' का लगातार जोड़ते जा रहे हैं। उन्होंने जूनागढ़ में 'भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य' समझ को विकसित किया है, उसकी भाव–भूमि को सृजित किया है। इसी का परिणाम है कि यहाँ अब जो शास्त्रीय संगीत का आयोजन हो रहे हैं, उसमें लगातार क्षेत्रीय लोग भी जुड़कर अपनी सहभागिता निभाते हुए, योगदान कर रहे हैं। मैं उनके इस योगदान पर 'आलोचन दृष्टि परिवार' की ओर से उनका सादर अभिवादन करता हूँ और आभार भी ज्ञापित करता हूँ। साथ ही, यह आशा भी प्रकट करता हूँ कि भविष्य में भी ऐसे तमाम आयोजन करते रहेंगे जिससे जूनागढ़ की सांस्कृतिक एवं शास्त्रीय विरासत संपन्न होती रहे।

प्रथम दिन का कार्यक्रम

प्रथम दिन का कार्यक्रम की प्रस्तुति का सामूहिक चित्र

त्रिधारा, भुवनेश्वर–उडीसा के गुरु गजेंद्र पंडा की निर्देशित ओडिसी समूह की प्रस्तुति

हृषीकेश मजूमदार मुंबई बांसुरी–वादन

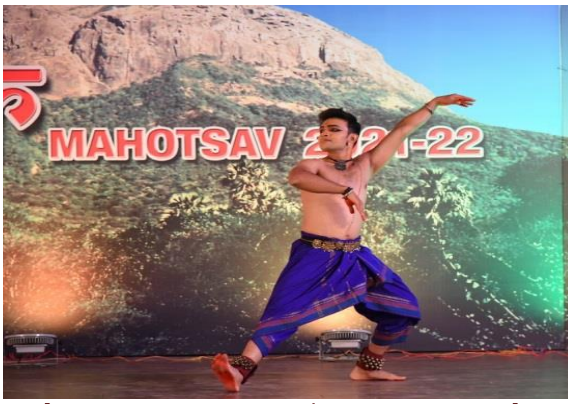

निधगा करुणांद, बंगलुरु, की भरतनाट्यम–प्रस्तुति

डॉ. तर्जनी हिरानी, राजकोट, की वोकल–प्रस्तुति

हर्षा ठक्कर राजकोट कत्थक समूह

द्वितीय दिन का कार्यक्रम

दीपिका प्रियदर्शनी की भुवनेश्वर की ओडिसी–प्रस्तुति

नाट्य शारदा सुबिथा वी. मुरली मुंबई कुचिपुड़ी नृत्य

जिगर मिस्त्री, आनंद–गुजरात, का सितार–वादन

चिंतन सरैया, मुंबई, समूह की कत्थक–प्रस्तुति

दूसरे दिन सम्मानित होते कलाकार

नृत्यश्री धारा, सारंगगढ़–उड़ीसा की सामूहिक ओडिसी–प्रस्तुति

दूसरे दिन सम्मानित होते कलाकार

तृतीय दिन का कार्यक्रम

तीसरे दिन के कार्यक्रम का सामूहिक चित्र–पटल

संतोष मिश्रा, मुंबई; मेहराज हुसैन, जयपुर; आदिल खान, वडोदरा; का तबला वादन और हातिम हुसैन खान की प्रस्तुति

वाद्य वरुंद के निर्देशन में मंगल मूर्ति विकलांग ट्रस्ट, जुनागढ के विकलांग छात्रों की गायन–प्रस्तुति

सारंगी–वादन

उन्नति अजमेरा राजकोट–गुजरात की मोहिनीअट्टम–प्रस्तुति

आर्या नंदे की ओडिसी–नाट्य–प्रस्तुति

कार्यक्रम के संयोजन एवं संचालक : डॉ. आनंद सिंह

चतुर्थ दिन का कार्यक्रम

चौथे दिन के कार्यक्रम का सामूहिक चित्र–पटल

प्रियंका पति एवं रीना त्रिवेदी अहमदाबाद ओडिसी प्रस्तुति

प्रियंका शिंदे, मुम्बई : कत्थक–नृत्य–प्रस्तुति

पूर्वी सेठ, राजकोट–सामूहिक भरतनाट्यम–प्रस्तुति

विपुल त्रिवेदी की गायन–प्रस्तुति

बिलाल हुसैन जयपुर गिटार एवं मोहम्मद हुसैन दिलरुबा जुगलबंदी प्रस्तुति

प्रियंका माथुर, दिल्ली : वोकल–प्रस्तुति

पंचम दिन का कार्यक्रम

पाचवे दिन के कार्यक्रम का सामूहिक चित्र–पटल

वर्षा अभिचंदानी का समूह : भरतनाट्यम–प्रस्तुति

अल्ताफ हुसैन खान वडोदरा : संतूर वादन

श्रेष्ठा त्रिपाठी, दिल्ली : कत्थक–नृत्य–प्रस्तुति

मनोज शाह, कोलकाता : भरतनाट्यम्–प्रस्तुति

उपरोक्त 'शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य' कार्यक्रम मे सहभागिता करने वाले हर एक कलाकार, आयोजक मंडल के हर एक सदस्य एवं 'अतुलभाई : सृजन–स्टूडियो'– का हार्दिक अभिनंदन करते हुए मैं साभार धन्यवाद ज्ञापित करता करता हूँ। साथ ही, आशा व्यक्त करता हूँ कि भविष्य में भी आप सभी अपने ऐसे योगदान से हम सबको अनुगृहीत करते रहेंगे।

✶

पटेल कल्चरल फाउण्डेशन द्वारा प्रस्तुत

गिरनार महोत्सव : 2021-2022, (5-9 जनवरी 2022) के

शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य की प्रस्तुति करने वाले

कलाकारों एवं आयोजकों के सामूहिक दो-दिवसीय चित्रपटल

आलोचन दृष्टि

आजाद नगर, बिन्दकी, जनपद–फतेहपुर,

उ0प्र0–212635

ई–मेल : **aalochan.p@gmail.com**